साहित्य सृजन की अनमोल धरोहर

सर्वं संभाव्यते त्वयि

उपलब्धि

तुममें सब संभव है !

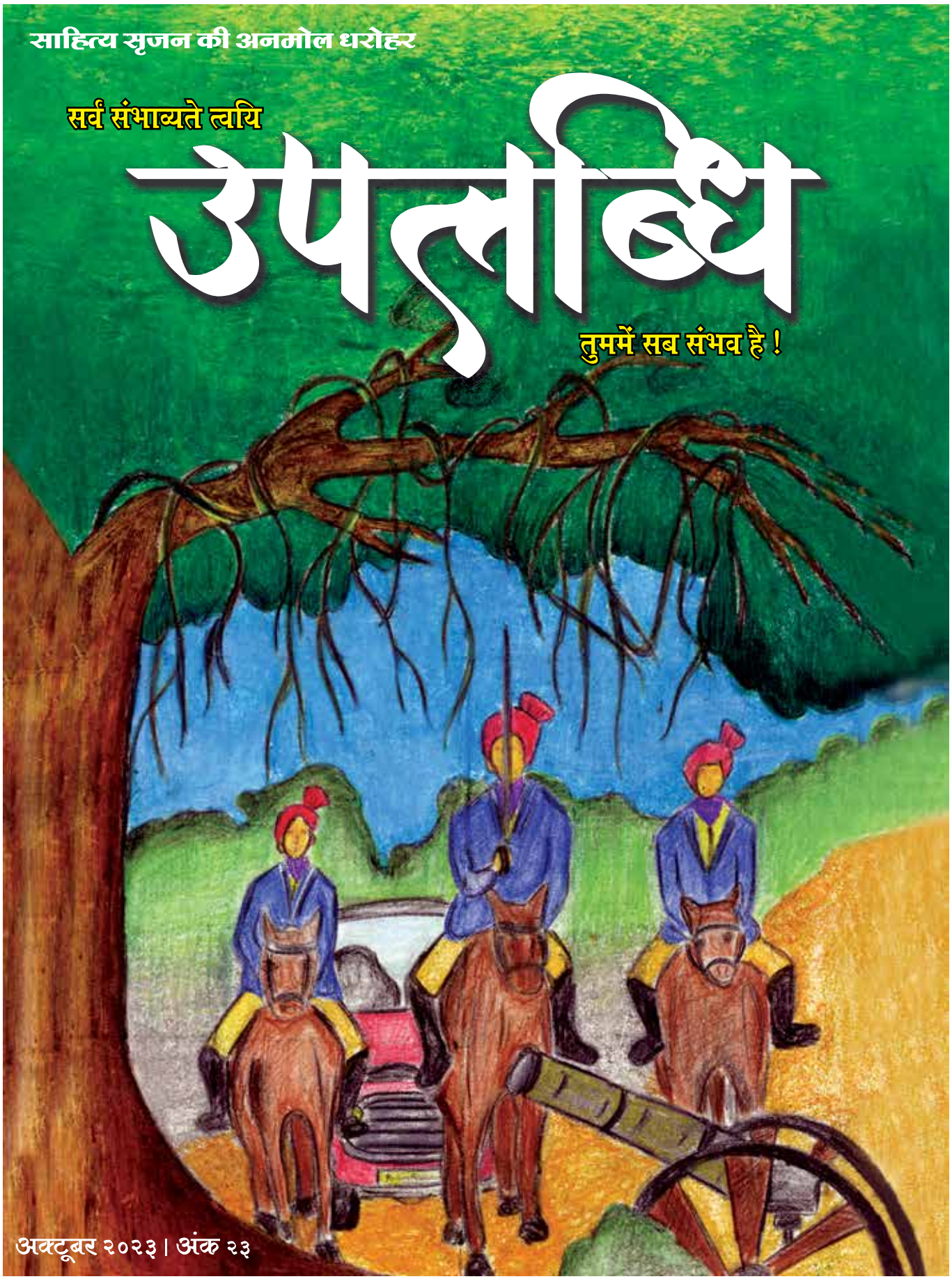

अक्टूबर २०२३ | अंक २३

संपादकीय–

किताबें कुछ कहना चाहती हैं!

प्रत्येकम् उपलब्धिः प्रयासस्य निर्णयेन आरभ्यते।
अर्थात् हर उपलब्धि प्रयत्न करने के निश्चय से आरम्भ होती है।

कदाचित कंप्यूटर के कारण हमें किसी को नकल करके, किसी भी स्थान पर उतारने की शक्ति प्राप्त हुई। यह एक बहुत ही सरल मगर शक्तिशाली औजार है, जिससे हम बहुत सारा कार्य करने में समर्थ हुए। प्रश्न है कि क्या इसने नकल की प्रवृत्ति को बढ़ाया या रचनात्मकता में चहुँ ओर से बढ़ोत्तरी की? आज के समय में, सर्वोत्तम को देखकर उसकी नकल से संतुष्ट होने की स्वीकृति बढ़ गई है।

अब जबकि 'चट-झपट' यानि आप जिसे चौट जीपीटी के नाम से जानते हैं, ने रचनात्मक दुनिया में तूफान ला दिया है, छात्रों को एक मोहिनी में डाल दिया है, कि वे हर कार्य को 'चट-झपट' कर डालते हैं, बिना मानवीय सम्वेदनाओं को पिरोये!

महामारी की आपात स्थिति ने छोटे-छोटे बच्चों के हाथों में स्मार्त-फोन, तबलित (टैब), कंप्यूटर आदि थमाकर, घर में क्रांति को जन्म दे दिया। महामारी चली गई, मगर अपने साथ संचार के सारे साधन ले जाना भूल गई और सभी अभिभावक आज तक जूझ रहे हैं, कि कैसे बच्चों को फोन-कंप्यूटर से दूर ले जाएँ। आजकल के अभिभावक यही सोचकर आशंकित हैं, कि इस पीढ़ी को किताबों की दुनिया तक न लौटा पाये तो किताबों के भीतर का संसार आने वाली पीढ़ियों के लिए परलोक की तरह एक अबूझ पहेली बन जाएगा।

सिंधिया स्कूल की संस्थापना के १२५वीं वर्षगाँठ के उत्सव के स्वर्णिम अवसर पर, छात्रों की एक कोशिश है- अपने मनो-संसार से अपने और अपने सभी छात्र-साथियों के विचारों को आपके सामने रचनात्मक-दस्तावेज के रूप में आपके हाथों में लाने की। छात्रों की यह "उपलब्धि" यह आशा जगाती है, कि जब तक मानवीय भाव हृदय में स्थित हैं, तब तक किताबों की दुनिया सभी को उपलब्ध रहेगी। तकनीकी- मायावी संसार छात्रों को नहीं भरमा पाएगा। नटखट बालकों में मानवीयता पीढ़ी-दर-पीढ़ी यूँ ही अलग-अलग अवतारों में उपलब्ध रहेगी!

जयते साहित्य! जयते सिंधिया!

संरक्षक
श्री अजय सिंह (प्राचार्य)

विभागाध्यक्ष
श्री मनोज कुमार मिश्रा

संपादक
श्री गणपत स्वरूप पाठक

संपादक–मंडल

छात्र-मार्गदर्शक - शौर्य प्रकाश
हर्षवर्द्धन वाढेर

छात्र संपादक - विवेक शर्मा
लक्ष्य तुलस्यिान

सह संपादक - कुमार अभीक्षित नारायण
प्रभात वाजपेयी
प्रत्यूष अग्रवाल
नमन जैन
ऋषित शर्मा
इदांत मेहरोत्रा
अग्रिम कुमार

आवरण - श्री सोमनाथ दास
खुश तोड़ी
अंजुम निशाद

छायांकन - मानस सेठिया
रियांश ओसवाल

साक्षात्कार - आर्यवर्द्धन सिंह सोमवंशी
सिमरजोत सिंह

रचनात्मक सहयोग - लक्ष्य अरोरा
नमन दुआ
मयंक जिंदल

संपादन सहयोग - श्रीमती रक्षा सीरिया
श्री जगदीश जोशी
श्रीमती ऋतु स्वामी

प्रकाशक
सिंधिया स्कूल, दुर्ग ग्वालियर-४७४००८

मुद्रक
गैलैक्सी प्रिन्टर्स, ग्वालियर मो. ९८२६२१४६४४

अनुक्रम

०१. सिंधिया स्कूल की आवाज: श्री राजा बैनर्जी
०२. चित्रकार की कला में समाज की प्रतिछाया
०३. श्री दिनेश मधवाल से औपचारिक भेंट
०४. रपट: भगवज्जुकम
०५. महाराजा माधवराव सिंधिया स्मृति वाद-विवाद प्रतियोगिता-२०२३
०६. हिन्दी साहित्य सभा
०७. पूर्व छात्रों की कहानियाँ
०८. अतिथि : रिचर्ड
०९. उपलब्धि की आत्मकथा
१०. विद्यालय के आधार स्तम्भ
११. आत्माराम ट्रॉफी की कहानी
१२. अभिभावक की कलम से
१३. सिंधिया स्कूल का बदलता स्वरूप
१४. कक्षाओं के किस्से
१५. हाउस के बातें
१६. भारत यात्रा
१७. खोया हुआ साल
१८. रेख़्ता के बारे मे
१९. विविध विधाएँ

प्रेरणास्रोत

श्री अजय सिंह, प्राचार्य

ये हमारा सिंधिया स्कूल है। १२५ वर्ष पूरे कर चुका है। हम इसकी वर्षगाँठ मना रहे हैं और जो इस वर्ष हम १२६वाँ संस्थापना दिवस मनाएँगे। इसमें हमें १२५ वर्ष हो जायेंगे। यह एक महान उपलब्धि है। किसी भी संस्था को १२५ वर्ष पूरा करना अपने आपमें एक प्रमुख उपलब्धि होती है। इस पूरे काल में १२५ वर्षों का कार्य हमने किया है और आगे भी ऐसा ही करते रहेंगे।

हिन्दी हमारी मातृभाषा है और मेरे ऐसे विचार है कि भाषा का प्रयोग हम जब भी करें, हमेशा शुद्ध ढंग से करें। हमें अपने भाषा के प्रयोग में निडर रहना होगा। और मुझे तो हमेशा ये गर्व महसूस होता है जब अटल बिहारी वाजपेयी जी ने जो हमारे भूतपूर्व प्रधानमंत्री थे उन्होंने संयुक्त राष्ट्र-संघ के सारे सदस्यों के सामने हिन्दी में भाषण दिया। तो ये हमारे लिए गर्व की बात है। हमें अपने भाषा के प्रयोग में शुद्धता अपनानी चाहिए।

इस साल की उपलब्धि हमारे स्कूल की पहली स्मार्ट पत्रिका है तो यह इसी बात का प्रतीक है कि हमारे छात्र और हिन्दी-विभाग कितनी मेहनत कर रहा है। तो यह एक बहुत अच्छा कदम है जो छात्रों और अध्यापकों द्वारा लिया जा रहा है कि हम तकनीक का उपयोग करके तरक्की कर रहे है।

बहुत ही खुश होऊँगा, अगर यह पहल एक छात्र द्वारा ली गयी है। मैं यही चाहूँगा कि हमारे छात्र इस नई तकनीक का अनुसरण करें। छात्र का काम है कि न ही केवल शिक्षा को ग्रहण करे, बल्कि उस शिक्षा को आगे बढ़ाएँ। अगर छात्र ये सब कर पा रहे है तो ये बड़ा गौरवमयी अवसर होगा और छात्रों को इसके लिए बहुत-बहुत बधाई। इस नई पहल से हम न केवल इसका वितरण आसान कर सकते हैं अपितु कागज का इस्तेमाल भी कम कर सकते है।

अंत में, मैं बस यही कहना चाहूँगा कि ये पत्रिका बस हमारे स्कूल के लिए महत्वपूर्ण है अपितु विश्व के लिए भी उपयोगी सिद्ध हो सकती है।

(कुमार अभीक्षित नारायण एवं लक्ष्य तुलस्यिान से वार्तालाप पर आधारित)

मार्गदर्शन

सुश्री स्मिता चतुर्वेदी, उप प्राचार्या

इतनी लंबी विरासत वाले संस्थान का हिस्सा बनना बहुत गर्व और सम्मान का क्षण है। किसी भी तरह से योगदान करने में सक्षम होना, जीवन को छूना, चरित्र का निर्माण करना और जीवन में बदलाव लाना बेहद संतोषजनक है। यह जश्न का साल दूर-दूर से सिंधिया बिरादरी को एक साथ लाएगा और हम सभी को 'स्कूल के लिए प्यार' के एक सामान्य धागे के साथ बाँधेगा।

मैंने कभी बच्चों की रचनात्मकता पर संदेह नहीं किया। वे हमेशा हमें आश्चर्यचकित करते रहते है, क्योंकि उन्हें हर बार इस अवसर पर बढ़ते हुए देखना वास्तव में दिलचस्प है! हम उड़ान भरने के लिए उनके पंखों को मजबूत करने में अपनी भूमिका निभाते है। पहले विचारों, और भावनाओं में और फिर ये विचार अंतहीन क्षितिज की ओर उनकी उड़ान का मार्ग प्रशस्त करते है। मैं उन्हें उनके प्रयास के लिए शुभकामनाएँ देती हूँ और विश्वास करती हूँ कि वे अपने रचनात्मक विचारों से हमें गौरवान्वित करेंगे।

किसी व्यक्ति के बारे में धारणा बनाने में भाषा यानि शब्द-संसार बेहद महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह आपकी संस्कृति का प्रतिबिंब है और 'आप लोगों के साथ कैसा व्यवहार करते है' इसकी पहली झलक भी प्रदान करता है। मेरा दृढ़ विश्वास है कि प्रत्येक व्यक्ति से सम्मान के साथ बात की जानी चाहिए और ऐसी कई संवाद और भाषा का उपयोग मिलकर संस्कृति का निर्माण करते है। अच्छा विनम्र संवाद और मधुर भाषा का प्रयोग सुसंस्कृत समाज की निशानी है। हम आशा करते हैं कि हम अपने छात्रों के बीच सही भाषा के उपयोग का महत्व पैदा करेंगे ताकि वे एक सुसंस्कृत समाज को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकें। कविता भाषा की सुंदरता और समृद्धि का चित्रण है, इसलिए छात्रों को साहित्यिक उत्सव, कवि सम्मेलन, कविता लेखन आदि के माध्यम से इसकी समृद्धि का अनुभव कराया जाता है।

सन् २००१ में अपने प्रकाशन के बाद से ही, 'उपलब्धि' छात्रों को हिंदी में अपने विचारों और रचनात्मकता को प्रस्तुत करने के लिए बहुत आवश्यक मंच प्रदान कर रही है। यह साहित्यिक पत्रिका उभरती प्रतिभाओं का पोषण करती है और छात्रों को अपने रचनात्मक कौशल और क्षमताओं को चमकाने का अवसर प्रदान करती है। इन वर्षों में, पत्रिका ने विचारों के साथ-साथ उन्नतशील प्रयोग किये है, जो साल-दर-साल प्रकाशन के साथ बढ़े है। मैं संपादक-मण्डल को उनके प्रयासों में सफलता की कामना करती हूँ।

(हर्षवर्द्धन वाढेर से हुई बातचीत पर आधारित)

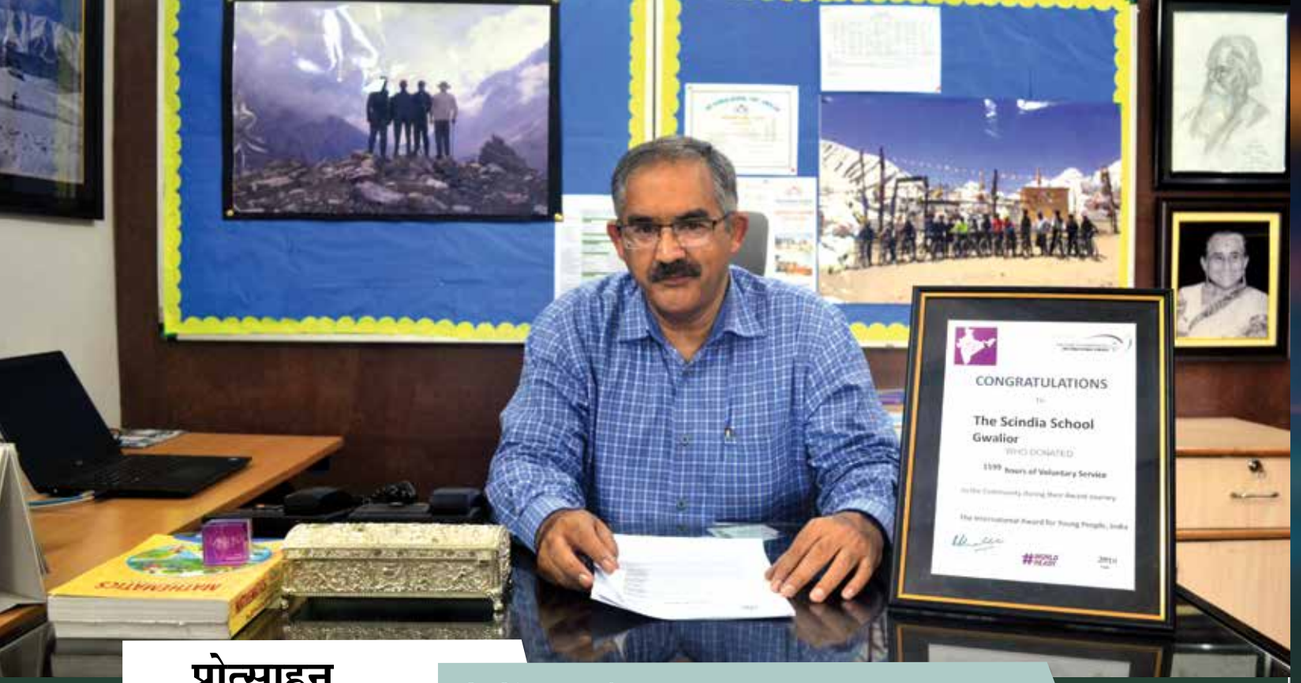

प्रोत्साहन

श्री धीरेन्द्र शर्मा, अधिष्ठाता (शैक्षणिक एवं साँस्कृतिक गतिविधि)

हिन्दी हमारी मातृभाषा है और हमारी राजभाषा है, इसलिए मुझे इससे विशेष प्रेम है। हमारी नई एजुकेशन पॉलिसी में भी ऐसा कहा गया है कि एक छात्रअपनी मातृभाषा में सबसे ज्यादा सीख सकता है। हम जिस जगह पर रहते है, वहाँ अधिकांश लोग हिन्दी बोलने वाले है, इसलिये मैं चाहता हूँ कि हर एक बच्चा जितना हो सके, हिन्दी में बात करे और लिखे।

इस साल उपलब्धि को एक स्मार्ट पत्रिका बनाने की तैयारी की जा रही है। यह बड़े गर्व की बात है कि हमारे स्कूल के हिन्दी-विभाग ने इसका नेतृत्व किया है। इस साल के संस्थापना दिवस के दिन हमारे स्कूल को १२५ साल पूरे हो जायेंगे और ये हमारे स्कूल लिए गर्व की बात है और साथ ही हिन्दी-विभाग के लिए भी कि इस संस्थापना दिवस पर उपलब्धि पत्रिका एक स्मार्ट पत्रिका बनी है।

इस साल मुझे पता चला है कि इस साल कई बच्चों ने अपनी कहानियाँ और कविताएँ उपलब्धि पत्रिका में छपवाई है। मैं बधाई देना चाहूँगा। उन बच्चों को जिन्होंने अपनी शब्द-कला का प्रदर्शन किया है। साथ ही, मैं बधाई देना चाहूँगा। हिन्दी विभाग को ऐसा काम करने के लिए।

आप सभी लोग ऐसे ही उन्नति करते रहें और उपलब्धि हमारी स्कूल के लिए भी एक महत्वपूर्ण उपलब्धि बने!

(कुमार अभिक्षित नारायण एवं लक्ष्य तुसियान से चर्चा पर आधारित)

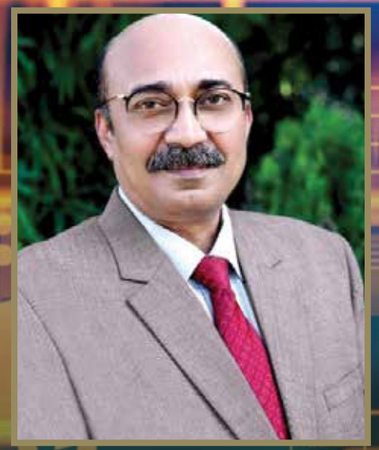

कौशल संवर्द्धन

श्री राज कुमार कपूर, डीन-आईसीटी

सिंधिया स्कूल की १२५वीं वर्षगाँठ और हिंदी पत्रिका ''उपलब्धि'' के प्रकाशन के अवसर पर यह संदेश लिखना बेहद खुशी की बात है।

सिंधिया स्कूल का एक समृद्ध और ऐतिहासिक इतिहास है, जो सन् १८९७ में इसकी स्थापना के समय से है। इन वर्षों में, स्कूल ने भारत और दुनिया भर में कुछ सबसे उल्लेखनीय नेताओं और विचारकों को जन्म दिया है।

स्कूल शैक्षिक नवाचार में भी हमेशा अग्रणी रहा है। हाल के वर्षों में, स्कूल ने छात्रों को सीखने और बढ़ने के लिए नवीनतम उपकरण और तकनीक प्रदान करने के लिए आईसीटी में महत्वपूर्ण निवेश किया है।

हिंदी पत्रिका ''उपलब्धि'' का प्रकाशन विद्यालय के शैक्षिक परिदृश्य में एक स्वागत योग्य कदम है। पत्रिका छात्रों को हिंदी में खुद को अभिव्यक्त करने और अपनी संस्कृति और विरासत के बारे में अधिक जानने के लिए एक मंच प्रदान करेगी।

स्कूल की १२५वीं वर्षगाँठ के अवसर पर, मैं सिंधिया परिवार के पूर्व और वर्तमान सभी सदस्यों को बधाई देना चाहता हूँ। आईटी अपनाने में सिंधिया स्कूल हमेशा सबसे आगे रहा है। सन् १९८४ में, यह स्कूल कक्षा में कंप्यूटर पेश करने वाले भारत के पहले स्कूलों में से एक था। वर्षों से, स्कूल ने आईसीटी में निवेश करना जारी रखा है, और आज, यह भारत के किसी भी स्कूल में सबसे उन्नत आईटी बुनियादी ढाँचे में से एक है।

मुझे विश्वास है कि हिंदी पत्रिका ''उपलब्धि'' सफल होगी और यह विद्यालय समुदाय के समग्र संवर्धन में योगदान देगी।

मेरी उपलब्धि.....''उपलब्धि''

मेरा जन्म अक्टूबर 2000 में सिंधिया स्कूल में तत्कालीन प्रधानाचार्य श्री एन. के. तिवारी जी की देख रेख में हुआ था। उन्होंने ही मुझे विद्यालय में हिन्दी भाषा के ज्ञान का प्रचार-प्रसार करने का महान कार्य सौपा था। प्रारंभिक दिनों में तत्कालीन विभागाध्यक्ष श्री बी.एस. भाकुनी जी ने मेरा पालन-पोषण किया। कुछ वर्षों बाद उन्होंने मेरे मार्गदर्शन की जिम्मेदारी श्री मनोज मिश्रा जी को सौपी जिनके मार्गदर्शन में मैं खूब फली-फूली और नई ऊँचाइयों को छूआ। मुझे आज जो ख्याति प्राप्त हुई है उसमें मनोज जी का बहुत बड़ा योगदान है। इसके बाद श्री जगदीश जोशी जी को मेरी विकास यात्रा को आगे बढ़ाने की जिम्मेदारी सौपी गई जिन्होंने विगत ९ वर्षों तक मुझे इस मंजिल तक पहुँचाने में खुद को समर्पित कर दिया। यह उपरोक्त सभी शिक्षकों के सामूहिक प्रयासों का ही परिणाम है कि आज मुझे विद्यालय के १२५वें स्थापना दिवस के उत्सव का गवाह बनने का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है।

प्रकृति की भाँति मैं भी अपने पाठकों के लिए ही जीती हूँ। मेरा अध्ययन करने से बच्चों की ज्ञान-वृद्धि होती है, नई-नई जानकारियाँ प्राप्त होती है, उनकी रचनात्मकता उभर कर आती है और तथा उनका मनोरंजन भी होता है।

मैंने अपने विद्यालय के निराश छात्रों में आशा का संचार करने की भी भरपूर कोशिश की है। जहाँ मैंने आशावान बच्चों को नई स्फूर्ति दी है, वहीं निराश हुए छात्रों को भी सहारा दिया है। भटके हुए छात्रों को मैं हमेशा सही मार्ग दिखाता हूँ तथा आगे भी सही राह पर ही चलने का उपदेश देती हूँ। मेरे प्यारे बच्चों! मुझे पढ़कर आप अपने समय का सदुपयोग कर सकते हैं क्योंकि मैं तो ज्ञान का भंडार हूँ।

इतिहास साक्षी है कि जो बच्चे मेरी शरण में आए मैंने उन्हें ज्ञानी बना दिया। कक्षा ६ के छात्र हों या कक्षा १२ के, शिक्षक हों या पूर्व-छात्र सब मेरे आगे सर झुकाते है। छपने के बाद मुझे हर छात्रावास में भेज दिया जाता है ताकि मैं बच्चों के साथ अधिक समय बिता सकूँ और उनका सही ढंग से मार्गदर्शन कर सकूँ।

पिछले २३ वर्षों से ही मैं हिंदी की विकास-वाहिनी के रूप में जानी जाती हूँ। एक गुरु की भाँति मैं हर पग पर अपने बच्चों का मार्गदर्शन करती हूँ। इन वर्षों में, मैं विद्यालय की प्रगति की स्वयं साक्षी बनी हूँ। हजारों बच्चों के विकास की गाथा मैंने स्वयं लिखी है और उनकी रचनाओं को, उपलब्धियों को अपने हृदय में पूर्ण स्थान दिया है। विद्यार्थियों ने भी अपनी रचनाओं से पुष्पित-पल्लवित कर मेरी लोकप्रियता को और चार चाँद लगा दिए। मैं हमेशा अपने स्कूल के बच्चों को अपनी मौलिक रचनाएँ लिखने के लिए प्रेरित करती हूँ जिससे उनकी रचनात्मक प्रतिभा उभर कर सामने आ सके।

ऐसा नहीं कि मेरे सामने चुनौतियाँ नहीं आईं, लेकिन मैंने हर बाधा को हँसते-मुस्कराते हुए पार किया। कोविड काल मेरे जीवन का सबसे बुरा समय रहा, जब मैं अपने दो अंकों में अपने बच्चों को सामने से नहीं देख पाई, लेकिन मेरे विकास की गंगा इस वक्त भी निरंतर बही और मैं सभी तक ऑनलाइन के माध्यम से पहुँची। कुछ छात्र मुझे शौक के कारण पढ़ते है, कुछ ज्ञान प्राप्ति हेतु, तो कुछ मनोरंजन करने हेतु भी मुझे पढ़ते है। मुझे पढ़ने का कारण चाहे जो भी हो, मैं हर किसी को कुछ न कुछ बेहतर ही सिखाने की कोशिश में लगी रहती हूँ।

अब मैं साक्षी बनने जा रही हूँ, विद्यालय के १२५वें गौरवमयी वर्ष की और आज मेरे लिए यह सबसे गर्व का विषय है। लेकिन यह वर्ष मेरे लिए सबसे चुनौतीपूर्ण वर्ष भी होगा। क्योंकि इतने बड़े इतिहास को कुछ पन्नो में समेटना आसान काम नहीं है। यदि मैं इस कार्य को सफलतापूर्वक पूर्ण कर पाई तो यह 'उपलब्धि' की सबसे बड़ी 'उपलब्धि' होगी। मुझे ऐसा कर बहुत संतोष मिलेगा और यही मेरे जीवन का लक्ष्य भी है। अगले वर्ष इसी समय आपसे फिर भेंट होगी तब के लिए अलविदा.....

जगदीश जोशी, हिंदी विभाग

जीवन में मसाले मिलाने से जीना रोमांचक हो जाता है!

जिस दिन मैंने स्कूल में कदम रखा, मैं बहुत भ्रम, उत्साह और चिंता के साथ आया था। मैं हमेशा बोर्डिंग जीवन का अनुभव करना चाहता था इसलिए मैं यथासंभव सर्वोत्तम स्थान पर पहुँचा। बाहरी दुनिया में इस स्कूल का जितना सम्मान था, उसने मुझे और भी उत्साहित कर दिया। इस स्कूल का समृद्ध इतिहास था और इसने छात्रों को जीवन में सफल होने के लिए प्रेरित किया और मुझे खुद से आगे बढ़ने के लिए और भी अधिक प्रेरित किया।

मुझे इस बारे में कोई अंदाजा नहीं था कि परिसर कैसा दिखता है, और जब मैंने परिसर को उसकी पूरी भव्यता में देखा तो मैं आश्चर्यचकित रह गया। परिसर का बहुत अच्छी तरह से प्रबंध किया गया था-इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि यह विशाल है और प्रकृति-शीर्ष पर चेरी की तरह! भले ही मौसम उमस भरा था, लेकिन प्रकृति ने जो शांति प्रदान की वह बेहद सुखदायक थी।

पहले दिन जब मैं आया तो बारिश हो रही थी, इसलिए मैंने और मेरे दोस्तों ने एक-दूसरे को जानने में अपना समय सदन में बिताया। पूरा दिन नये लड़कों के साथ बीता। मुझे बोर्डिंग जीवन का अद्भुत अनुभव कभी नहीं मिला, इसलिए मुझे नहीं पता था कि यहाँ चीजें कैसे काम करती हैं। पहले दिन मेरी ज्यादा बातचीत नहीं हुई और मैंने सोचा कि अगले दो साल मुझे अकेले ही गुजारने होंगे। लेकिन ऐसा नहीं था क्योंकि अगले दिन पहले जैसे नहीं थे। मैं पुराने और नये लड़कों से सामान्य रूप से बातचीत करने लगा। मुझे इस स्कूल के अनूठे नियमों की आदत हो गई है। नियम जो पिछले १०० वर्षों से वही हैं लेकिन फिर भी स्कूल के छात्रों को अनुशासित रखते हैं।

पहला हफ्ता मैं बस बोर्डिंग जीवन की व्यस्त दिनचर्या का आदी हो रहा था। कुछ दिनों के बाद जिंदगी थोड़ी धीमी हो गई क्योंकि मुझे अपने माता-पिता की बहुत याद आती थी! पहले दिन उन्हें जाने देना आसान था लेकिन कुछ दिनों के बाद यादों को अनदेखा करना सबसे कठिन था। लेकिन स्कूल के शेड्यूल ने मुझे आगे बढ़ने पर मजबूर कर दिया। मैंने खुद को प्रेरित किया और आगे बढ़ता रहा।' अब मैंने स्कूल में अच्छे १० दिन बिताए थे और छात्रों के साथ मेरे रिश्ते काफी अच्छे हो गये थे। उन्होंने मुझे ऐसा महसूस कराया जैसे मैं बहुत वर्षों से स्कूल में था और उन्हें अपने पूरे जीवन से जानता था। स्कूल के शिक्षक बहुत मददगार और मिलनसार थे। यहाँ का खाना मेरे घर के खाने से थोड़ा अलग था। यह थोड़ा मसालेदार था, लेकिन अब मुझे इसकी आदत हो गई है। जीवन में मसाले मिलाने से जीना रोमांचक हो जाता है। भूलने की बात नहीं है, लेकिन यह स्कूल सह-पाठ्यचर्या संबंधी गतिविधियों में भी शामिल है।

इस स्कूल ने मुझे ऐसे अवसर प्रदान किए हैं जो मुझे विभिन्न कौशल और जीवन की सीख सिखाएँगे। इंटर हाउस फुटबॉल टूर्नामेंट अभी खत्म हुआ और मैं बहुत खुश हूँ कि मुझे अपने हाउस के लिए खेलने का मौका मिला। विभिन्न घरों के लोगों में अपने घर को जिताने का जो जज्बा था वह बहुत ही प्रेरक था। कुल मिलाकर मुझे लगता है कि मैं जीवन के ये २ साल सिंधियन वर्ल्ड में अपना व्यक्तित्व बनाने में बिताऊँगा। इस स्थान पर रहने से मुझे लक्ष्यों को आसान, बेहतर से बेहतर तरीके से हासिल करने में मदद मिलेगी।

दिवेश कुमार
कक्षा- आठवीं, माधव सदन

विदाई भाषण

श्री रमेश शर्मा के प्रति

न कुछ कभी कहा, न कुछ कहा गया है, बहते जज्बातों को कोई रास्ता मिला न नया है।
कैसी बात कैसे कब कहनी है सँभलकर, आपने तो सिखाया पर मुझे नहीं आता है।

मैंने जब स्कूल जॉइन किया, उस समय सबसे बड़ी मेरी एक ही समस्या थी कि बच्चों को कैसे सिखाऊँगा क्योंकि मेरी भाषा बच्चे समझेंगे कि नहीं। लेकिन रमेश सर ने इसके लिए काफी हिम्मत बढ़ाई। आर्मी के माहौल में २६ साल रहने के बाद, यहाँ स्कूल का माहौल सब अलग। लेकिन सर, हर समय मोटिवेट करते रहते थे और बच्चों को कैसे सिखाना है, कैसे उनका इंस्ट्रूमेंट बजाना मार्चिंग ठीक करना है, हर बात समझाते रहते थे, क्योंकि आर्मी में सैनिक को म्यूजिक सिखाना और यहाँ बच्चों को सिखाने में बहुत अंतर है। मगर सर की बदौलत अपने आप को तैयार किया। सर का सही मार्गदर्शन मेरे लिए बहुत बड़ी बात है।

आप कोई भी काम हमेशा खुश और ऊर्जावान होकर करते थे और मुझे भी इसी तरह बताते थे। सर के साथ काम करने में, अनुशासन और आजादी का तालमेल बहुत अच्छा था। आपने सिंधिया स्कूल ब्रास बैंड को बनाने में जो कड़ी मेहनत की, उसी की बदौलत आज सिंधिया स्कूल बैंड एनसीसी में और कर्तव्य पथ (गणतंत्र दिवस) में अपनी अलग पहचान बना चुका है। यह आपकी मेहनत और लगन का फल है, जो कि काबिले तारीफ है। सर, मैं भी कोशिश करता रहूँगा कि सिंधिया बैंड का स्टैंडर्ड अच्छा बनाकर रखूँ।

और सबसे बड़ी बात है सर के व्यक्तित्व की कि आप किसी भी समस्या का हल हमेशा अपने अनुभव और श्रेष्ठ बुद्धि मत्ता से तुरंत ढूँढ लेते हैं और कोई वेटिंग नहीं।

मैं कहना चाहूँगा कि आपके मार्गदर्शन और उत्साहवर्धन के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद! इसके लिए मैं आजीवन आपका ऋणी रहूँगा।

शिंदे मैम् भी अपने सब्जेक्ट में बहुत माहिर थीं और संगीत में, गायन में भी बहुत विदुषी थीं। कभी भी किसी से बड़ी शांति से बात करती थीं। कोई भी जवाब मुस्कुराकर ही देती थीं और राजा सर के साथ रहकर बहुत कुछ सीखने को मिला।

सर आप लोग जहाँ भी रहें, सब परिवार स्वस्थ खुशहाल और समृद्ध रहे। मेरी भगवान से यही प्रार्थना है आप जाइए, जरूर मगर हमसे हमेशा जुड़े रहें, जिससे गुरु और शिष्य का रिश्ता कायम रहे। इसी के साथ में अपने शब्दों को विराम देता हूँ।

अशोक कुमार
बैंड मास्टर (सेना से सेवानिवृत)

भारत यात्रा वृतांत...

ग्यारह वर्ष पूर्व अपने महाविद्यालय में जब पहली बार अजंता-एलोरा की गुफाओं के बारे में पढ़ा, तब से ही उन्हें देखने का मन था, जिन्दगी की भागम-भाग और अपनी-अपनी व्यस्तताओं के कारण पिछले कई सालों से ऐसा अवसर नहीं बन पा रहा था कि कुछ घुमक्कड़ दोस्त एक साथ लम्बे टूर पर जा सकें और कई सारे ऐतिहासिक स्थलों का भ्रमण कर सकें। हर बार एक या दो जगह ही देख पाते थे। लेकिन इस बार हम पाँच मित्र - कमलेश्वर (कैम) सर, दिलीप (दीपू) सर, प्रिय मित्र अजय, मैं स्वयं (वीरेन्द्र सिंह नागवंशी) और हरिओम दिनांक २९ मई २०२३ को मथुरा-ग्वालियर से कैम सर की हुंडई-वेन्यू से भारत यात्रा पर निकले।

२९ मई को हमने लगभग सायं चार बजे ग्वालियर से यात्रा प्रारंभ की और रात में गुना के एक होटल में रात बिताई। अगले दिन यानी 30 मई को हम लोग लगभग ११ बजे ''उज्जैन'' पहुँचे, जहाँ हमने महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग मंदिर, काल भैरव मंदिर, भर्तृहरि गुफाओं के दर्शन किए। उसके बाद हम ''कालिदास संस्कृत अकादमी, उज्जैन'' पहुँचे, जो कलाकारों का तीर्थ है, जहाँ कलाओं का संगम है, वहाँ हमनें दीर्घाओं में प्रदर्शित, कालिदास सम्मान से सम्मानित एवं अन्य सभी चित्रों एवं मूर्तियों का अवलोकन किया। अकादमी की उप निदेशक डॉ. फिरोजिया को धन्यवाद एवं आभार देते हुए हम उज्जैन से धार के लिए निकल गए।

धार से दस किलोमीटर पहले हमनें एक मंदिर पर चल रहे भंडारे का आनन्द लिया। धार पहुँचकर हम एक होटल में रुके और ३१ मई की सुबह होते ही वहाँ से माण्डू के लिए निकल गए, हम सुबह ९ बजे माण्डू महल पहुँच गए और महल खुलने के बाद हमनें माण्डव-माण्डू में तवेली महल, जहाज महल, हिंडोला महल, रूपमती मण्डप-महल, अशर्फी महल, संग्रहालय, जामी मस्जिद इत्यादि का बड़ी देर तक अच्छे से भ्रमण किया। माण्डू (माण्डव) घूमने के बाद लगभग एक बजे हम म.प्र. की बाघ गुफाएँ देखने के लिए चल दिए। लगभग ३ बजे बाघ पहुँचकर हमनें बाघ गुफाएँ देखी।

देर शाम तक बाघ गुफाएँ देखने के बाद रात में हम सेंधवा के होटल-आदर्श में रुके और पूरी भारत-यात्रा का सबसे बेहतरीन भोजन राजकमल भोजनालय में किया।

०१ जून की सुबह होते ही जलगाँव होते हुए अजन्ता गुफाएँ देखने निकल गए। पूरा दिन अजंता बौद्ध गुफाएँ देखने के बाद एलोरा जाने की उत्सुकतावश रात में हम हाईवे पर एक होटल में रुककर सुबह होने का इंतजार करते रहे। सुबह होते ही ०२ जून को हम औरंगाबाद (ऐलोरा) जाने के लिए तैयार थे, वहाँ पहुँचकर हमने सुबह जल्दी ऐलोरा गुफाएँ और कैलाश मंदिर घूमना शुरू किया और देर शाम तक घूमने के बाद भी जब मन नही भरा तो दोबारा देखने के उद्देश्य से औरंगाबाद के एक होटल में रुके और अगले दिन ०३जून को योजना बदलकर "बीबी का मकबरा" देखने चले गए। थोड़ी देर मकबरा देखने के बाद औरंगाबाद से नासिक रोड होते हुए शिर्डीसाई बाबा मंदिर पहुँच गए।

"बीबी का मकबरा" और शिर्डी-साई बाबा दर्शन के बाद सीधे मुंबई के लिए रवाना हुए और ठाणे पहुँचकर, गाड़ी हमारे रहने की जगह पर पार्क करके, लोकल ट्रेन का आनन्द लेते हुए देर शाम को मुंबई जा पहुँचे। वहाँ पर आइसक्रीम और मुंबई का प्रसिद्ध बड़ा पाव खाते हुए देर रात तक मुंबई के गेटवे ऑफ इण्डिया, ताज होटल, सड़कों और समुद्र के किनारे के पास टहलते-घूमते रहे।

आगामी दिवस यानी ०४ जून को गेटवे ऑफ इण्डिया से मोटर-बोट से समुद्र के रास्ते होते हुए लगभग एक-डेढ़ घंटे बाद एलीफेंटा-घारापुरी गुफाएँ पहुँचे। एलिफेंटा की विश्व प्रसिद्ध गुफाओं में त्रिमूर्ति, सदाशिव एवं अन्य सभी देखने के बाद समुद्र के रास्ते वापस मुंबई पहुँचकर जहाँगीर आर्ट गैलरी चले गए। दीर्घा में तीन कलाकारों की एकल प्रदर्शनी व एक समूह प्रदर्शनी देखने के बाद हम रात को लगभग एक बजे मुंबई की लोकल ट्रेन से अपने ठहरने के स्थान ठाणे पहुँचे।

अगले दिन ०५ जून को सुबह जल्दी उठकर मुंबई के छत्रपति शिवाजी महाराज वास्तु संग्रहालय, मुंबई (जिसे पहले प्रिंस ऑफ वेल्स म्यूजियम के नाम से जाना जाता था), पहुँचे, जहाँ हमें इतिहास से जुड़ी तमाम वस्तुओं के अलावा प्रिंट मेकिंग-प्रिंट गैलरी, समकालीन एवं लघुचित्र देखने को मिले। संग्रहालय घूमने के बाद हम मरीन ड्राइव गए और समुद्र में ढलते हुए सूरज को देखकर वहाँ लगभग दो घंटे बिताकर हम वापस अपने घोंसले में चले गए।

अब ऐसा लगने लग रहा था कि प्रकृति ने न जाने कितनी खूबसूरत, रहस्यमयी और ऐतिहासिक जगहें अपने पास छिपा रखी हैं, उन सभी को हम देख लेना चाहते थे। तत्पश्चात ०६ जून को हम कन्हेरी गुफाएँ देखने के लिए अपनी गाड़ी लेकर ठाणे से मुम्बई के बोरिवली में राजीव गाँधी राष्ट्रीय उद्यान जा पहुँचे, जहाँ हमें उद्यान परिसर की लोकल बस द्वारा कन्हेरी गुफाओं तक ले जाया गया। आधे दिन कन्हेरी गुफाएँ देखने के बाद हम महाराष्ट्र के लोनावला चले गये। शाम को लोनावला हिल स्टेशन पहुँचकर हमनें एक होटल में विश्राम किया और वहाँ की प्रसिद्ध चिक्की के साथ-साथ खाने का आनंद लिया।

भारत में पहली बार जिस मानव निर्मित गुफा में सजावट के लिए लकड़ी का उपयोग किया गया था उसका नाम है कार्ला गुफा, और यही हमारा अगला पड़ाव था। इसलिए हम ०७ जून को सुबह लोनावाला में स्थित कार्ला गुफा देखने के लिए ऊपर पहाड़ी पर चले गए, जहाँ हमने गुफा के ठीक बाहर बने प्राचीन आई एकवीरा देवी मंदिर के दर्शन किए साथ ही कार्ला गुफाएँ भी देखीं। कार्ला गुफाओं के भ्रमण के बाद बिना समय गँवाए हमने लोनावला की ही भाजे-भाजा गुफाओं के अवलोकन के लिए प्रस्थान किया और दोपहर तक वहाँ पहुँचकर सभी गुफाओं का भ्रमण किया।

कार्ला-भाजा गुफावलोकन के बाद हम अपने अगले लक्ष्य त्र्यंबकेश्वर ज्योतिर्लिंग मंदिर जाने के लिए शाम कोलोनावाला से निकले और रात अधिक होने के कारण त्रिम्बक से तीन किलोमीटर पहले ही एक होटल में रूके। ०८ जून की सुबह हमनें त्र्यंबकेश्वर ज्योतिर्लिंग मंदिर में भगवान शिव के दर्शन किए और वहाँ से नासिक की ओर चल दिए। लगभग सुबह ग्यारह बजे हम नासिक के पास ऊँची पहाड़ी पर बनी बेहद खूबसूरत पाण्डवलेणी-त्रिरश्मि-नासिक गुफाएँ घूमने आ गए।

महाराष्ट्र के बाद दक्षिण भारत में बहुत अधिक गर्मी पड़ने के कारण हम दक्षिण भारत केरल, कर्नाटक, महाबलीपुरम इत्यादि नहीं गए और यहीं से हमने अपनी योजना में आवश्यक परिवर्तन करते हुए वापस मध्यप्रदेश की ओर जाने का फैसला किया। नासिक-पाण्डवलेणी-त्रिरश्मि गुफाएँ घूमने के तुरंत बाद हम खरगौन जिले के महेश्वर चले गए, जो अपनी महेश्वरी साड़ी के लिए प्रसिद्ध है। देर शाम पहुँचकर हमने वहाँ महेश्वर किला, अहिल्याबाई किला, नर्मदा घाट, अहिल्येश्वर मंदिर, विठौजी की छत्री, इत्यादि के अवलोकन के बाद घाट पर बिक रहे चनों का जायजा लिया और महेश्वरी साड़ी खरीदकर वहाँ से आगे के लिए प्रस्थान कर गए।

०८ जून की रात हमने महेश्वर-इंदौर रोड पर बने एक होटल में व्यतीत की और ०९ जून की सुबह होते ही इन्दौर रोड से गुना होते हुए हम शाम तक अपने गृह नगर ग्वालियर आ गए। इस तरह हमारी यह ऐतिहासिक भारत यात्रा खुशी-खुशी सम्पन्न हुई।

इस यात्र में हमने बहुत मस्ती की, रोचक, बेहद खूबसूरत और रोमांचक स्थान देखे और खाने-पीने का भरपूर आनंद लिया। यात्र शुरू करने से लेकर सम्पन्न होने तक लईया-चना (लाई, मुरमुरे, चनें, प्याज-टमाटर, नमकीन, बारीक सेव का मिश्रण) ने बहुत साथ दिया, गाड़ी चलाने वाले के अलावा पीछे बैठने वालों का समय इसी से व्यतीत होता था। यात्र में फोटो खींचने का बराबर ध्यान रखा गया, हमने हर जगह की ढेर सारी सुंदर तस्वीरें और वीडियो लीं। प्रिय हरिओम ने अपने नये मोबाइल से हम सभी की बेहद दिलकश और खूबसूरत फोटो खींचीं।

भारत यात्र के बारे में विस्तार से जानने के लिए आपइन लिंक के माध्यम से मेरी प्रोफाइल्स को स्क्रॉल कर देख-पढ़ सकते हैं, वहाँ मैंने प्रत्येक स्थान के बारे में फोटो, लाइव, वीडियो एवं लेख सहित विस्तार से जानकारी प्रेषित की है।

Facebook - https://www.facebook.com/VeerendraSinghNagvanshi?mibextid=ZbWKwL

Instagram - https://instagram.com/vsnagvanshi?igshid=MzNlNGNkZWQ4Mg==

LinkedIn - https://in.linkedin.com/in/vsnagvanshi

हमारे द्वारा घूमे गए पर्यटन स्थलों की जिलेवार जानकारी :-

यात्र में हमनें विभिन्न ऐतिहासिक शहरों-पर्यटन स्थलों का भ्रमण किया जिनमें प्रमुख रूप से "उज्जैन" में महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग मंदिर, काल भैरव मंदिर, भर्तृहरि गुफाएँ एवं कालिदास संस्कृत अकादमी, उज्जैन।

"धार" में माण्डव-माण्डू में तवेली महल, जहाज महल, हिंडोला महल, रूपमती मण्डप-महल, जामी मस्जिद, माण्डू महल एवं बाघ बौद्ध गुफाएँ इत्यादि।

"औरंगाबाद-संभाजी नगर" में अजन्ता गुफाएँ, एलोरा गुफाएं, बीबी का मकबरा एवं अहमद नगर-शिर्डी में शिर्डी साई बाबा मंदिर।

"मुंबई" में गेटवे ऑफ इण्डिया, ऐलीफेंटा-घारापुरी गुफाएँ, जहाँगीर आर्ट गैलेरी, प्रिंस ऑफ वेल्स म्यूजियम (पुराना नाम)- छत्रपति शिवाजी महाराज वस्तु संग्रहालय (नया नाम), कन्हेरी गुफाएं, संजय गांधी राष्ट्रीय उद्यान, इत्यादि।

"पुणे-लोनावला" में कार्ला गुफाएँ, एकवीरा देवी मंदिर एवं भाजा-भाजे बौद्ध गुफाएँ।

"नासिक" में त्र्यंबकेश्वर ज्योतिर्लिंग मंदिर, पाण्डव लेणी- त्रिरश्मि-नासिक गुफाएँ।

"खरगौन-महेश्वर" में महेश्वर किला, अहिल्याबाई किला, नर्मदा घाट, अहिल्येश्वर मंदिर, विठौजी की छत्री, इत्यादि।

वीरेन्द्र सिंह नागवंशी
कला शिक्षक, सिंधिया स्कूल,
ग्वालियर दुर्ग, मध्यप्रदेश, भारत

अनुभव सर का अनुभव

कुमार अभीक्षित नारायण से पूर्व छात्र अनुभव बोहरा की चर्चा

उन्होंने यह कहते हुए शुरुआत की कि एक तरह से, उन दिनों समय कठिन था। प्रत्येक छात्र प्रत्येक शिक्षक का सम्मान करता है, आज कल की तरह नहीं जहा शिक्षक मित्र की तरह होते हैं। हमने शिक्षक के सामने बोले गए प्रत्येक शब्द पर विचार किया। वे हमारे लिए पिता तुल्य थे। उन्होंने प्यार भी दिखाया और जरूरत पड़ने पर डाँटा भी।

वरिष्ठजन हमारे बड़े भाई जैसे थे। उन्होंने जरूरत पड़ने पर हमारी मदद की और जब भी हमने कुछ गलत किया तो उन्होंने हमें डाँटा और दंडित भी किया। हमारे सदन में अब जैसे फोन नहीं थे।

यह सिर्फ एक फोन-बूथ था जिसमें हमें हर दो महीने में एक बार कॉल करने का मौका मिलता है। पत्र-प्रणाली भी थी। हम अपने माता-पिता को जयाजी सदन के सामने लगे पोस्ट बॉक्स से पत्र भेजा करते थे। हम माता-पिता के जवाब के लिए लगभग दो से तीन महीने तक इंतजार करते थे। माता-पिता को कभी हमारी चिंता नहीं होती थी क्योंकि उन्हें स्कूल पर पूरा विश्वास था। मार्च पास्ट सिंधिया स्कूल का सबसे अभिन्न अंग था और अब भी है। हम देर-देर रात तक अभ्यास करते थे।'

फाउंडर्स दिवस पर, हम प्रदर्शनियों, ऑर्केस्ट्रा, नाटक इत्यादि जैसी कई गतिविधियों में शामिल थे। हमने अपने घर को सजाया, पेड़-पौधे लगाए और यहाँ तक कि अपने घर की दीवारों और दरवाजों को भी रँगा था। उस समय, स्कूल में पाठ्येतर गतिविधियाँ भी आयोजित की जाती थीं और खेल सिखाए जाते थे, लेकिन खेलों के लिए अलग से कोई कोच नहीं थे। जो शिक्षक सामान्य विषय पढ़ाते थे, वे हमें खेल भी पढ़ाते थे और मैं क्रिकेट में बहुत अच्छा था। उस समय लैपटॉप या फोन की अनुमति नहीं थी। २००१ में, पहली बार, हमें अपने माता-पिता को ईमेल करने की अनुमति दी गई। फिर यह संचार का एक प्रमुख स्रोत बन गया। हमें टेबल शिष्टाचार भी सिखाया गया

आजकल माता-पिता अतिसुरक्षात्मक हो गए हैं।

उन दिनों अभिभावकों को भी छात्रों के स्वास्थ्य या पढ़ाई के बारे में पता नहीं होता था। आज की तुलना में माता-पिता और छात्र के बीच संवाद बहुत अधिक नहीं था। माता-पिता के रूप में, आपको मजबूत होना होगा, और छात्रों के रूपमें, आपको आत्मविश्वासी, स्वतंत्र और निर्णय लेने वाला होना चाहिए। दर्पण के सामने अपने आप से यह प्रश्न पूछें: ''आपने अब तक क्या सीखा है और आपने जो कुछ भी सीखा है क्या आप उसे अपने दैनिक जीवन में उपयोग कर रहे हैं?

मैस का खाना

मैस का खाना बड़ा है अच्छा! पर पता नहीं क्यों?
मैस के बने खाने को देखकर रोता बच्चा!
आखिर इस दुनिया में बच्चा ही तो है
मन का सच्चा!

मैस में हम अपने दोस्तों से, करते हैं बहुत-सी बातें
क्योंकि हम हैं मेस का खाना खाते
खाने के लिए टोकती मैडम जब
तब हम खाना लाते!

यहाँ की मिठाई है तो बड़ी मीठी, बस, यह ध्यान रखना भाई
उसको न खाले कोई चींटी
वरना हो जायेगी फीकी!

यहाँ की मिर्चियाँ, होती है तीखी, सारे बच्चे करते हैं खी खी खी
अब और क्या कहूँ आगे की बात
मुँह में जल रही है
लाल मिर्ची तीखी-तीखी!

मानविक कपूर, कक्षा ७

भूतकथा - छात्रों का भरपूर मनोरंजन

इस वर्ष दो बार अध्यापकों ने हमारा 'बाल दिवस' मनाया। पहले जब 'कवि सम्मेलन', हुआ, वह अद्भुत अनुभव था, और दूसरा 'बाल दिवस' २१ दिसंबर २०२३ को हुआ था। शिक्षकों ने विद्यार्थियों के लिए एक कार्यक्रम में बहुत सारे मनोरंजक प्रदर्शन किए।

पूरे कार्यक्रम की थीम एक थी- एक स्कूल, जहाँ कुछ भूत विद्यार्थियों को डराते हुए, दूसरे हाउस में जाकर मजे करते थे! विद्यार्थी बने थे- श्री पंकज मिश्रा और श्री शिव कुमार शर्मा, श्री चेतन भाटिया, श्री योगेश शर्मा, श्री अनिकेत गरुड़, श्री विकास सोनी। भूत बने थे- सुश्री मनीषा सिंह, श्री ध्रुव शर्मा। साहसी हाउस मास्टर थे जिन्होंने इस पहेली को सुलझाया था- श्री अनिल पठानिया और श्री जगदीश जोशी।

परदे बंद थे! अचानक धीरे-धीरे ड्रम बजना शुरू हुआ कि अचानक से बंद परदे बीच से उठे और वापिस गिर गये! सामने श्रीमती नीहारिका कुलश्रेष्ठ संचालन करने के लिए मंच पर पर प्रकट चुकी थीं! मगर भुतहा संगीत के चलते डरकर चली गई।

एक हाउस में बच्चे भूतों के बारे में बात करते हैं। हाउस मास्टर उन्हें डाँटकर सुलाते हैं! रात को कोई काग-भगौड़ा की तरह भूत के पुतले से डराने आता है। बच्चे डरकर है-तौबा मचाते है, उसी बीच दो शैतान छात्र इस गहमा-गहमी का फायदा उठाकर दूसरे हाउस में सोने चले जाते हैं। अगले दिन भूत की चर्चा कक्षाओं में होने लगती है। अब हम सभी को एक संगीत की प्रस्तुति देखने को मिलती है, जिसमें सभी शिक्षक-शिक्षिकाओं ने "तू मेहरबान बख्शीश कर" प्रार्थना मयी और इससे जुड़कर और भी गाने सुनाए। फिर भूत की कहानी छात्रों के बीच चलती रहती है। इस बीच राहुल सर "भूल-भुलैया" गाने पर नाच दिखाते हैं! दर्शक छात्र रोमांच से भर जाते हैं।

उधर मंच पर भूत की कहानी जारी रहती है। कोई विज्ञान की क्लास के लिए 'स्केलटॉन' ला रहा था कि दूसरे छात्र बने शिक्षक चीखकर भागते हैं। फिर वही भूत की कहानी। 'मुराद अली' की कहानी! प्रार्थना सभागार में अंधकार है और गाना बज रहा है- गुमनाम है कोई! हाथ में लालटेन लेकर प्रवेश द्वार से मनीषा मैडम का सिर ढँके आना! सभागार के सभी दरवाजों का बजना! कॉरीडोर में घुँघरू पहने किसी के भागने की आवाज! छात्रों के रोमांच और खुशी का ठिकाना नहीं था।

इस कथा के दौरान श्री उपेन्द्रनाथ अश्क का लिखा नाटक ''जोंक'' का मंचन किया गया। नाटक में एक अज्ञात मेहमान घर अतिथि बनकर बैठ जाता है, और घरवाले परेशान। इसमें श्री सृजित पिल्लई, श्री ऋतेन्द्र द्विवेदी, स्मिता त्रिवेदी और श्री गणपत एस. पाठक ने मुख्य भूमिका निभाई। विद्यार्थियों ने हर किरदार का आनंद लिया। चाहे वह नाटक का चरित्र 'कमला' हो या 'बनवारीलाल' हो। फिर कई संगीत कार्यक्रम हुए।

श्री कमलेश सिंह ने हारमोनिका बजाया। गायिका सुश्री मृणाल भट्ट ने भी अपनी मधुर आवाज में गाया। पुन: श्री योगेश शर्मा जिन्होंने अपनी बॉलीवुड मिमिक्री से शिक्षकों और विद्यार्थियों को आश्चर्य चकित कर दिया। जब शो खत्म होने वाला था, दो अद्भुत प्रदर्शनों ने शो का जादू बढ़ा दिया। उप प्रचार्य ने 'जिंदगी एक सफर है सुहाना गाना की बोर्ड पर बजाया।

प्राचार्य महोदय ने अपनी मधुर आवाज में एक सुंदर गीत गाया। ये शो के अंत तक भूतों को अंतत: पकड़ लिया गया। ये भूत थे-श्रीमती मनीषा सिंह चौहान, श्री विकास सोनी और श्री ध्रुव शर्मा बाहर निकले।

अंत में शिक्षकों ने फैशन शो दिखाया। बारहवीं कक्षा के विद्यार्थी भी इसमें शामिल हैं। फैशन शो समाप्त हुआ तो दर्शकों ने शिक्षकों को खड़े होकर शुक्रिया कहा साथ ही उनके अद्भुत प्रयास को।

लक्ष्य तुलसयान
कुमार अभीक्षित नारायण

तेरहवीं वसंत वैली आज तक हिन्दी वाद-विवाद प्रतियोगिता

गत ४ अगस्त २०२३, हम सभी के लिए गौरव का क्षण था कि जब तेरहवीं वसंत वैली आज तक हिन्दी वाद-विवाद प्रतियोगिता में सिंधिया स्कूल, ग्वालियर ने २६ विद्यालयों के मध्य उम्दा प्रदर्शन करते हुए अंतिम चरण में जगह बनाई और उप-विजेता घोषित किया गया। हम न केवल उप विजेता बने बल्कि अपने विनम्र व्यवहार और तीक्ष्ण तर्कों से वहाँ सभी के दिल जीते। प्रतियोगिता मेजबान विद्यालय वसंत वैली ने जीती।

इस प्रतिष्ठित प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए विद्यालय के दल में कक्षा बारहवीं के छात्र आदित्य सिंह (माधव सदन), आराध्य शिव शुक्ला और कक्षा ग्यारहवीं के छात्र तनिश अग्रवाल (दौलत सदन) सम्मिलित थे। विद्यालय का दल २ अगस्त को ग्वालियर को रवाना हुआ और दिल्ली में वसंत वैली स्कूल की एक अभिभावक श्रीमती वत्सला डागा के यहाँ ठहरे। अगले दिन तड़के प्रतियोगिता की गहमा-गहमी शुरू हो गई।

पहले दिन ३ अगस्त को प्रतियोगिता के पहले चरण के मुकाबले हुए। सभी विद्यालयों को चार-चार के समूहों में बाँटकर प्रतियोगिता हुई। हर समूह से दो विद्यालय अगले चरण में पहुँचे। अगले चरण में पहुँचे विद्यार्थियों को विद्वाय देकर २ मिनिट सोचने का समय दिया और १ मिनिट में अपना वक्तव्य प्रस्तुत करना था। तेरह विद्यालयों के बीच हुए इस मुकाबले में ६ विद्यालयों ने सेमीफाइनल में प्रवेश किया।

४ अगस्त को प्रात: सत्र में सेमीफाइनल टर्न कोट पद्धति से आयोजित किया।

इसमें मेजबान विद्यालय वसंत वैली स्कूल, नई दिल्ली के साथ सिंधिया स्कूल, फोर्ट ग्वालियर अंतिम चरण में पहुँचने में सफल रहे।

प्रतियोगिता का प्रत्येक चरण वाद-विवाद के विविध प्रचलित प्रारूपों और रोचक विषयों से सुसज्जित था। यह प्रतियोगिता मेजबान विद्यालय के पूर्व छात्र-छात्राएँ, भूतपूर्व अध्यापक एवं दिल्ली विश्वविद्यालय से जुड़े प्राध्यापकों एवं विशेषज्ञों की एक समिति आयोजित कर रही थी। प्रतियोगिता के प्रत्येक पायदान और हर समूह में फैसला बेहद सटीक था। प्रतियोगिता के बाद निर्णायकगण हर विद्यालय के प्रतिभागियों से बात करते थे और उनके प्रदर्शन के बारे में आलोचनात्मक टिपण्णी करते थे। यह इस प्रतियोगिता का बड़ा ही सुंदर पहलू था। यहाँ निराशा का नाम नहीं था, बल्कि सीखने को बहुत कुछ था।

अंतिम चरण में हुए मुकाबले में दो मजबूत प्रतिद्वंद्वी आपने-सामने थे। विषय था- सदन का मानना है कि मूकदर्शिता में ही बुद्धिमानी है। इस चरण में वादविवाद संसदीय पद्धति से हुआ। विषय के पक्ष में तनिश अग्रवाल ने बोलते हुए विषय का निरूपण कुछ इस तरह किया कि वादविवाद की आधारशिला विपक्ष के लिए कुछ आसान नहीं रही। विपक्ष के वक्ता ने यह बार-बार यह ठहराने की कोशिश की कि विषय कुछ और बात कर रहा है और पक्ष अपनी बात अलग रख रहे हैं। मगर पक्ष से आदित्य सिंह ने मजबूत वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए विपक्ष को मजबूर किया कि वे उनके विषय-निरूपण के अनुरूप विवाद पेश करें। इसके बाद विपक्ष उन्हीं की बातों का उत्तर देने लगा। मगर विपक्ष का भाषा-ज्ञान और आत्मविश्वास पक्ष को डाँवाडोल करने लगा। प्रश्नोत्तर प्रसंग में पक्ष ने अपना मोर्चा मजबूत कर लिया और प्रतियोगिता को रोचक बना दिया। विपक्ष के प्रतिभागियों ने कटाक्ष और तंज कसकर पक्ष के प्रतिभागियों के विश्वास को तोड़ने की भरपूर कोशिश की मगर पक्ष ने सशक्त प्रतिरोध प्रस्तुत किया।

अंतत: बहुत कम अंतर से मेजबान विद्यालय विजयी घोषित किया गया। मुख्य अतिथि आज तक की समाचार प्रस्तोता सुश्री चित्रा त्रिपाठी ने प्रतिभागियों के प्रयासों की सराहना करते हुए, वादविवाद करने के गुर भी सिखाये। उन्होंने अपनी जीवन-यात्रा के संस्मरण सुनाये। इंडिया टुडे समूह की प्रमुख रेखा पुरी ने रोमांचित होते हुए कहा कि उन्होंने इतना रोचक मुकाबला कभी नहीं देखा। यदि मैं जादूगर होती तो इस ट्रॉफी को भी दो कर देती। इस प्रकार अपने चुटीले अंदाज में बात करते हुए विजयी वैजयंती वसंत वैली, नई दिल्ली को प्रदान की और सिंधिया स्कूल, फोर्ट ग्वालियर के विद्यार्थियों को उपविजेता की ट्रॉफियाँ प्रदान की।

मार्गदर्शक:
गणपत स्वरूप पाठक
हिन्दी अध्यापक

भगवज्जुकम

साल-दर-साल चला आ रहा हिंदी वार्षिक नाटक इस बार भी एक बड़ी कामयाबी की तरह उभरा, जिसमें हमारे प्रिय श्री गणपत स्वरूप पाठक सर ने हिंदी नाटक को सफल बनाने में बहुत मदद की। भगवज्जुकम नाटक बोधायन कवि द्वारा लिखितहै।

इस हिंदी नाटक में २५ बच्चे थे। मुख्य पात्र थे: लक्ष्य शर्मा (भगवत), नमन दुआ (शांडिल्य), आन्या पिल्लई (अज्जुका), विनायक कपूर (सूत्रधार), आर्यवर्द्धन सिंह सोमवंशी (यमदूत), मेहुल जैन (विदूषक), साहिल किशोर (सहेली-१), अंश मित्तल (सहेली-२), विवेक शर्मा (वैद्य), श्लोक शर्मा(रामिलक), प्रतीक बंका (माता जी)।

इस नाटक को और भी सफल बनाने में हमारे संगीत विभाग का बहुत योगदान रहा। श्री योगेश शर्मा जी (विभागाध्यक्ष) ने अपने संगीत के माध्यम से नाटक में जान डाल दी।

हमने हर साल की तरह इस साल भी कुछ अलग किया। जैसे सारे पिछले सारे नाटकों में माइक का इस्तेमाल किया गया था। वहीं हमने बिना माइक के नाटक किया और दूसरे नाटकों के मुकाबले हमने कम सामानों का प्रयोग किया।

हर साल की तरह इस साल भी २ नाटक हुए थे, अँग्रेजी और हिन्दी। हर बार की तरह इस बार भी दोनों ने एक-दूसरे को कड़ी टक्कर दी। दोनों नाटकों को स्कूल की तरफ से बहुत प्यार मिला। दोनों नाटकों को सफल बनाने में बच्चों की दिन-रात की मेहनत थी। हमारे नाटक को सफल बनाने में कुछ ऐसे लोगो का भी हाथ था जो जनता के सामने नहीं आए परंतु बैक स्टेज रहकर उन्होंने हमारी बहुत मदद की। अर्चित, आदित्य सिंह, समीप मोदी (कथावाचक), हर्षवर्द्धन हिमांशु वाढेर।

विनायक कपूर, लक्ष्य शर्मा
(कक्षा ग्यारहवीं)

बोर्डिंग स्कूल, धैर्य और दोस्ती

बोर्डिंग हाउस के लड़के हमेशा परेशानी में रहते थे। वे रात में चुपचाप बाहर निकलते थे, एक-दूसरे के साथ मजाक करते थे और कभी-कभी लड़ते भी थे। लेकिन एक दिन, उनमें झगड़ा हो गया, जिसके गंभीर परिणाम हुए।

यह सब तब शुरू हुआ जब ऋषि नाम के एक लड़के ने दूसरे लड़के की बेश कीमती संपत्ति चुरा ली। जिस लड़के की संपत्ति चोरी हुई थी, उसका नाम नारायण था, वह क्रोधित था। उन्होंने ऋषि का सामना किया और माँग की कि वह वह वस्तु वापस कर दें। ऋषि ने मना कर दिया और दोनों लड़के बहस करने लगे।

बहस तेजी से बढ़ी और जल्द ही लड़के झगड़ने लगे। उन्होंने एक-दूसरे को मुक्का मारा और लात मारी, और लड़ाई गलियारे तक फैल गई। बोर्डिंग हाउस के अन्य लड़के यह देखने के लिए दौड़े कि क्या हो रहा है, और जल्द ही वे सभी लड़ाई में शामिल हो गए।

झगड़ा इतना जोरदार था कि हेड मास्टर की नींद खुल गई। वह अपने कार्यालय से भागकर बाहर आया और लड़कों को लड़ते देखा। वह गुस्से में था और उसने लड़कों को तुरंत रुकने का आदेश दिया।

लड़कों ने अनिच्छा से लड़ना बंद कर दिया, लेकिन वे सभी अभी भी गुस्से में थे। प्रधानाध्यापक ने लड़कों को पूरे बोर्डिंग हाउस की सफाई करने को कहा। लड़के इस बात से खुश नहीं थे, लेकिन उन्हें पता था कि वे इसी लायक थे।

ऋषि और नारायण की लड़ाई का बोर्डिंग हाउस के लड़कों के जीवन पर गंभीर प्रभाव पड़ा। इससे उन्हें पता चला कि उनके कार्यों के गंभीर परिणाम हो सकते हैं। इसने उन्हें अपने मतभेदों को शांति पूर्ण ढंग से सुलझाने का महत्व भी सिखाया।

बोर्डिंग हाउस के लड़कों ने उस दिन एक मूल्यवान सबक सीखा उन्होंने सीखा कि लड़ना कभी भी समाधान नहीं है। अगर आपको किसी से कोई समस्या है तो आपको उनसे इस बारे में शांति और सम्मान पूर्वक बात करनी चाहिए। हिंसा से हालात और बदतर ही होंगे।

बोर्डिंग हाउस के लड़कों ने टीमवर्क का महत्व भी सीखा। जब वे बोर्डिंग हाउस की सफाई कर रहे थे, तो उन्हें काम पूरा करने के लिए एक साथ काम करना पड़ा।

उन्हें एहसास हुआ कि अगर वे इसे अपने दम पर करने की कोशिश करेंगे तो इसके बजाय अगर वे साथ मिलकर काम करेंगे तो वे अधिक हासिल कर सकते हैं।

ऋषि और नारायण के बीच की लड़ाई बोर्डिंग हाउस के लड़कों के लिए एक महत्वपूर्ण मोड़ थी। इसने उन्हें शांति, टीमवर्क और सम्मान का महत्व सिखाया। लड़के अपने द्वारा सीखे गए सबक के लिए आभारी थे और उन्होंने फिर कभी लड़ाई न करने की कसम खाई।

मेरा पहला दिन

मेरा सिंधिया में पहला दिन अच्छा था। मैं जब स्कूल में आया तो मैंने हर कक्षा में स्मार्ट बोर्ड देखा। जब माता मुझे छोड़ने आई, तब मैं बहुत उत्साहित था। रात को मैंने एक दोस्त बनाया जो मेरे बगल में सोता था, वह अब मेरा बहुत अच्छा दोस्त है। यहाँ के पुराने बच्चे बहुत अच्छे हैं। हम रात को बातें करते-करते सो गये। उस रात हमने बहुत मजे किए।

यहाँ क्लास में बहुत सारी बातें होती रहती हैं। मैंने पहले दिन में एक दोस्त बनाया वह बहुत अच्छा था, जो मुझको हर चीज देता था। वह पढ़ाई में भी होशियार था और वह कक्षा का नायक था। हमारी कक्षा में २१ बच्चे थे जो हमेशा शरारत करते रहते थे।

स्वराज भारद्वाज
दत्ताजी सदन

मेरे पहले दिन की कहानी!

मैं जब पहले दिन आया तो बिल्कुल भी नहीं रोया। मैंने देखा कि बहुत से बच्चे आए थे और कुछ रो रहे थे। मैं उनके पास गया और मैंने उन से बातें करना शुरू कर दीं। वे चाहते थे कि उनके माता-पिता तुरंत आयें और उन्हें ले भी जाएँ। मैंने उनको समझाया- उनके माता-पिता ने कितने पैसे खर्च करे हैं तो अब उनको निराश नहीं करना चाहिए ! उन्हें अब हमें कर के दिखाना चाहिए कि हम कुछ बड़ा बनकर दिखा सकते हैं। यह कहकर मैंने बहुत से दोस्त बनाए और मेरा दिन अच्छा गया!

शर्मीला

यश नाम का एक लड़का था जो बहुत शर्मीला था। वह इतना शर्मीला था कि कभी किसी से बात नहीं करता था, यहाँ तक कि अपने परिवार से भी नहीं। एक दिन, यश के माता-पिता ने उसे बोर्डिंग हाउस में भेजने का फैसला किया, इस उम्मीद में कि वह कुछ दोस्त बना लेगा।

यश बोर्डिंग स्कूल जाने को लेकर बहुत घबरा रहा था, लेकिन जैसे-तैसे वह जाने के लिए तैयार हो गया। जब वह बोर्डिंग हाउस पहुँचे तो वह तुरंत अभिभूत हो गए। वहाँ और भी बहुत सारे लड़के थे, और वे सभी एक-दूसरे को जानते थे। यश को ऐसा लगा जैसे वह स्वयं उसका नहीं है।

बोर्डिंग स्कूल में पहले कुछ दिन यश के लिए बहुत कठिन थे। उन्होंने किसी से बात नहीं की और दोपहर का खाना कैफेटेरिया में अकेले ही खाया। वह बहुत अकेला और अलग-थलग महसूस करता था।

एक दिन, यश दालान में टहल रहा था जब उसने लड़कों के एक समूह को टैग का खेल खेलते देखा। वह रुका और कुछ देर तक उन्हें देखता रहा। उसने इसमें शामिल होने के बारे में सोचा, लेकिन वह बहुत शर्मीला था।

तभी, उनमें से एक लड़का यश के पास से भागा और गलती से उस से टकरा गया। यश नीचे गिर गया और लड़के हँसने लगे। यश शर्मिंदा हुआ, लेकिन वह भी हँसने लगा। उसे एहसास हुआ कि लड़के उस पर नहीं, बल्कि उसके साथ हँस रहे थे।

यश टैग के गेम में शामिल हुए और उन्होंने खूबमस्ती की। उसने दूसरे लड़कों से दोस्ती करना शुरू कर दिया और धीरे-धीरे वह अपने दायरे से बाहर आने लगा।

यश के माता-पिता यह देखकर बहुत खुश हुए कि वह बोर्डिंग स्कूल का कितना आनंद ले रहा है। वे खुश थे कि उन्होंने उसे वहाँ भेजा था। यश आखिरकार दोस्त बनाना शुरू कर रहा था, और वह अब उतना शर्मीला नहीं था।

टैग गेम के साथ हुई घटना ने यश को यह एहसास दिलाने में मदद की कि जैसे रहना ठीक है। उसे वह शर्मीला लड़का नहीं बनना था जो कभी किसी से बात नहीं करता था। वह स्वयं हो सकता है, और लोग फिर भी उसे पसंद करेंगे। यश ने उस दिन एक मूल्यवान सीख सीखी, और इस कारण वह बहुत प्रसन्न - व्यक्ति हो गया।

नमन जैन
कक्षा आठवीं 'स', रानोजी सदन

विचित्रकार मुश्ताक़ खान चौधरी से आर्यवर्द्धन सिंह सोमवंशी की बातचीत

(अभी कुछ दिन पहले ही चित्रकला पर बात हो रही थी। बात चित्रकला से समाज से जुड़ गई। समाज से प्रकृति और मनुष्य पर आ गई। बड़ी रोचक बातचीत थी। मैं भी ठहरकर सुनने लगा। बहुत ही अद्भुत था वह सबकुछ सुनना, जो अब कम ही सुनने को रह गया है। क्योंकि कहने वाले नहीं हैं! आप भी सुनिए कला शिक्षक, देश के चित्रकारों में एक जाना-माना नाम और सिंधिया स्कूल का गौरव।)

मैं ये कहूँगा कि मैंने चित्रकारी को चुना न कि चित्रकारी ने मुझे। इसका कारण है कि मुझे बचपन से ही पेंटिंग में दिलचस्पी थी। शुरुआत से ही चित्रकारी को अपना सारा समय समर्पित करता था। मैंने चित्रकार बनने का सोचा, क्योंकि चित्रकारी से मैं अपने आप को दुनिया के सामने ला सकता था। लोगो को अनोखी चीज दिखा सकता था। मेरे इस सपने को पूरा करने में मेरे बड़े भाई साहब ने मेरी बहुत मदद की थी और मुझे हर पल सहारा दिया था। उनकी राह पर चलते-चलते मैंने बीएफए (बैचलर ऑफ फाइन आर्ट्स) किया, और फिर सिंधिया स्कूल में आकर एक अध्यापक की नौकरी लग गई। मुझे लगता है कि मैंने चित्रकारी को चुनकर बहुत अच्छा किया और ये मेरी जिंदगी का सबसे अच्छा फैसला था। मैं आज जो भी हूँ, वह सब अपनी चित्रकारी की कला की वजह से हूँ और मुझे चित्रकारी से बहुत सुकून मिलता है।

सन १९८८ में सिंधिया स्कूल ज्वाइन किया था और मेरा बीएफए १९८७ में ही खत्म हो चुका था। मुझे सिंधिया स्कूल के बारे में मेरे एक मित्र ने बताया था। बात असल में ये हुई थी कि अखबार में सिंधिया स्कूल में नौकरी का विज्ञापन आया था। मेरे मित्र को नौकरी नहीं चाहिए थी तो उन्होंने मुझे अखबार का विज्ञापन दिखाया और पूछा कि मुझे ये नौकरी चाहिए कि नहीं! तब श्री माधव राव सिंधिया जी केन्द्रीय रेलमंत्री थे। तो ये सोचा कि उनका स्कूल है और एक ऐसा स्कूल है जो किले के भीतर बना हुआ है तो मैं आ गया।

मैंने सिंधिया स्कूल को ही चुना क्योंकि यहाँ पर्यावरण और विविधता किसी भी और स्कूल में नहीं मिल सकती थी। जो भी चीज स्कूल में उपलब्ध थी, वह मुझे और किसी भी स्कूल में नहीं मिल सकती थी। यहाँ का शांत माहौल, यहाँ के बच्चों के साथ एक अच्छा और सुकून का जीवन। तो मेरा यहाँ से कहीं भी जाने का मन नहीं करता था। मुझे एक बार दिल्ली से नौकरी का प्रस्ताव आया था लेकिन यह सोचकर कि मुझे यहाँ जैसा पर्यावरण वहाँ नहीं मिल पाएगा। तो फिर मैं नहीं गया।

इस दुनिया में कहीं भी ऐसा स्कूल नहीं है जो एक किले के अंदर बना हो और मुझे यहाँ का सिर्फ वातावरण ही नहीं पसंद है, यहाँ के बच्चों से भी बहुत कुछ सीखने को मिलता है। मैं बांग्ला-भाषी हूँ। यहाँ रहकर मुझे हिन्दी के साथ-साथ अँग्रेजी भी सीखने को मिली। बच्चों के साथ रह कर फुटबॉल और क्रिकेट जैसे स्पोर्ट्स भी सीख गया। इसलिए मुझे यहाँ से कहीं भी जाने का मन नहीं करता।

जैसा कि आर्यवर्द्धन ने पूछा कि क्या हम ये कह सकते हैं कि चित्रकला समाज का दर्पण है और एक चित्रकार दर्पण दिखाने वाला! यह बिल्कुल सही है! कलाकार लोगों को भी भारत के साथ ही आजादी मिली। भारत की आजादी से पहले कोई भी अपने विचारों को खुले रूप में अभिव्यक्त नहीं कर सकता था। जो भी था वह हाँ में हाँ मिलाने के रूप में।

पहले चित्रकारी आई, फिर भाषा आई। चित्रकारी को देख देखकर ही भाषाएँ बनी। भाषा से पहले तो सभी चित्रकारों का ही इस्तेमाल करते वे अपनी बात बताने के लिए। बच्चों को पढ़ाई से ज्यादा चित्र बनाने में मजा आता है, क्योंकि वो चित्रकारी द्वारा अपने आपको ज्यादा अच्छे से प्रकट कर सकते हैं। मुझे स्कूल में इतने साल हो गए और मैं यह बात विश्वास से कह सकता हूँ कि बच्चे कला के पीरियड में बहुत खुशी-खुशी आते हैं। उतना कि वो किसी और की कक्षा में नहीं जाते होंगे!

मेरे विचार से किसी की कला अच्छी और बुरी नहीं होती है। सबका चित्र एक समान है क्योंकि सबका चित्र अपने में ही एक मतलब रखता है। मेरे लिए चित्रकार एक कला है और इस कला में कोई भी अच्छा और बुरा नहीं होता।

पहले और आज के समय की अगर में बात करूँ तो पहले के बच्चे भी बहुत रचनात्मक हुआ करते थे लेकिन उनके माता-पिता को कला में आजीविका चलती नहीं दिखती थी तो बच्चे पहले ललित कला एक विषय की तरह नहीं चुनते थे। लेकिन अगर हम आज की बात करें तो आज ललित कला से बच्चों के लिए असीमित आकाश है। बैचलर फाइन आर्ट्स से अभियांत्रिकी, डिजाइनर, ग्राफिक कलाकार, एनीमेशन फिल्में और भी बहुत कुछ है। इसीलिये आज के समय पर पहले से ज्यादा बच्चे फाइन आर्ट्स विषय चुनते हैं। और हाँ ये बात सच भी है कि समय-समय पर आगे बढ़ते-बढ़ते बच्चों की रचना बहुत बढ़िया हो गई है। उनमें ललित कला को लेकर और भी रुचि जाग्रत हो गई है।

आर्यवर्द्धन ने पूछा कि अध्यापक होने के साथ आप एक हाउस मास्टर होना, मुझे कैसा लगता है तो मैं यादों के गलियारों में कहीं बहुत पीछे की ओर चला जाता हूँ! मुझे महादजी सदन का हाउस मास्टर बने नौ साल हो चुके हैं। मुझे शुरुआत में कभी भी इस स्कूल में हाउस मास्टर की पोस्ट नहीं चाहिए थी और मुझे पहले भी दो बार हाउस मास्टर बनने का प्रस्ताव मिला था, लेकिन मैंने उसे अस्वीकार कर दिया था क्योंकि फिर मैं चित्रकारी को समय नहीं दे पाता। लेकिन फिर शमीक सर थे जो कि उस समय स्कूल के हैड मास्टर थे। उन्होंने मुझे मनाया। और फिर में हाउस मास्टर बन गया।

हाउस मास्टर बनने के बाद मैंने बच्चों से और बच्चों को मुझसे बहुत कुछ सीखने को मिला। मैं बच्चों से उतनी ही बात करता हूँ, जितनी मुझे करनी चाहिए और ज्यादा कठोर नहीं रहता। लेकिन मुझे बदतमीजी नहीं पसंद तो मैं वो चीज कभी भी सहन नहीं करता हूँ। मेरे बच्चे इस बात का सहयोग भी करते हैं। चाहे वो सीनियर-जूनियर का रिश्ता हो या फिर टीचर और बच्चों का। मुझे हाउस मास्टर बनने के बाद ऐसी बहुत-सी चीजें सीखने को मिलीं।

मित्रता की बात करें तो विद्यालय में इतने सालों में मेरे बहुत से दोस्त बने। चाहे वो मेरे से बहुत छोटे हों या बड़े। मैं किसी भी शिक्षक में, सीनियर-जूनियर नहीं देखता। मेरे लिए सब एक बराबर हैं और ये सारे लोग मेरा परिवार हैं। मैं वैसे तो कोलकाता से हूँ और वो ग्वालियर से काफी दूर भी पड़ जाता है। लेकिन कैसे-न-कैसे करके चला ही जाता हूँ। छोटी छुट्टियों में घर नहीं जाता, यहीं स्कूल में रहता हूँ। लेकिन जब भी कोलकाता जाता हूँ तो मेरे थोड़े दिन तो बिल्कुल भी मन नहीं लगता। यहाँ जैसा सुकून और शांति कहीं और जगह नहीं मिल सकती। लेकिन मेरा मालिक जाना भी जरूरी है क्योंकि मेरे रिश्तेदार और जानने वाले लोग भी वहाँ रहते हैं।

आर्यवर्द्धन का ये सवाल बड़ा ही रोचक है कि क्या मैं एक नास्तिक हूँ या फिर मैं भगवान की व्यवस्था नहीं मानता! छात्र हर चीज को बारीकी से देखते हैं। मैं अपने आप को नास्तिक तो नहीं बोलना चाहूँगा, मगर मैं भगवान से ज्यादा इंसानियत को मानता हूँ, क्योंकि एक इंसान को एक अच्छा इंसान बनाने के लिए इंसानियत बहुत जरूरी है। आप पूछते हैं कि मैं हर एक चीज को प्रकृति से जोड़ करके क्यों देखता हूँ। मैं ऐसा इसलिए करता हूँ क्योंकि हम सब प्रकृति से ही बने हैं और इसी में एक दिन खत्म भी हो जाएँगे। जैसा हम इंसानों को महसूस हो रहा है, वैसा ही हमारी प्रकृति में भी हो रहा है।

बच्चों को एक ही बात कहना चाहूँगा कि सबको ईमानदार रहना चाहिए। अपनी और दूसरे की गरिमा बनाकर रखनी चाहिए। सबके साथ इज्जत से पेश आना चाहिए। आगे स्कूल में जितने भी कलाकार बच्चे आएँ तो सिर्फ चित्रकारी ही नहीं सभी को समय का पाबंद और अनुशासित रहना चाहिए। सारे बच्चों को ये चार बात हमेशा याद रखनी चाहिए अगर उन्हें जिंदगी में सफल होना है तो- ईमानदारी, गरिमामय जीवन, समयनिष्ठ होना, अनुशासन। सबसे बड़ी बात, पर्यावरण को भी आगे आने वाली पीढ़ियों के लिए बचाना चाहिए!

रिचर्ड से सिमरजोत की बातचीत

सिमरजोत- हमारे विद्यालय के बारे में आपकी पहली धारणा क्या है?

रिचर्ड-ये स्कूल कहाँ है? यहाँ कौन-कौन होंगे? पता नहीं था कि स्कूल कैसा दिखता है? और क्या मैं यहाँ सकुशल रह पाऊँगा? केवल यही बातें सोच सकता था, जब मैं इस महान संस्थान की दीवारों में प्रवेश कर रहा था। शिक्षकों और छात्रें दोनों का परस्पर सहायता का स्वभाव, स्वागत करने वाला भाव और स्वयं और दूसरों की देखभाल करने की भावना से मेरी चिंताओं का समाधान हो गयाद्य

सिमरजोत-आपके स्कूल और हमारे स्कूल में क्या अंतर है?

रिचर्ड-मेरे अतीत की तुलना में आपके विद्यालय में विभिन्न प्रकार के खेल मौजूद हैं। मेरे स्कूल में कक्षाएँ सुबह साढ़े आठ (८:३०) बजे से दोपहर तीन बजकर चालीस मिनिट तक चलती हैं। स्कूल सोमवार से शुक्रवार तक चलता हैं। स्कूल के बाद हम कैजुअल कपड़े (घर के कपड़े) पहनते थे। छात्र-प्रतिनिधि और छात्र-प्रतिनिधि परिषद् दोनों ही मतदान के माध्यम से चुने जाते हैं।

सिमरजोत-आप अन्य विद्यार्थियों के साथ अपने संबंध को कैसे बयाँ करेंगे?

रिचर्ड-मुझे कहना होगा कि मेरा यहाँ प्रवास सफलता में, लगभग सत्तर प्रतिशत योगदान, यहाँ के अधिकांश छात्रों के भीतर मौजूद अद्भुत मूल्यों के कारण है। इन छात्रों की सहायता करने की इच्छा-शक्ति मेरी कल्पना के परे है।

सिरमजोत-चूँकि आप रानोजी में हैं, आप अपने इस सदन के बारे में क्या महसूस करते हैं?

रिचर्ड-राणोजी हाउस के बारे में मेरी भावनाएँ शब्दों में व्यक्त नहीं की जा सकतीं। इस सदन ने मुझे अपनी समस्त क्षमताओं को प्रदर्शित करने का अवसर दिया, जिसके लिए मैं बहुत आभारी हूँ। लोग हमेशा मेरे साथ थे और सहायता के लिए तैयार थे। राणोजी हाउस मेरे आनंद, प्रसन्नता और सिंधिया स्कूल में सार्थक प्रवास की रीढ़ बना रहा है।

सिमरजोत-आपके अनुसार स्कूल में सबसे दिलचस्प चीज क्या थी?

रिचर्ड- यहाँ की अधिकांश हर बात के पीछे एक इतिहास है। छात्र-प्रतिनिधि का और छात्रों में अलग करना बहुत आसान है।

सिमरजोत- आपका रुझान खेलों की ओर अधिक दिखता है, तो हमारे स्कूली खेलों के बारे में आपका क्या विचार है? क्या आपको यह पसंद है?

रिचर्ड-इस बात के अलावा कि खेल मनोरंजन का एक रूप है, मेरा मानना है कि यह स्वास्थ्य को बढ़ावा देने का एक तरीका भी है। मुझे यह बात पसंद है कि स्कूल के कार्यक्रम में सुबह की कसरत को सम्मिलित किया गया है। इससे व्यक्ति को हर समय चुस्त और मजबूत बने रहने में मदद मिलेगी। मुझे यह बात भी पसंद है कि स्कूल की चहारदीवारी में सभी प्रतिभाओं और कौशलों को निखारने के संसाधन उपलब्ध हैं। बहुत सारी खेल गतिविधियाँ आयोजित की जाती हैं।

सिमरजोत-आपको लगता है कि आपने यहाँ, अपने दोस्तों या शिक्षकों से कौन से मूल्य सीखे हैं?

रिचर्ड- अज्ञान को शर्मिंदा करने की क्षमता, स्वतंत्र जीवन जीना, समय प्रबंधन, आपसी विचार-विनियमन कौशल, स्वयं और दूसरों के प्रति सम्मान की भावना यहाँ की अद्भुत बातें हैं जो मैं सीखकर जा रहा हूँ!

महाकवि सम्मेलन - एक रिपोर्ट

५ सितंबर २०२३ को हमारे विद्यालय, सिंधिया स्कूल ने राष्ट्रीय शिक्षक दिवस के शुभ दिवस पर एक महाकवि सम्मेलन आयोजित किया था। इसमें हमारे पास भारत देश के सर्वश्रेष्ठ कवि आए जिनकी प्रस्तुति शब्दो में बयां नही करी जा सकती । इन्हे हमारे प्राचार्य महोदय ने पंच-रत्न कहकर संबोधित किया था। इन पाँचों महा कवियों की पहचान कुछ इस प्रकार है।

पहले श्री विष्णु सक्सेना जी। यह प्रेम और भावनाओं के गायक है। वे माननीय भावो को शब्दों मे प्रकट करे में सकुशल है। वे ८० वर्षो से मंच कार्यक्रम करते आए है । वे कई बार टेलीविजन में हिस्सा ले चुके है इन्होंने लाल किले पर भी अनेकों बार अपना काव्य पाठ किया है दूसरे श्री विनीत चौहान जी। यह वीर रस के महान कवि है। इनका काव्य पाठ उर्जा से भरपूर होता है जैसे हम किसी उनी कह लप्टों को बढता हुआ देखते है । इन्होने पूरी सभा को पहले तो शोर्य से भर दिया परंतु अंत में एक प्रश्न से साथ छोड़ दिया कि क्या हमारे देश के पुरूष सचमुच उन्नति की राह पर है ? क्या हमारा देश अब वास्तविकता में स्वयं को कम विजेता कह पाएगा जब समक्ष प्रस्तुत थे वह ये श्री राजकोशिक जी । तीसरे महाकवि जो हमारे विदेशों में कई कवि सम्मेलन आयोजित किए है । इनकी कविताओं में आमतौर पर हमें सामाजिक और पार्यवारिक रिश्तों का भाव रहता है । दैनिक जागरण अध्यापकों को समर्पित किए फिर उन्होंने श्री दिनेश रघुवंशी जी का जिक्र करते हुए अपनी अगली पंक्तियाँ समर्पित की। और उनके कोई भी शेर की तुलना शब्दों से करना हमारी सीमाओं में तो कही नहीं जाती है। चौथे महाकवि के अत्यंत कुशल कवि है इन्हे देश भर के कवि सम्मेलनो में आंमत्रित किया जाता है और अंत में हमारे पास आए श्री रोहित शर्मा जी । इन्होने वर्षो से अपनी जनता का मनोरंजन करने का शुभ कार्य किया है। बीच में हमारे प्रिय अध्यापक, मनोज मिश्रा जी ने भी अपने द्वारा लिखित कविता को हमारे समक्ष प्रस्तुत कर दिखाया जोकि चौकाने वाली बात नही थी, बहुत खूबसूरत थी। और फिर हमें जो सुंदर वंदना सुनने को मिली जैसी हमें शायद ही कभी और सुनने को भी मिलेगी।

जो मेरे हृदय के बहुत करीब है क्योकि यह हमें हमारी भाषा भाव और हमारी संस्कृति के बारे मे बहुत कुछ बता जाती है । जैसे कि कवि विनीत चौहान जी की कविता में हमें हमारी नारी देवी होती है और उनके वीर भाव की कविताओं ने हमारा सिर गर्व से ऊपर कर दिया ।

और अगर हम महान प्रस्तुतिओं की बात कर ही रहे हैं तो हम रोहित शर्मा जी के चुटकुलों को तो भूल ही नही सकते हैं । जिन्होने हमें गुदगुदाकर ही रख दिया । परंतु इन सब को छोड कर हमें इस आयोजन से बहुत कुछ सीखने को भी मिला । उसके बोलने के अंदाज और अपनी बातों को कविता के रूप में रखने के तरीके सचमुच बहुत प्रभावशाली थे।

पानी

हमारे जीवन में सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण चीजों में से सबसे अनोखी चीज है पानी। इसका उपयोग खाना बनाने में, नहाने के लिए कपड़े धोने में और उनके कामों में इस्तेमाल होता है।

हमारी पूरी धरती पर ९० प्रतिशत पानी है और बाकी की जमीन है। कहा जाता है पानी सबसे अच्छी औषधि होती है, किसी भी बीमारी कीद्यहमारी टेक्नोलॉजी इतनी आगे बढ़ गई है, कि अब हम पानी से बिजली भी बना सकते हैं।

इतना ही नहीं पानी हमें खेती में भी मदद करता है और जमीन को सूखने से बचाता है। हमारी धरती पर इतना ज्यादा पानी है कि हमने इससे कई भागों में बाँटा है, उन भागों को हम समुद्र कहते हैं। हमारी दुनिया में पता नहीं कितने राज हैं जिनमें एक पानी भी है!

सिंधिया स्कूल के सदनः इतिहास की झलक

सिंधिया स्कूल में कुल १२ सदन हैं। प्रत्येक का अपना अनूठा नाम, रंग, ध्येय वाक्य और निवास के लिए एक ऐतिहासिक इमारत होती है। हर सदन का नाम मराठा वंश के महावीरों के नाम पर रखा गया है, उनमें से कुछ का संबंध सीधे सिंधिया राजपरिवार से है। ये सभी सदन छात्रों को एक घर जैसा माहौल प्रदान करते हैं जहाँ वे अपनी शिक्षा और समग्र विकास पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं।

प्रत्येक सदन का प्रभारी एक मुखिया होता है, जिसे हाउस मास्टर कहते हैं। सदन प्रमुख छात्रों के लिए मार्गदर्शक और सलाहकार के रूप में कार्य करता है। वे छात्रों के सर्वांगीण विकास पर ध्यान केंद्रित करते हैं और उन्हें उनकी शैक्षणिक, खेल और सांस्कृतिक गतिविधियों में सफल होने में मदद करते हैं।

जयाजी सदन

जयाजी सदन का नाम महामहिम महाराजा जयाजीराव सिंधिया के सम्मान में रखा गया है। विद्यालय के संस्थापक महाराजा माधवराव जयाजीराव सिंधिया (प्रथम) के पिता थे।

जयाजी सदन का आदर्श वाक्य है- ''**संपदम दैवीम अभिजातो असि**'', जिसका अर्थ है कि हम सभी दैवी संपदा लेकर पैदा हुए हैं।

महामहिम महाराजा जयाजीराव सिंधिया

उथल-पुथल की लंबी अवधि के बाद, महामहिम महाराजा जयाजीराव सिंधिया ने ग्वालियर राज्य को स्थिरता प्रदान की। जयाजीराव सिंधिया ने १९ वर्ष की छोटी उम्र से ही ग्वालियर राज्य का आधुनिकीकरण शुरू कर दिया था। उन्होंने कई नई इमारतों का निर्माण किया। कोटेश्वर मंदिर का पुनर्निर्माण किया, और ग्वालियर किले की चारदीवारी के पुनर्निर्माण के लिए १५ लाख रुपये का दान दिया और मान मंदिर, गुजरी महल और जौहर कुंड के टूटे हुए हिस्से। ठीक करवाये।

राणोजी सदन

रानोजी सदन का नाम राणोजी शिंदे के नाम पर रखा गया है। रानोजी वे मराठा सरदार थे जिनके नेतृत्व में मालवा विजय के बाद सिंधिया वंश की संस्थापना हुई।

सदन का आदर्श वाक्य ''साहसे श्री प्रतिवसति'' है जिसका अर्थ है 'सहास में लक्ष्मी का वास होता है'

राणोजी शिंदे

राणोजी शिंदे एक प्राचीन क्षत्रिय परिवार से आते थे। १७२२ में राणोजी को मालवा जाने वाली मराठा सेना का सेनापति बनाया गया। १७३१ में मराठों द्वारा मालवा पर विजय प्राप्त करने के बाद सिंधिया राजवंश की शुरुआत हुई, जिसमें शिंदे को नए अधिग्रहीत क्षेत्र के राजस्व का ३०% दिया गया। और महामहिम महाराजा राणोजीराव शिंदे ने उज्जैन को अपने मुख्यालय के रूप में स्थापित किया।

महादजी सदन

इस सदन का नाम महावीर एवं महायोद्धा महादजी शिंदे के नाम पर है जो कि राणोजी शिंदे के पुत्र थे। इस सदन का आदर्श वाक्य है ''वीर भोग्य वसुन्धरा, वसुन्धरा भोग्य वीर'' अर्थात् वीर व्यक्ति ही धरती के सुखों का स्वामी होता है, और धरती भी वीरों को ही आश्रय देती है।

महादजी सदन

दुर्दम्य मराठा महायोद्धा महादजी शिंदे, राणोजी शिंदे की राजपूत पत्नी के पुत्र थे। उन्होंने केवल दस वर्ष की आयु से ही लड़ाइयों में भाग लिया और १७४५ से १७६१ के बीच महादजी शिंदे ने लगभग ५० युद्ध लड़े। वह पानीपत की तीसरी लड़ाई की पराजय के बाद मराठा शक्ति को फिर से संगठित करने के वाले राणोजी के एकमात्र जीवित वंशज थे, जो उस युद्ध के मैदान से चमत्कारिक ढंग से बच निकले थे। सन् १७६५ में महादजी शिंदे ने गोहद के जाट राजा से ग्वालियर छीन लिया। अगले कुछ वर्षों में उसने एक साम्राज्य बनाया जो राजस्थान से बंगाल की खाड़ी तक फैला हुआ था। फरवरी १७९४ में पुणे के वनौरी में महादजी शिंदे की मृत्यु हो गई। उनके भाई तुकोजी शिंदे के पोते और उनके भतीजे आनंदराव के बेटे दौलतराव शिंदे उनके उत्तराधिकारी बने।

जीवाजी सदन

इस सदन का नाम सिंधिया स्कूल के संस्थापक महाराजा माधवराव जयाजी राव सिंधिया (प्रथम) के पुत्र श्रीमंत महाराजा जीवाजीराव माधवराव सिंधिया के नाम पर अंकित किया गया।

''गुणाः पूजास्थानं'' सदन का आदर्श वाक्य है। इसका अर्थ है कि गुण पूजा का स्थान है अर्थात गुणी व्यक्ति पूजनीय होता है, इसके लिए लिंग और आयु नहीं देखी जाती। पूर्ण उक्ति जिससे यह सूत्रवाक्य लिया गया है, वह

इस प्रकार है-''गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिङ्गं न च वयः''

महामहिम जीवाजीराव सिंधिया

महामहिम जीवाजीराव सिंधिया जब नौ वर्ष के थे, तब उनके पिता का निधन हो गया। उन्होंने अपने पिता की विरासत का पालन किया और किसानों के वित्तीय बोझ को दूर करने के लिए कई उपाय किए। महिलाओं और बच्चों के लिए शैक्षणिक संस्थान, पुस्तकालय और अस्पताल स्थापित किए। जीवाजीराव ने १९४७ में भारत की आजादी तक ग्वालियर पर शासन किया और वह भारतीय संघ में शामिल होने वाले पहले शासकों में से एक थे और उन्होंने अन्य शासकों के साथ एक समझौते पर हस्ताक्षर किए जिसके द्वारा ग्वालियर को रियासतों के साथ विलय कर भारत संघ के भीतर मध्य भारत का नया भारतीय राज्य बना दिया गया।

माधव सदन

इस सदन का नाम महामहिम महाराजा माधवराव जयाजीराव सिंधिया (प्रथम) के सम्मान में रखा गया है।

''आप जिस बात के लिए खड़े हैं, उसमें साहसी बनें'' यह सदन का आदर्श वाक्य है।

महामहिम महाराजा माधवराव जयाजीराव सिंधिया (प्रथम)

महामहिम महाराजा माधवराव सिंधिया को माधव महाराजा के नाम से भी जाना जाता है। १८९४ में उनके सत्ता संभालने

से पहले, राज्य काउंसिल ऑफ रीजेंसी द्वारा शासित था। माधवराव सिंधिया प्रथम के नेतृत्व में ऐसे निर्णय लिए गये जो प्रगतिशील और लोकतांत्रिक सोच को दर्शाते हैं। उन्होंने पंचायत बोर्ड बनाए और सरकार की कार्यकारी और न्यायिक शाखाओं को अलग कर दिया। उन्होंने अपने व्यक्तिगत वित्त को राज्य से अलग रखकर, अपने प्रिवी पर्स को राज्य के राजस्व का केवल २% निर्धारित करके सभी को चौंका दिया।

शिवाजी सदन

इस सदन का नाम वीर बहादुर महायोद्धा छत्रपति शिवाजी राजे भोंसले महाराज के नाम पर है, जिन्होंने मराठा साम्राज्य स्थापित किया और बाद में इसका विस्तार पूरे भारतवर्ष में हुआ और आक्रान्ताओं की जड़ें मिटा दीं।

इस सदन का आदर्श वाक्य है, ''**गुणाः पूजास्थानं**''! अर्थात गुणी व्यक्ति पूजनीय होता है

शिवाजी, जिन्हें छत्रपति शिवाजी महाराज के नाम से भी जाना जाता है। छत्रपति शिवाजी राजे भारतवर्ष के एक भोंसले मराठा सैन्य राजा थे। मराठा

साम्राज्य की स्थापना एक ऐसे क्षेत्र में हुई थी, जिसे शिवाजी ने बीजापुर की ढहती आदिलशाही सल्तनत से बनाया था। रायगढ़ में, उन्हें १६७४ में अपने क्षेत्र के छत्रपति का पद देते हुए एक आधिकारिक मुकुट प्राप्त हुआ। शिवाजी ने एक अच्छी तरह से प्रशिक्षित सेना और संगठित प्रशासनिक संस्थानों की सहायता से एक सक्षम और दूरदर्शी नागरिक सरकार का निर्माण किया।

दौलत सदन

इस सदन का नाम महामहिम महाराजा दौलतराव सिंधिया के नाम पर प्रसिद्ध है। ये महादजी शिंदे के चचेरे भाई आनंदराव के पुत्र थे, जिन्हें आनंदराव ने अपने उत्तराधिकारी के रूप में गोद लिया था। महादजी शिंदे के अवसान के बाद ये मराठा साम्राज्य के उत्तराधिकारी बने।

इस सदन का आदर्श वाक्य है ''आरोह तमसो ज्योतिः।'' अर्थात् अंधकार से ऊपर बढ़कर प्रकाश की ओर!

महामहिम महाराजा दौलतराव सिंधिया

महामहिम महाराजा दौलतराव सिंधिया, महादजी शिंदे के चचेरे भाई आनंदराव के पुत्र थे, जिन्हें आनंदराव ने अपने उत्तराधिकारी के रूप में गोद लिया था। दौलतराव सिंधिया ने राजधानी को उज्जैन से ग्वालियर स्थानांतरित कर लिया था। उन्होंने लॉर्ड वेलेस्ली के साथ सहायक-संधि पर हस्ताक्षर किये। १८१८ के तीसरे आंग्ल मराठा युद्ध में अँग्रेजों द्वारा सहयोगी मराठा राज्यों की हार के बाद, पूर्व मराठा साम्राज्य का अधिकांश हिस्सा ब्रिटिश भारत द्वारा समाहित कर लिया गया था। दौलतराव सिंधिया को ब्रिटिश भारत के भीतर एक रियासत के रूप में स्थानीय स्वायत्तता स्वीकार करने और शिवपुरी, नरवर और मालवा के कुछ हिस्सों के बदले में अजमेर को अंग्रेजों को देने के लिए मजबूर किया गया था। दौलतराव की मृत्यु के बाद, महारानी बैजा बाई ने साम्राज्य पर शासन किया और ब्रिटिश सत्ता से इसकी रक्षा की, जब तक कि गोद लिए गए बच्चे जनकोजीराव ने कार्यभार नहीं सँभाला। दौलतराव सिंधिया ने महाराज बाड़ा में गोरखी महल और मंदिर का निर्माण कराया।

जयप्पा सदन

इस सदन का नाम राणोजी शिंदे के सबसे बड़े बेटे जयप्पा शिंदे के नाम पर है।

इस सदन का आदर्श वाक्य है ''विद्या ददाति विनयम्'' अर्थात विद्या से विनम्रता आती है। जिस श्लोक से यह उक्ति ली गई है वह इस प्रकार है- विद्या ददाति विनयम्, विनयाद्याति पात्रताम् पात्रत्वाद्धनम्आप्नोति, धनाद्धर्मम् ततः सुखम्।

मराठा जनरल जयप्पा शिंदे

राणोजी शिंदे के सबसे बड़े बेटे जयप्पा शिंदे एक मराठा जनरल थे और उन्होंने पेशवा के अधीन कई सैन्य अभियान लड़े। उसने मराठा क्षेत्र का विस्तार यमुना नदी तक किया। उस समय मराठा अक्सर राजस्थान के राज्यों के आंतरिक मामलों में व्यस्त रहते थे। विशेषकर उत्तराधिकार की लड़ाइयों में। जयप्पा शिंदे ने राम सिंह से जुड़े ऐसे ही एक आंतरिक संघर्ष में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। जयप्पा की नागौर के निकट तवासेर में हत्या कर दी गई।

जनकोजी सदन

इस सदन का नाम जयप्पा शिंदे के पुत्र जनकोजी शिंदे (प्रथम) के नाम पर रखा गया है, जो कि एक बहादुर सेनानी थे। जनकोजी शिंदे ने पानीपत की तीसरी लड़ाई में भाग लिया था।

सदन का आदर्श वाक्य है ''आनो भद्राः क्रतवो!''अर्थात् सभी दिशाओं से नेक विचार मेरी ओर आएँ! यह मंत्र ऋग्वेद से लिया गया हैय पूरा मंत्र इस प्रकार है -आनो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासो अपरितासउद्भिदः। देवा नो यथा सदमिड्वृद्धे असन्नप्रायुवों रक्षितारो दिवे दिवेद्य।

जानकोजी शिंदे (प्रथम)

जयप्पा शिंदे के पुत्र जानकोजी शिंदे प्रथम एक बहादुर सेनानी थे। पानीपत की तीसरी लड़ाई में, जानकोजी शिंदे के नेतृत्व में मराठों ने अहमद शाह अब्दाली के रोहिल्ला सहयोगी नजीब खान पर हमला किया, जिससे उसे

रक्षात्मक लड़ाई लड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा। लेकिन लड़ाई ने एक मोड़ ले लिया, और हालाँकि ऐसा लग रहा था कि मराठा अफगानों पर विजयी होंगे। मगर मराठा सेना अंततः हार गई। नजीब खान के कहने पर जानकोजी शिंदे को बंदी बना लिया गया और फाँसी दे दी गई।

निमाजी सदन

इस सदन का नाम सदन कनेरखेड़ गाँव के पाटिल निमाजी शिंदे के नाम पर प्रसिद्ध है। श्रद्धेय निमाजी शिंदे सिंधिया राजवंश के एक दिग्गज पूर्वज थे।

इस सदन का आदर्श वाक्य है, ''विद्या ददाति विनयम्'' अर्थात् विद्या हमें विनय प्रदान करती है।

निमाजी शिंदे

निमाजी शिंदे कनेरखेड गांव के पाटिल थे, और सिंधिया राजवंश के एक दिग्गज पूर्वज थे। औरंगजेब के खिलाफ मराठों द्वारा लड़ी गई लड़ाई में उनके योगदान को श्रद्धा के साथ याद किया जाता है। सन् १७०४ में, उन्होंने मालवा में मुगल सेना पर हमला किया और मराठा योद्धाओं के बीच सम्मान का स्थान अर्जित किया, जिन्हें सामंत के नाम से जाना जाता था।

कनेरखेड़ सदन

इस सदन का नाम कनेरखेड़ नामक गाँव की स्मृति को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए रखा गया है, जहाँ सिंधिया

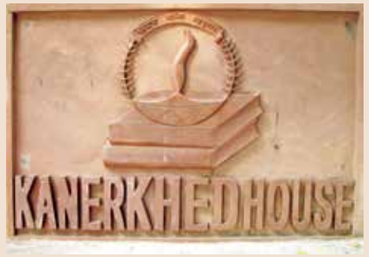

परिवार की जड़ें गहरे तक पैठी हुई थीं।

इस सदन का आदर्श वाक्य है, ''विद्या शांति सद्गुण''। अर्थात् सद्गुण विद्या से सुशोभित होते हैं!

कनेरखेड़ गाँव

सिंधिया परिवार की जड़ें महाराष्ट्र में सतारा से १६ मील पूर्व में कनेरखेड़ गाँव में पाई जाती हैं। आरंभिक सिंधिया १६वीं शताब्दी में पेशवा बालाजी विश्वनाथ द्वारा गठित मराठा सेना में शामिल हुए।

दत्ताजी सदन

इस सदन का नाम राणोजी के तीसरे बेटे दत्ताजीजी शिंदे के नाम पर रखा गया है। दत्ताजी शिंदे, जानकोजी के चाचा थे।

इस सदन का आदर्श वाक्य है ''सुयस्थ आत्मा जगत्स्थु''।

दत्ताजी शिंदे

दत्ताजी शिंदे राणोजी के तीसरे बेटे और जानकोजी के चाचा थे। जब जानकोजी बहुत छोटे थे तब उन्होंने एक रीजेंट के रूप में काम किया था। पानीपत की लड़ाई से कुछ समय पूर्व, सन् १७६० में बुराडी घाट पर नजीब खान के साथ लड़ाई में दत्ताजी की मौत हो गई थी।

जब वह युद्ध के मैदान में घायल हो गए थे, तो नजीब खान उनके पास आए और पूछा, ''क्यों पाटिल और भी लड़ोगे?''

उन्होंने कहा, ''बचेंगे तो और भी लड़ेंगे!''

यह मराठा सैनिकों के लिए एक बड़ी प्रेरणा थी, हालाँकि दत्ताजी मारे गए थे।

सिंधिया स्कूल, छात्रों के लिए एक दूसरे से जुड़ने और एकजुट होने के मंच के रूप में सदन को समायोजित करते हैं। सदन की गतिविधियों में खेल प्रतियोगिताएँ, सांस्कृतिक कार्यक्रम, सामाजिक सेवा कार्यक्रम आदि शामिल हैं। ये गतिविधियाँ छात्रों को अपनी प्रतिभा और क्षमताओं को प्रदर्शित करने और अपने व्यक्तित्व को विकसित करने का अवसर प्रदान करती हैं।

सिंधिया स्कूल के सभी सदन स्कूल के समग्र विकास और सफलता में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सभी सदन छात्रों को एक घर का वातावरण प्रदान करते हैं, जहाँ वे अपनी शिक्षा और समग्र विकास पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं। कह सकते हैं कि सदन वह उपवन है जहाँ सिंधिया स्कूल के पुष्प खिलते हैं!

विषय संकलन -लक्ष्य तुलसियान, कक्षा-आठवीं, माधव सदन

सम्पादन-

गणपत स्वरूप पाठक

लक्ष्य को पूरा करने के लिए कड़ी मेहनत कीजिए!

मुझे आज भी याद है,१० जुलाई २०२२ को मैंने सिंधिया स्कूल, यानि अपने घर में पहली बार कदम रखा था। आजकल कहीं भी वह चीज नहीं मिलती जो दुर्ग में आते ही मिली। जैसे ही मैं हाउस में घुसा मैंने नीले रंग का एक बोर्ड देखा जिसके ऊपर अँग्रेजी में लिखा था- ''बैस्ट इन स्टडीज''।

उसी दिन लक्ष्य ने अपना लक्ष्य बना लिया था, उस प्रतिभा-पटल पर अपना नाम देखने का! और कड़ी मेहनत के बाद वह पूरा भी हो गया। मैंने देखा संस्थापना दिवस के दिन आई हुई उपलब्धि पत्रिका में, कुछ लोग प्राचार्य महोदय के साथ बैठे थे। और आज मैं उस लक्ष्य को पूरा करने के लिए अपनी कलम से इस ओर बढ़ रहा हूँ। अपने लक्ष्य को पूरा करने के लिए कड़ी मेहनत कीजिए, तभी वह प्राप्त होगी।

लक्ष्य तुलसियान
कक्षा- आठवीं, माधव सदन

साइकिल का स्टंट

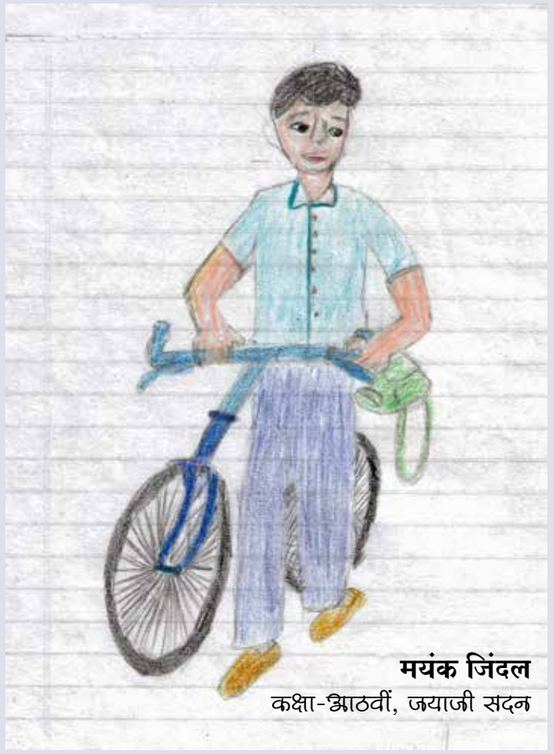

मयंक जिंदल
कक्षा-आठवीं, जयाजी सदन

ये उस दिन के बात है, जिस दिन मेरे पिताजी ने मेरे जन्मदिन पर मुझे मेरी साइकिल गिफ्ट की।

उस दिन, शाम को खेलने के बाद मैं घर गया, स्नान किया और नए कपड़े पहने। शाम को मुझे केक बराबर हिस्सों में काटकर अपने सगे-संबंधियों को खिलाना था।

साँझ में, मेरे पिताजी घर आते हैं। उनके हाथों में केक का डिब्बा और पैटीस का डिब्बा था। केक बाँटने के बाद, मैंने अपना उपहार माँगा। मम्मी ने चॉकलेट दीं। पापा ने मेरी आँखें बंद कीं और बाहर ले गये। जैसे ही उन्होंने मेरी आँखों से हाथ हटाया, मैंने अपनी आँखों के सामने चमचमाती साइकिल देखी। जिसके नीले रंग पर तो मैं मोहित हो गया और तुरंत पिताजी को गले से लगा लेता हूँ! बहुत सारा धन्यवाद देता हूँ!

मेरी साइकिल को देखते ही मुझे मेरी साइकिल से प्यार हो गया! फिर पूरे दिन में उसमें घूमते रहा।

फिर एक दिन मैंने अपने मोबाइल में एक वीडियो देखी, जिसमें एक आदमी अपनी साइकिल से स्टंट कर रहा था। उसे देखकर मुझे भी वैसा ही करने का मन हो गया।

फिर उसे लेकर मैं उसे रोड पर निकलता हूँ ऐसा करने की कोशिश में मैं गिर जाता हूँ। मेरी साइकिल एक गाड़ी के नीचे आ जाती है और टूट जाती है।

फिर मुझे बहुत दुःख हुआ! लेकिन, मेरे दादाजी ने मुझे नई साइकिल दी और फिर वैसा न करने की सीख दी। दुख की बात सुख में बदल गई।

आदित्य कुमार सिंह
कक्षा-आठवीं, माधव सदन

खोया हुआ साल !

श्री विजय प्रकाश शर्मा, क्रिकेट कोच, रणजी खिलाड़ी

प्रकृति आपके संकट को टालने के लिए बहुत पहले से तैयारी करने लगती है।

जब भी कभी आपके साथ बुरा हो, कोई चोट लगे या घाटा उठाना पड़े तो बहुत दुखी नहीं होना चाहिए क्योंकि यही आगे बड़ा काम आता है।

मैं कुछ अजीब ढंग की अच्छी सोच वाला इंसान हूँ। मेरे साथ कभी ऐसा कुछ हुआ तो मैंने अपने आपसे यही कहा- कम पर गुजर गई। या कभी कहा-बुरा टाइम था, आकर निकल गया।

यही कोई छह-सात साल पहले की बात है। मेरा सिर भन्ना गया। बड़ी तकलीफ हुई। डॉक्टर साहब को दिखाया। शुरूआती लक्षणों से डॉक्टर समझ गए किये एक ब्रेन स्ट्रोक है। एक-एक करके कई जाँचें हुई। सभी जाँच निष्फल रहीं। सब कुछ ठीक। डॉक्टर से पूछा तो उन्होंने बताया कि ब्रेन- स्ट्रोक था। क्लॉट (रक्त का थक्का) आया और वाश (थुल) होकर चला गया। डॉक्टर ने सावधानी वश ''इकोस्प्रिन'' नामक गोली खाने की सलाह दी। बोले- रोज खाओ। आगे कोई समस्या नहीं होगी। उसके बाद इकोस्प्रिन मेरे दिनचर्या का हिस्सा बन गयी।

फिर वैसे ही जिन्दगी चलने लगी। कभी अपना बैट तो दूसरे की गेंद। कभी अपनी गेंद तो दूसरे का विकेट। क्रिकेट से समय बचता तो मित्रों रिश्तेदारों को ताना-बाना रचता। और फिर बिल्कुल सुई की नोक के बराबर समय, अपनों के लिए रह जाता। अपने इसी में खुश रहते और मुझे प्रसन्न करते रहते।

फिर साल २०२० आया और अपने साथ एक पैगाम लाया। लिखा तो न था, कुछ मगर, बस बेचैनी बढ़ा दी। सभी ओर से सवाल, मगर जवाब कहीं से नहीं। २४ मार्च को २१ दिन की तालेबंदी की घोषणा हो गई। एक खिलाड़ी करे तो क्या करे? घर की छत पर टहलना शुरू कर दिया। सब्जी और सामान की जरूरत पड़ती तो बाहर निकलना पड़ता।

मजदूर आदि का अपने-अपने गाँव लौटने का सिलसिला शुरू हो गया। कई ऐसे लोग थे जिनका न तो कोई ठौर था और न ही कोई काम का ठिकाना। ऐसे दोस्तों की मुसीबत दूर करने के लिए हम सब मित्रों ने मिलकर रसोई चलाई। जिनके भोजन पानी का इंतजाम न था, उनका दोनों वक्त की रोटी की व्यवस्था करते। मजदूर को खाने के पैकेट और पानी की बोतल पहुँचाते।

ऐसे में, न जाने कब मैं इस ''अदृश्य'' विषाणु का शिकार बन गया। मुझे १०३ बुखार था। फिर बेटे को भी बुखार आ गया। माधव डिस्पेंसरी जाकर जाँच करवाई। बेटे को, विषाणु का शिकार, पाया गया, मगर मैं इससे मुक्त निकला। मुझे विश्वास नहीं हुआ, क्योंकि बुखार सबसे पहले मुझे आया था। निजी जाँच में, मैं भी विषाक्त पाया गया। तब कल्याण अस्पताल जाकर भर्ती हुआ।

अनेक शुभचिन्तिकों, नाते -रिश्तेदारों ने अस्पताल प्रबंधन पर दबाव डालने की भी कोशिश की, कि मुझे कुछ नहीं होना चाहिए। जैसे-तैसे परिजनों को समझाया। चिकित्सक राघवेंद्र शर्मा मेरे लिए भगवान से कम नहीं थे। इलाज भली-भाँति शुरू कर दिया। इसी बीच मेरे भैया को इस भयानक बीमारी ने अपने शिकंजे में ले लिया। पूरे परिवार में आतंक पसर गया। भगवान की कृपा से छह दिन में, भैया और मेरा बेटा स्वस्थ होकर घर लौट गये।

दवाइयों का आलम था कि दिन में १२ इंजेक्शन लगाते और ताकत बनाए रखने के लिए चार स्टेरॉयड इंजेक्शन भी देते। इस कारण डायबिटीज हो गई और शर्करा का स्तर ६०० तक छू गया। ऑक्सीजन नहीं ले पा रहा था। फेंफड़े ८५ प्रतिशत संक्रमित हो चुके थे। अपनों के फोन आते। कुछ लोग दिलासा देते तो कुछ अनहोनी का रोना लेकर बैठ जाते। ऐसे लोगों का फोन उठाना ही बंद कर दिया।

इधर जीवन जीने की मशक्कत थी, उधर नित बिगड़ते हालातों की खबरों ने निराशा का वातावरण बना दिया था। पहले लगता था जो हमारा खास है, अब लगने लगा कि कोई अपना नहीं है। जिसे भी कोविड-१९ ने ग्रसा, उसे पता चल गया कि कौन अपना है और कौन पराया है।

एक बात और मैं महसूस करता हूँ कि डॉक्टर यदि सच्ची लगन से कोशिश करे तो वह काल के मुँह से छीनकर आपके प्राण ले आएगा। मेरे लिए डॉक्टर राघवेंद्र शर्मा भगवान से कम नहीं थे। मैंने एक दिन उन से पूछा था- डॉक्टर अपने घर सफेद पॉलीथिन में जाऊँगा या पैदल? मेरी जान बचाने के लिए उन्होंने ग्वालियर में पहला रैम्डिसिवर इंजेक्शन मँगवाया और मुझ पर परीक्षण किया। समय-समय पर डिडाइमर टेस्ट लेते थे।

एक दिन उत्सुकतावश पूछा- ये टेस्ट क्यों करते हैं आप बार-बार ?

डॉक्टर ने टेस्ट की तैयारी करते हुए उत्तर दिया-खून कितना गाढ़ा हो रहा है यह जाँचने के लिए।

तब मैंने तुरंत टोका- मेरा खून गाढ़ा हो ही नहीं सकता।

डॉक्टर ने आश्चर्य और अविश्वास से कहा - क्यों नहीं हो सकता?

तब मैंने कहा- पिछले पाँच साल से इकोस्प्रिन ले रहा हूँ।

डॉक्टर ने तब कहा- इकोस्प्रिन!!! इकोस्प्रिन ने आपको बचा लिया, वरना पिच्यासी प्रतिशत खराब फेफड़ों से चमत्कार की उम्मीद नहीं थी।

उस दिन जीवन को नयी संजीवनी मिली कि अब मुझे कुछ नहीं होगा। धीरे -धीरे स्थिति बेहतर होने लगी। कोरोना विषाणु से ग्रस्त होने और उससे मुक्त होने की कहानी में महत्वपूर्ण मेरी व्यथा नहीं है, बल्कि जो देखा और अनुभव किया वह महत्वपूर्ण है।

इस दौरान बड़े-बड़े नुकसान होते देखे। किसी ने पिता खोया, किसी ने माता। किसी ने भाई तो किसी ने बेटी। जैसे एक झोंका आया और सब कुछ खतम करके चला गया। कोई बीमारी होती या कोई बड़ा कारण होता तो मन में तसल्ली होती। मगर ये क्या था ?

इस दौरान जो भी इस महामारी का शिकार हुआ, उसे पता चल गया कि कौन अपना है, कौन पराया ? ये सब से बड़ी उपलब्धि है मेरी।

कुछ दिन के अंतर से जाँच की जाती थी। एक दिन देर रात (भर्ती होने के पन्द्रहवें) रिपोर्ट आयी और नतीजा ''नेगेटिव'' था, मगर मेरे लिए "पॉजिटिव" खबर थी।

उसी रात अपना थोड़ा-बहुत सामान बटोरा। अस्पताल से निकलकर अपनी गाड़ी उठाई और धीमे-धीमे चलाते हुए, घर पहुँच गया और चैन की साँस ली। मैंने अपना स्वतन्त्रता दिवस घर पर मनाया।

इसके बाद, समाज-सेवा के कार्यों में मेरा मन बहुत लगा। हमारे स्कूल में सभी अध्यापक बाहर नहीं निकल सकते थे, तो उस समय सभी का टीकाकरण करवाने में, मैं सहभागी रहा। जो भी मुझ से हो सकता था वो किया। जीवन जीने की छटपटाहट में जिसे मनचाही सहायता मिल जाये, उससे बढ़कर कुछ नहीं! बस यही मनचाही सहायता करने का मन करता है।

(जैसा कि उन्होंने सम्पादक को चर्चा में बताया।)

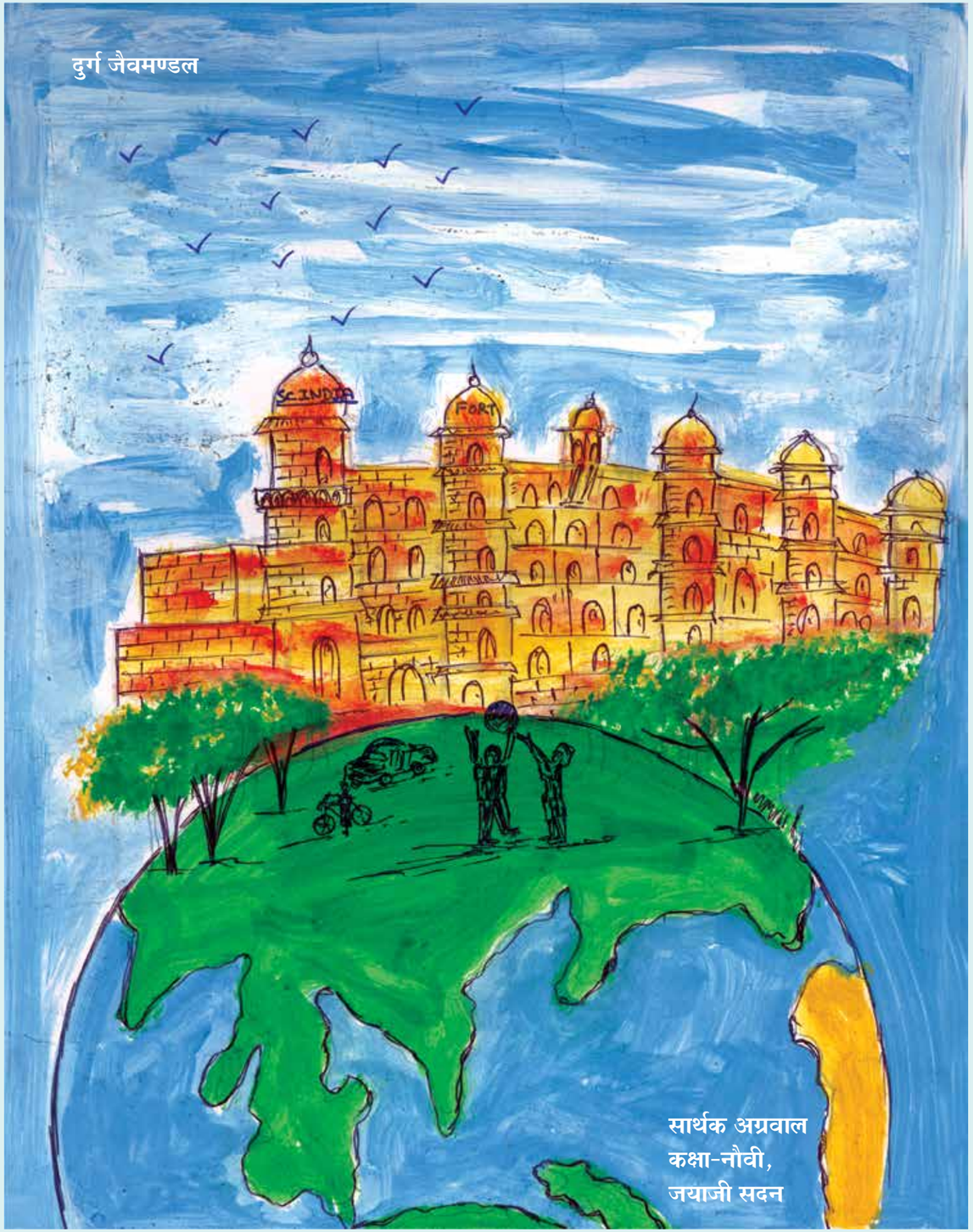

सार्थक अग्रवाल
कक्षा-नौवी,
जयाजी सदन

कान्हा की रोमांचक शैक्षणिक यात्रा

सन् २०२३ की २२ मार्च को रेलगाडी से हम जबलपुर के लिए निकले। सुबह हम जबलपुर पहुँचे। हम लोग होटल पोलोमेक्स में ठहरे थे। हमने भेड़ा घाट पर नाव की सवारी की और शिवजी की एक बहुत बड़ी, मूर्ति के दर्शन किये।

फिर नाश्ता करके हम लोग कान्हा के लिए रवाना हो गए। बहुत लम्बी यात्रा के बाद हम कान्हा पहुँचे और इन्फिनिटी रिसोर्ट में रुके। हमने बाघों के बारे में एक डाक्यूमेंट्री भी देखी।

अगले दिन हम चार बजे उठे और सफारी के लिए गए जहाँ हमें न बाघ दिखा न ही तेंदुआ। शाम को हमने बाँस की चीरों (खपच्ची) से चीजें बनाई और फिर रात में हम लोगों ने एक दूसरे से सवाल-जवाब किये। दिन में हम गाँव में घूमे और शाम को हम लोग दीये बनाने में जुट गए।

अगले दिन हम सफारी नहीं कर पाये इसलिए फिर हम वहाँ के गाँव वालों से मिलने के लिए निकल पड़े। हम ८ किलोमीटर दूर तक चले। रात में हम लोगों ने वहाँ का प्राचीन साँस्कृतिक -लोक नृत्य देखा।

फिर अगले दिन हम गोंदिया के लिए निकल पड़े, और वहाँ की ट्रेन से हम ग्वालियर के लिए रवाना हुए।

कान्हा में कुछ ज्ञानी श्रीमानों की वजह से मैंने बहुत सारी चीजें सीखी।

आदित्य कुमार सिंह
कक्षा-आठवीं
महादजी सदन

स्वतंत्रता दिवसः हर भारतीय की देशभक्ति की भावनाओं की अभिव्यक्ति

स्वतंत्रता दिवस एक ऐसा कार्यक्रम है जो प्रत्येक भारतीय की देशभक्ति की भावनाओं को सामने लाता है, यह कार्यक्रम पूरे देश में बड़े उत्साह के साथ मनाया जाता है और यहाँ तक कि सिंधिया स्कूल के लड़के भी इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए अपनी पूरी ताकत और ऊर्जा के साथ काम करते हैं।

प्रत्येक छात्र अपने सदन के लिए मार्चपास्ट (पथ संचलन) ट्रॉफी हासिल करने के लिए कड़ी मेहनत करता है, जो उस सदन को प्रदान की जाती है, जो १५ अगस्त को सर्वश्रेष्ठ परेड करता है। ऐसे आयोजन के लिए छात्र खुद को इस हुनर में पारंगत बनाने के लिए दिन-रात अभ्यास करते हैं।

प्रत्येक सदन के वरिष्ठ छात्र, अपने कनिष्ठों और नए आने वालों को ठीक से मार्च करना सीखने में मदद करते हैं। स्कूल के साथ-साथ अपने सदनों के लिए भी इस आयोजन को सफल बनाने के लिए, प्रत्येक दिन सभी सदन कम से कम ३ घंटे अभ्यास करते हैं।

प्रत्येक छात्र अभ्यास के दौरान थका हुआ और आलसी महसूस करता है, लेकिन जब वे १५ अगस्त को मुख्य अतिथि के सामने प्रदर्शन करते हैं, तो वे सभी अपनी उच्चतम क्षमता के साथ प्रदर्शन करते हैं और भारतीय स्वतंत्रता के इस महान आयोजन के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ देने का प्रयास करते हैं।

सदनों में अभ्यास बहुत अच्छी तरह से नहीं चल पाता है क्योंकि सभी छात्र दिनभर बहुत थका देने वाले अभ्यास के बाद इसे जल्द से जल्द समाप्त करना चाहते हैं। लेकिन मुख्य अवसर पर सभी इसे बड़े समन्वय के साथ करते हैं और अपने देश के लिए मार्च करने और अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करने में वास्तव में गर्व महसूस करते हैं। आखिरकार यह आयोजन छात्रों के समर्पण और छात्रों और शिक्षकों के समन्वय के कारण ही प्रत्येक वर्ष एक बड़ी सफलता बन जाता है।

साहिल किल्होर
कक्षा-दसवीं, जयप्पा सदन

दुर्योधन की गलती

महाभारत का युद्ध शेष होने को था, दुर्योधन अपने पैरों पर खड़े होने लायक नहीं था। भीम अपनी शक्ति और बल से ९९ कौरव भाइयों को मार चुका था और आखिरी और सबसे बड़े कौरव को मारने को था। तब दुर्योधन अपने प्राणों की भीख माँगते हुए श्रीकृष्ण और पाण्डु पुत्र भीम को पश्चात्ताप के वचन कहने लगा।

हे! वासुदेव! आज महाभारत के युद्ध के सोलहवें दिन, मैं यहाँ अकेले परास्त होने वाला हूँ। मैं, मेरे सारे भाई, मेरा प्रिय मित्र कर्ण, मेरे गुरु द्रोणाचार्य, मेरे प्रिय मामा शकुनी और हम सब के प्रिय भीष्म पितामह के साथ था, परंतु आज मै अकेले यहाँ परास्त हो चुका हूँ।

पूरे युद्ध के दौरान मेरी दो सबसे बड़ी गलतियाँ थीं। मेरी पहली गलती यह थी कि जब आपने मुझसे और अर्जुन से यह पूछा कि 'आप' चाहिए या 'नारायणी सेना। तब मैंने आपको न माँगकर नारायणी सेना को चुना, जिसकी वजह से आज मेरी पूरी सेना का विध्वंस हो चुका है और आज आप, निशस्त्र होते हुए भी मेरे सामने खड़े हैं।

सूरज कुमार अग्रवाला
कक्ष-नौवीं, महादजी सदन

रेख़्ता फाउण्डेशनः साहित्य की सृजनशील सेवा

रेख़्ता फाउण्डेशन स्थापना श्री संजीव सराफ ने की। श्री सराफ सिंधिया स्कूल के बहुत पुराने छात्र हैं, जिन्हें माधव सम्मान से नवाजा गया है। रेख़्ता एक गैर-लाभकारी संगठन है, जो उर्दू के संरक्षण और प्रशंसा के लिए काम कर रहा है, जो हमारे उप-महाद्वीप की संस्कृति और धरोहर का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। इस संगठन का मुख्य उद्देश्य उर्दू की साँस्कृतिक धरोहर को संरक्षित रखना और प्रोत्साहित करना है। रेख़्ता फाउंडेशन की वेबसाइट पर आपको कई उर्दू कविताएँ, शेरो-शायरी और पाठ प्राप्त होते हैं, और इस वेबसाइट का बड़ा योगदान सिंधिया स्कूल के पुराने छात्र संगठन सोबा से मिलता है। रेख़्ता फाउंडेशन उर्दू की भाषा, साहित्य, और कला को प्रमोट करने के लिए विभिन्न कार्यक्रम और परियोजनाएँ आयोजित करता है और इसमें सिंधिया स्कूल के पुराने छात्रें का महत्वपूर्ण सहयोग है।

रेख़्ता फाउंडेशन का यह महत्वपूर्ण कार्य हमारे साँस्कृतिक धरोहर को सजीव रखने और आगे बढ़ाने में सहायक हो रहा है।

सहायक हमारेः हमारे कर्णधार

वैसे तो सभी विद्यालय अपने आप में अलग होते है। सभी विद्यालय के सिखाने के तौर-तरीके भी अलग होते है। ऐसे ही सिंधिया स्कूल के वर्षो पुराने इतिहास में उसके विद्यार्थियों को शिक्षा देने में शिक्षकों का हाथ होता ही है, पर साथ में इन विद्यार्थियों के रहन-सहन और जिंदगी के बारे में सिखाने में हाथ हमारे भैयाओं का है। चाहे कुछ विद्यार्थी विद्यालय से पास आउट होकर उसी विद्यालय में शिक्षक के रूप में आ जाते हैं पर ये भैया वही रहते हैं जो पहले थे। तो आइए एक नजर डालते हैं ऐसे ही कुछ अनमोल रत्नों पर जैसे हमारे भाइयों पर जिनके नाम से हम सभी वाकिफ हैं।

सबसे पहले बात करते हैं थापा भैया की, वे अपने जीवन की शुरुआत से ही किले से जुड़े रहे हैं। उनका जन्म किले पर हुआ था। यह बातों के धनी हैं, इन्होंने अपनी पूरी जिंदगी हमारी सेवा में लगा दीय यह काफी लंबे समय से विद्यालय में है और पूरे दिल से ये अभी जयाजी सदन में है और इतने सालों के तजुरबे से अब वह जानते हैं, कि कौन-सा बच्चा कैसा है? थापा भैया बच्चों के साथ घुल-मिल जाते हैं। यह इसलिए कि इनके स्वभाव में एक 'बचपना' है।

अब बात करते हैं, विद्यालय के दूसरे रत्न पंडित जी की। यह वैसे तो गोल्फ कार्ट चलाते हैं और स्वास्थ्य केंद्र के लिए एम्बुलेंस चलाते हैं। कितना भी काम हो, हर समय मुस्कुराते रहते हैं। वह हमेशा शांत रहते हैं।

विद्यालय के हमारे तीसरे रत्न हैं श्री कृष्णपाल भैया हैं। इन्होंने सन् १९८४ में विद्यालय में सेवा करनी शुरू की थी। इन्होंने विद्यालय में लगभग ४० वर्ष तक सेवा की है। यह बताते हैं कि जब वह विद्यालय में आये थे तो उनको उस समय तनख्वाह में १५० रुपये मिलते थेय आज वे सभी प्रकार से सुखी हैं!

सिंधिया स्कूल के हमारे अगले रत्न है बंटी भैया। इनको यहाँ पर सेवा करते-करते वर्षो हो गए हैं, मगर काम में वही नया उत्साह और नई लगन है। यह भी बहुत घुल-मिल कर रहते हैं। बच्चों से यह कितनी भी बचने की कोशिश कर लें, पर बच्चे मिठाई की डबलिंग कर ही लेते हैं। इन्होंने यह भी देखा है कि यहाँ बच्चों का दिमाग किस तरीके से चलता है?

यह सभी सिर्फ कहने के नहीं, असली के रत्न हैं, जो हमारी और अपनी जिंदगी को बेहतर बनाने के लिए, इतनी मेहनत कर रहे हैं। सलाम है हमारा ऐसे लोगों को।

कृष अग्रवाल
कक्षा-नवमी, जयाजी सदन

यात्रा-वृत्तांत (तडोबा शैक्षणिक भ्रमण)

किसी जगह के बारे में जिन्दगी भर सुनने से अच्छा है कि एक बार उसे खुद जाकर देख लो।

यात्रा करना लगभग सबको ही पसंद होता है। एक व्यक्ति जब घूमने जाता है तो उसे कई अनूठे अनुभव प्राप्त होते है और यही अनुभव आगे और यात्राएँ करने के लिए प्रेरित करते है।

मेरा मानना है कि यात्रा करने पर हम सबसे ज्यादा सीखते हैं। कहा भी गया है कि किताब पढ़ने से जितना सीखते हैं, उससे हजार गुना ज्यादा हम यात्रा करके सीखते हैं। इस बात में कोई दो राय नहीं है कि जो जितना दुनिया को देखता है, वो उतना ज्यादा सीखता है। उपरोक्त धारणाओं को साकार करने के लिए २२ मार्च, २०२२ की शाम को ४ शिक्षक, ६३ छात्रों का एक दल तडोबा राष्ट्रीय उद्यान के लिए निकल पड़ा।

विद्यार्थियों का उत्साह चरम सीमा पर था। रात को आंध्र प्रदेश एक्सप्रेस से यात्र करने के बाद, अगले दिन सुबह नागपुर पहुँचे, जहाँ सोबा-नागपुर द्वारा सुबह के नाश्ते पर हमारा भव्य स्वागत किया गया। पूर्व छात्रों से मिलने के पश्चात एक चीज भी साफ हो गयी कि किसी भी यात्रा पर जब हम जाते हैं तो बड़ों का आशीर्वाद लेना बहुमूल्य होता है। इस आशीर्वाद और गर्मजोशी से स्वागत के लिए सिंधिया स्कूल के छात्र और सोबा-नागपुर के आभारी रहेंगे।

इसके बाद हमारा दल वसंत वैली कैंप रवाना हो गया। हमने कैंप स्थल पर अनेक साहसिक गतिविधियों में भाग लिया। जिप-लाइनिंग, लैडर-ब्रिज, बर्मा-ब्रिज आदि आकर्षण का मुख्य केंद्र थी।

दूसरे दिन हमारा दल एक ट्रैक के बाद दोपहर में 'चेंबूर टाइगर रिजॉर्ट' के लिए

रवाना हो गया। रात्रि भोजन के पश्चात भारतीय वन्यजीव और 'तडोबा टाइगर रिजर्व' पर एक लघु फिल्म दिखाई गई,

जो छात्रों को बहुत पसंद आयी। तीसरे दिन निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार हमें सुबह ५:३० बजे तडोबा राष्ट्रीय उद्यान के प्रवेश द्वार पर पहुँचना था, जिसका सबको बेसब्री से इंतजार था। सभी छात्रों ने खुली जिप्सियों का आनंद लिया। शेरनी जूना बाई और उसके २ बच्चे मुख्य आकर्षण थे। हमने उसे हाल ही में मारे हुए हिरण को भी ले जाते हुए देखा। जूना बाई अपने बच्चों की देखभाल जिस प्रकार कर रही थी, यह स्पष्ट हो गया था कि इस धरती पर माँ का स्थान कोई नहीं ले सकता।

दोपहर भोजन के बाद जंगल सफारी का एक और आयोजन किया गया और इस बार हमें टाइगर जायलो, वाइल्ड बोर, नीलगाय, चीतल, लोमड़ी और बार्किंग डियर आदि जैसे जानवर मिले। रिसॉर्ट पहुँचने के बाद एक और संवाद साँपों के विषय पर आयोजित किया गया जिसमें हमको साँपों की कई प्रजातियों के बारे में बताया गया। यात्रा के चौथे दिन हम नाश्ता करने के बाद हेमलकासा के लिए निकल गए जो डॉ. प्रकाश आम्टे के 'लोक बिरादरी प्रकल्प' के लिए जाने जाते हैं।

शाम को प्रख्यात समाज सेवी एवं पशु प्रेमी डॉ. प्रकाश आमटे के जीवन और उनके योगदान पर एक लघु फिल्म देखी, जिसमें उनके द्वारा समाज में किये गए योगदान का वर्णन किया गया था।

पाँचवे दिन सुबह ८:०० बजे नाश्ता करने के बाद हमारे दल ने डॉ. प्रकाश आमटे के साथ एक संवाद सत्र में भाग लिया, जिसमें उन्होंने अपने प्रोजेक्ट को समझाया। उन्होंने यह भी कहा कि २२ सालों तक उन्होंने यहाँ पर बिना बिजली के रहने वाले आदिवासियों की भी सेवा की थी।

डॉ. आमटे एक योग्य सर्जन हैं और उनकी पत्नी भी एक डॉक्टर हैं। उनके बेटे और बहु ने भी अपनी नौकरी छोड़ दी है और अब वन्य-जीवों की सेवा कर रहे हैं। उनके इस योगदान के लिए उनको पद्मश्री से भी सम्मानित किया गया है। आज उनके पास आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित पैथोलॉजी लैब है, सर्जरी कक्ष और कई अन्य स्वास्थ्य सुविधाएँ उपलब्ध हैं। डॉ. आमटे ने आदिवासी बच्चों लिए एक स्कूल स्थापित किया है, जहाँ इन बच्चों को

निःशुल्क शिक्षा दी जाती है। उन्होंने यह भी बताया कि यहाँ पर पढ़ने वाले कई छात्र अब उच्च पदों पर कार्यरत हैं और समाज में सक्रिय हैं।

जानवरों के प्रति उनका प्यार देखकर हम सभी हतप्रभ रह गए। खतरनाक जानवरों के पालना, यह कोई आम बात नहीं थी। डॉ. आमटे का सादगी और विनम्रता से भरा जीवन देखकर हम सभी भाव-विभोर हो गए।

प्रकल्प के लोगों का परिश्रमपूर्ण जीवन और उनके मधुर व्यव्हार का अनुभव मुझे हमेशा ही याद रहेगा। 'लोक बिरादरी प्रकल्प' से १२:३० बजे हमने इस उम्मीद के साथ विदाई ली कि हम एक बार फिर अवश्य आएँगे।

यात्रा के आखिरी दिन हम सब नाश्ते के बाद, गोंडवाना एक्सप्रेस ट्रेन से ग्वालियर जाने के लिए १२:५५ बजे हम नागपुर रेलवे स्टेशन पहुँचे। प्रातः ३:०० बजे हमारे स्कूल की बस ग्वालियर रेलवे स्टेशन पर हमारा इंतजार कर रही थी। हम सब सुबह लगभग ४:१५ बजे अपने विद्यालय पहुँच गए थे। हमारी यह यात्रा भी बहुत रोमांचक और यादगार रही और इस यात्रा की याद मुझे सदैव रोमांचित करती रहेगी।

जगदीश जोशी
हिंदी विभाग

सिंधिया स्कूलः 125 वर्षों की रूपांतरण-यात्रा

सन् १८९७ में स्थापित, सिंधिया स्कूल को सरदार स्कूल के नाम से जाना जाता था। सन् १९३३ में इसका नाम बदल कर सिंधिया स्कूल कर दिया गया । यह छठवीं शताब्दी में निर्मित एक सुरक्षित एवं बहुत सुंदर किले पर बनाया गया है, जो ३०० फीट ऊँचे गोपाचल पर्वत पर स्थित है! स्कूल का ११० एकड़ सुंदर और खुला परिसर छात्रों को अपने रचनात्मक कौशल को उत्प्रेरित करता है। छात्रों को सदा शांत और स्फूर्त मस्तिष्क रखता है !

आज जो स्कूल है, वह अनेक परिवर्तनों से गुजरकर इस स्वरूप में है। आज भी यह एक नए कलेवर को ग्रहण करने की प्रक्रिया में है, जैसा कि हमारा लक्ष्य और दूरदृष्टि है!

आरम्भ में, यह कुलीनता और राजसी-शिक्षा के लिए एक स्कूल के रूप में अस्तित्व में आया था और अब देखिए, ये आम जनता के लिए खुला है। आज स्कूल का दृष्टिकोण है कि शिक्षा का प्रमुख केंद्र बने और शिक्षायापन से यहाँ के छात्र को व्यावहारिक मानसिकता ग्रहणकर, भारतीय संस्कृति का सार सँजोने वाले विश्व नेता बनें।

सिंधिया स्कूल का दर्शन भारतीय पद्धति पर आधारित है। हम भारतीय-संस्कृति के मूल मूल्यों को बनाए रखकर, आधुनिक शिक्षा से जोड़कर, उसे पुराना और चलन से बाहर जाने से रोकते हैं! 'गुरुकुल' प्रणाली से प्रेरणा लेकर, हमने 'आत्मावलोकन' को अपने नित्य-जीवन में अपनाया है।

पहली बार सन् १९३० में 'अस्ताचल' सिंधियन-दिनचर्या का हिस्सा बना। अस्ताचल छात्रों को ध्यान केंद्रित करने और खुद पर विचार करने के लिए समय देता है। शाम को छात्र प्रार्थना के लिए रंगभूमि में इकट्ठा होते हैं और कुछ समय मौन रहकर दिनभर के कार्य-कलाप की समीक्षा या अपने स्वयं के कार्यो-निर्णयों पर विचार करते हैं।

धीरे-धीरे आम जीवन में काम आने वाले हुनर शिक्षा के हिस्से बनते गए। लकड़ी का काम, पत्थर का काम, मिट्टी की माँडलिंग, पेपर मेशे, लौह धातु का काम, कला और डिजाइन जैसे कौशल

यहाँ की औपचारिक-शिक्षा का एक अनिवार्य हिस्सा हैं।

खेलों में जहाँ हॉकी और घुड़सवारी आरंभ से ही छात्रों के शारीरिक सौष्ठव का प्रतीक रही, वहीं बाद में फुटबॉल, बॉस्केटबाल, स्क्वाश, क्रिकेट, टेनिस, टेबल-टेनिस एवं सभी प्रकार की दौड़ खेल-गतिविधि का हिस्सा बनते गए। उधर, सामयिक विषयों पर वाद-विवाद, साल के अंत में शास्त्रीय नाटकों का मंचन, रचनात्मक लेखन व प्रश्नमंच जैसी पाठ सहगामी-गतिविधियों ने सिंधिया स्कूल की शिक्षा-पद्धति को 'समग्र-सर्वांगीण' स्वरूप दिया।

खेल और सह- पाठ्यचर्या के साथ-साथ स्कूल जो अनुभव प्रदान करता है, वह अपनी तरह का अनूठा है। स्कूल हमेशा नई पहल अपनाने वाला पहला स्कूल रहा है। सन् १९८४ में स्कूल अपने पाठ्यक्रम में आईटी को अपनाने वाला पहला स्कूल था, सीबीएसई बारहवीं कक्षा की कंप्यूटर परीक्षा में बैठने वाले पहले ४ लड़के ग्वालियर किले से थे।

अब तक, इन वर्षों में स्कूल ने व्यावहारिक शिक्षा के लिए उपयुक्त वातावरण बनाने के लिए इन सभी सुविधाओं का निर्माण किया है। स्कूल ने प्रथम विश्व युद्ध, स्वतंत्रता आंदोलन से लेकर आधुनिकीकरण तक, सब कुछ देखा है और एक छात्र के सर्वोत्तम विकास के लिए हर वे संसाधन जुटाए हैं, जिसकी समय-समय पर आवश्यकता पड़ी है।

अखण्ड प्रदीप राय एवं
शौर्य बरणवाल

सोशल मीडिया पर सिंधिया स्कूल

अद्यतन जानकारी के लिए हमसे जुड़े रहें।

LinkedIn

संकलन एवं आकल्पन
प्रभात वाजपेयी

हिन्दी वार्षिक नाट्य-प्रस्तुतिः भगवदज्जुकम्

सिंधिया स्कूल की हिन्दी साहित्य सभा की वार्षिक नाट्य-प्रस्तुति के अंतर्गत इस बार कवि बोधायन कृत संस्कृत नाटक "भगवदज्जुकम्"का मंचन किया गया। इस नाटक का हिन्दी अनुवाद श्रीमती इंदुजा अवस्थी एवं श्री कार्तिक अवस्थी द्वारा किया गया है। उसी पाण्डुलिपि का प्रयोग कर छात्रों ने यह प्रस्तुति तैयार की।

प्रस्तुति से पहले

अपनी वार्षिक परीक्षा देकर छात्र शैक्षणिक भ्रमण के लिए देश के विभिन्न पर्यटन केंद्रों में चले गए और ३०-३१ मार्च में लौटे। लौटते ही हिन्दी-अँग्रेजी नाटकों की वार्षिक प्रस्तुतियों की तैयारी में जुट गए। छात्रों के मन में एक तरफ स्कूल के सामने अपनी धाक जमाने की चाह होती है तो दूसरी तरफ अपनी पहचान बनने की अभिलाषा। जो छात्र पिछले कई सालों से नाटकों में भाग लेते रहे हैं, उनमें मुख्य भूमिका मिलने या पाने की ललक होती है। सो, छात्रों का हुजूम दोनों नाटकों के प्रभारियों को दिन में कभी न कभी घेरे ही रहता और अपने-अपने रोल के बारे में जानने की कोशिश में लगा रहता।

अप्रैल की २ तारीख से अभ्यास आरम्भ किया गया। सबसे पहले छात्रों को स्वर सशक्त करने के अभ्यास कराए गए। कुछ नाट्य-खेल भी कराए गए, जिनमें खेल-खेल में नाट्य-विद्या सीखना शामिल था। इसी दौरान छात्रें से कुछ संवाद बुलवाकर देखे जाते। धीरे- धीरे पात्रों का चयन स्पष्ट होने लगा। अभ्यास के दौरान मैंने छात्रों से कहा था कि नाटक के पात्र स्वयं अपने अदाकार को खोज लेते हैं! और यहाँ बिल्कुल यही हुआ। हिन्दी साहित्य सभा के सचिव आदित्य सिंह योगीश्वर परिव्राजक की भूमिका के लिए चुने गए, मगर कुछ दिन बाद ही उनकी महत्वपूर्ण कक्षाओं के कारण उन्हें ये अवसर छोड़ना पड़ा। अंततः लक्ष्य शर्मा ने यह भूमिका निभाई। शांडिल्य के पात्र को निभाने के लिए, सात छात्रें को चुना गया। उनमें से सानिध्य करण सिंह ही उस भूमिका के साथ न्याय कर पा रहे थे। नमन दुआ बहुत ही संजीदा छात्र हैं, मगर उनके योग्य करने को कुछ नहीं मिला तो एक नया पात्र 'बोधायन' बनाकर उसे अभ्यास में शामिल किया गया। कभी जब शांडिल्य नहीं होता तो नमन से शांडिल्य की भूमिका करने को कहा जाता। इसी प्रक्रिया में नमन ने अपनी प्रतिभा और परिश्रम से शांडिल्य को साकार कर दिया तो फिर सभी को लगा कि ये दर्शकों का मनोरंजन कर सकता है। इसी बीच, एक संकट आन खड़ा हुआ। छात्रवास के बच्चे अस्वस्थ होने लगे। किसी न किसी कारण से अभ्यास में शामिल न हो पाते। कई बच्चे जो मुख्य भूमिका निभाने वाले थे, वे इतने अस्वस्थ हो गए कि अचानक उन्हें छुट्टी पर जाना पड़ा। ये हिन्दी-अँग्रेजी दोनों नाटकों के छात्रों के साथ हुआ। फिर जो दूसरे छात्र जो उन परिस्थितियों में अपने को चुस्त-दुरुस्त रख पाये, वे भाग्यशाली सिद्ध हुए और उन्हें महत्वपूर्ण भूमिकाएँ करने को मिलीं और उन्होंने भरपूर सराहना पाई। उनमें से नमन दुआ और स्वरित वार्ष्णेय का नाम लिया जा सकता है। स्वरित वार्ष्णेय जो आरम्भ से सूत्रधार का अभ्यास करते थे, अंत में परिव्राजक के दूसरे शिष्य बोधायन की भूमिका निभाई। विनायक कपूर जिन्होंने लगभग हर पात्र को निभाने का अभ्यास किया, आखिर में सूत्रधार का अभिनय किया और बहुत प्रभावी किया। अंश मित्तल और साहिल किशोर सिन्हा ने अज्जुका की सखियों के संवाद जब पहली बार पढ़े तो किसी और से ये भूमिकाएँ करवाने का सवाल ही नहीं उठा। प्रस्तुति अभ्यास के दौरान साहिल किशोर सिन्हा, गीतेश सिंघल, श्रेयांश मित्तल, आदर्श गुप्ता, श्लोक शर्मा आदि की बाल-हठ एवं नटखटपन अध्यापक-छात्र संबंधों में मिठास घोल देने जैसा अनुभव था। मेहुल जैन और श्लोक शर्मा इस तरह काम करते थे, जैसे कि उन्हें विशेष रूप से विदूषक और रामिलक की भूमिका के लिए ही भेजा हो। ऋतुपरण सिंह जैसे छात्र भी थे, जो प्रतिभाशील होकर भी अपनी भूमिका के साथ न्याय नहीं कर पाये और वह भूमिका विवेक शर्मा के पास चली गई, जिनके पास नाटक में कोई काम ही नहीं था। विवेक शर्मा ने वैद्य की भूमिका को बहुत मजेदार बना दिया। उनका भरपूर साथ दिया, वैद्य के सहयोगी 'गोबर' की भूमिका निभा रहे युवराज सेठिया ने। एकमात्र पात्र था 'यमदूत' का जिसे आर्यवर्द्धन सिंह सोमवंशी ने स्वयं ही चुना और पहले दिन से लेकर प्रस्तुति के दिन तक स्वयं ही उसे भलीभाँति तैयार किया और स्वयं ही उसमें "प्रभाव" लाने के लिए विभिन्न पहलुओं को सृजित किया।

इस नाटक में संगीत की बहुत माँग है। होनहार संगीत अध्यापक श्री योगेश शर्मा का साथ मिला। उन्होंने बड़े उत्साह से प्रस्तुति-अभ्यास में बड़ा परिश्रम किया और नाटक के संगीत का सुंदर सृजन किया। गणेश स्तुति, शिव अभ्यर्थना, 'कवि बोधायन' की कथा अनूठी' गीत के साथ-साथ अज्जुका से मंच से शास्त्रीय तर्ज का गीत प्रस्तुत करवाया। इससे नाटक की प्रस्तुति में सौन्दर्य आ गया। नाटक के आरम्भ का संगीत प्रस्तुत करने में, साथी अध्यापक श्री ध्रुव शर्मा एवं वरिष्ठ अध्यापक श्री राजेन्द्रजी शर्मा का रचनात्मक योगदान सराहना के योग्य है।

नाटक के अनेक पहलू होते हैं। उसमें संगीत एक महत्वपूर्ण पक्ष है। प्रस्तुति अभ्यास दूसरा है। इसे सुचारू रूप से चलाने के लिए विभिन्न विभागों से तालमेल करना भी एक महत्वपूर्ण पक्ष है। निर्देशक रचनात्मक पक्ष अधिक देखता है। नाटक के रचनात्मक पक्ष को 'उभारने' के लिए मजबूत कंधे चाहिये होते हैं। इसमें वरिष्ठ छात्र अर्जित बंसल ने भरपूर सहयोग दिया। सामाजिक अध्ययन विषय की अध्यापिका श्रीमती महविश ने पहल करके न केवल प्रस्तुत-अभ्यास में नियमित शामिल होकर छात्रों को उत्साहित किया बल्कि पात्रों की वेशभूषा एवं मुख-सज्जा में भी अपना रचनात्मक योगदान दिया। रंगमंच को प्रस्तुति हेतु तैयार करने में कला-शिक्षक श्री वीरेंद्र नागवंशी के साथ मिलकर अद्भुत कार्य किया। इस नाटक की प्रस्तुति में अभिभावकों श्रीमती मेघना शर्मा (नृत्य संयोजन), श्रीमती कविता पिल्लई, प्रियंका गरुड (वेश-भूषा), सृष्टि मिश्रा (मुख-सज्जा) आदि का बहुत सहयोग रहा।

हर्षवर्द्धन वाढेर ने ब्रोशर बनाया और खुश टोडी व अंजुम निषाद ने प्रसार के लिए चादर पर नाटक की विषयवस्तु को कलात्मक ढंग से उकेरा। विभाग अध्यक्ष श्री मनोज कुमार मिश्रा ने सभी का मार्गदर्शन करते हुए कार्यक्रम का संयोजन किया।

नाटक के बारे में

भगवज्जुकम् नाटक कवि बोधायन ने सातवीं शताब्दी में लिखा था। मूल रूप में ये नाटक संस्कृत भाषा में है। पहले इसकी प्रस्तुति कूडियट्टम में होती थी। कूडियट्टम के माध्यम से इस नाटक के बारे में लोगों को पता चला। आरंभ में, प्रस्तुतियाँ संस्कृत में ही होती रहीं, किन्तु थोड़े ही समय में यह अत्यंत लोकप्रिय हो गया। अनेक भाषाओं में इसका अनुवाद हुआ और इसे हर प्रतिष्ठित निर्देशक ने रंगमंच पर साकार करने के सपने देखे। वैसे तो ये एक प्रहसन है यानि हास्यरस से भरपूरय मगर कवि बोधायन ने बड़ी ही चतुराई से शिक्षक और छात्र के संबंधों के बारे में बहुत बातें कह दी हैं! शिक्षक आत्मिक ज्ञान से परिपूर्ण है और स्वयं को संसार से सदा बचाये रखता है, किन्तु छात्र बाहरी संसार में रमा रहता है। छात्र शिक्षक के बारे में जो सोचता है, वह बात शिक्षक को मालूम रहती है, फिर भी अनजान बनकर छात्र को निरंतर आत्मिक ज्ञान की ओर ले जाने का प्रयत्न करता

रहता है। कभी बनावटी क्रोध दिखाकर, कभी छड़ी दिखाकर। छात्र के मन में यह प्रश्न कभी नहीं मिटता कि शिक्षक आखिर मुझसे चाहता क्या है? यदि शिक्षक आत्मा है तो छात्र शरीर! दोनों का एकाकार होना बहुत आवश्यक है, इसी में, इस विश्व का कल्याण निहित है! पूरी कथा को यदि सम्पूर्णता में देखें तो संसार के बहुत से रहस्यों से परदा उठ जाता है। देख लो तो सार है! न देख पाये तो मनोरंजन!!

नाट्य-प्रस्तुति

अंग्रेजी नाटक बहुत अच्छा हुआ। अगले दिन २१ अप्रैल को समस्त छात्र हिन्दी नाटक को देखने श्री शुक्ला स्मृति मुक्ताकाशी मंच की दर्शक दीर्घा में जमा हुए। साहित्य सभा के सचिव आदित्य सिंह ने सभी का औपचारिक स्वागत किया। फिर नाटक में भाग लेने वाले कलाकारों का परिचय दिया गया। नाटक के बारे में बताया गया और फिर शंख-ध्वनि के साथ नाटक आरंभ हुआ। श्री गणेश प्रकट हुए। कोरस ने स्तुति की। फिर शिव अभ्यर्थना के रूप में नांदी पाठ हुआ, जैसे कि संस्कृत नाटकों की परम्परा है। फिर छात्र कलाकारों ने मंच पर आकर नाटक की विषयवस्तु को गीत और नाट्य से दर्शकों के समक्ष प्रस्तुत किया। सूत्रधार का मंच पर प्रवेश होता है। सूत्रधार और विदूषक की बातचीत से नाटक के प्रमुख पात्रों के बारे में पता चलता है। योगी परिव्राजक अपने शिष्य शांडिल्य को खोजते हुए प्रवेश करते हैं। फिर नटखट और भुक्खड़ शांडिल्य का प्रवेश होता है। वह बताता है कि कैसे चेला बना? इस तरह गुरु और चेले की खट्टी-मीठी बातचीत दर्शकों को गुदगुदाती है। गुरु अध्ययन को कहता है, मगर चेला टालने के लिए अध्ययन से पहले अध्ययन शब्द का अर्थ जानना चाहता है। इस तरह वे उद्यान में प्रवेश करते हैं। शांडिल्य को भोजन की पड़ी है इसलिए वह भिक्षाटन के लिए जाना चाहता है, मगर गुरु के नियमों के अनुसार भिक्षा का उचित समय नहीं हुआ है। तभी उद्यान में सखियों (साहिल किशोर सिन्हा एवं अंश मित्तल) के साथ एक गणिका अज्जुका (आन्या पिल्लई) का प्रवेश होता है। वह वहाँ अपने प्रेमी रामिलक से मिलने आई है, मगर वह अभी तक आया नहीं है। यह समझकर की अभी वह किसी गोष्ठी में होगा। अज्जुका प्रभृतिका (अंश मित्तल) से रामिलक (श्लोक शर्मा) को बुलाने भेजती है। समय व्यतीत करने के लिए मधुकरिका (साहिल किशोर सिन्हा) अज्जुका से गीत गाने का अनुरोध करती है। अज्जुका के मधुर गायन से शांडिल्य का मन उसमें रमने लगता है। तभी यमदूत का प्रवेश होता है जिसे यमराज ने एक गणिका के प्राण लेने वहाँ भेजा है। उचित समय पाकर यमदूत अशोक वृक्ष की शाखा पर, सर्प बनकर अज्जुका को डँस लेता है। इस प्रलाप को सुनकर शांडिल्य भी रोने लगता है। शांडिल्य को अज्जुका को देखते रहने की कहकर मधुकरिका उसकी माता को बुलाने चली जाती है। शांडिल्य अपने गुरु से गुस्सा होकर कहता है कि आपकी इस योगविद्या का क्या लाभ कि वह अज्जुका को जीवित नहीं करते। अपने शिष्य को विश्वास दिलाने के लिए योगीश्वर अपने प्राण अज्जुका में प्रवेश करा देते हैं। अब अज्जुका योगीश्वर परिव्राजक की तरह आचरण करने लगती है, और दर्शक अपनी हँसी नहीं रोक पाते। जब अज्जुका की माता आती है तो वह अचंभे में पड़ जाती है। उधर रामिलक भी आ जाता है, और वह भी परेशान कि यह क्या हो रहा है। तभी यमदूत का पुनः प्रवेश होता है। वह बताता है कि यमराज उस पर बहुत क्रोधित हुए क्योंकि वह किसी और गणिका के प्राण ले गया था। अब वह क्या देखता है कि जिस गणिका के प्राण उसके पास हैं, वह तो जीवित खड़े हैं और योगीश्वर परिव्राजक मृत पड़े हैं। तब यमदूत अज्जुका के प्राण योगीश्वर परिव्राजक की देह में डाल देता है, यह सोचकर कि कुछ देर खेल देखकर वह इनके प्राण आपस में बदल देगा। अब योगीश्वर परिव्राजक अज्जुका की तरह आचरण करने लगते हैं और दर्शकों के ठहाके गूँजने लगते हैं। कुछ देर बहुत मनोरंजन होता है। इस बीच वैद्य भी आता है जो अज्जुका का उपचार करने उसकी माता ने बुलाया ने बुलाया है। वैद्य (विवेक शर्मा) और उसका सहयोगी गोबर (युवराज सेठिया) दर्शकों का भरपूर मनोरंजन करते हैं। उचित समय आने पर यमदूत अज्जुका और योगीश्वर परिव्राजक के प्राण परस्पर प्रतिस्थापित कर देते हैं। इस तरह सभी हर्षपूर्वक विदा लेते हैं। दूसरा शिष्य बोधायन (स्वरित वार्ष्णेय) योगीश्वर परिव्राजक से इस घटना के बारे में पूछता है, मगर अस्ताचल के सूर्य की सुंदरता का वर्णन करते हुए उस प्रश्न को टाल देते हैं। भरत वाक्य के माध्यम से विश्व-बंधुत्व, आपसी सद्भाव और विश्व-कल्याण की कामना के साथ नाटक सम्पन्न होता है!

छायाचित्र एवं उद्बोधन

नाटक के अंतिम दृश्य के साथ ही प्राचार्य श्री अजय सिंह, उप प्राचार्या सुश्री स्मिता चतुर्वेदी, गतिविधि अधिष्ठाता श्री धीरेन्द्र शर्मा, बरसर कर्नल डी के फरशवाल आदि ने प्रतिभागी छात्रों के साथ छायाचित्र खिंचवाया और प्रत्येक छात्र से मिलकर उनके कार्य की प्रशंसा की। अपने उद्बोधन में श्री सिंह ने कहा कि छात्रों ने भाषा को बहुत कुशलता के साथ अपनाया और अपने अभिनय से सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया।

जब मैं यहाँ आया था!

जब मैं यहाँ आया था, दो माह पहले तो मैं बहुत रोता था। रोते-रोते सोचता था कि मै यहाँ पर नहीं रह पाउँगा। पर, गनपतजी जैसे शिक्षक और शिखाजी जैसी शिक्षिका की वजह से मैं अब ठीक हूँ और रोता नहीं हूँ।

पिछले, दो महीने में कितनी चीजें हो चुकी है! हमने फुटबॉल इण्टर-हाउस जीत लिया है। वाद-विवाद एवं वाग्मिता प्रतियोगिता भी जीती है। हमारी एक हाउस पार्टी भी हो चुकी है। जब हमने घर पर बात करना शुरू किया तो सब लोग इतनी तेजी से भागकर गए। मै टेलीफोन के सबसे पास था तो मैंने अपने माता-पिता से सबसे पहले बात की।

हम शुक्रवार और शनिवार को भोजन का इंतजार करते है क्योंकि हम कचौरी, बिरयानी, छोले-कुलचे आदि चीजें मिलती हैं।

कबीर त्रिपाठी
कक्षा-छठवीं, जनकोजी हाउस

नए कपड़े

एक परिवार था, जिसमें बड़े गरीब लोग रहते थे। बेटा, माँ और बाप। माँ और बाप दिन-रात काम करके पैसा कमाते थे। ईद आ गई थी, सब कोई नए-नए कपड़े पहन रहे थे। बेटे ने कहा कि उसे भी नए कपड़े चाहिए। उनके पास इतने पैसे नहीं थे। बच्चा रोने लग गया तो, उसकी मम्मी और पापा और ज्यादा मेहनत करने लग गए कि बच्चे को नए कपड़े दिलायेंगे।

उन लोगों ने जैसे-तैसे पाँच सौ रुपये कमाए और अपने बेटे को दे दिए। अगले दिन बेटा भागकर गया, अपने न एक पड़े लेने। तभी रास्ते में उसे उसका दोस्त रोते हुए दिखा।

उसने अपने दोस्त से पूछा, 'तुम रो क्यों रहे हो ?

उसने कहा, 'उसके पापा की तबीयत दो दिन से खराब है और मैंने दो दिन से खाना नहीं खाया।'

उसने थोड़ी देर सोचा और अपने दोस्त से कहा, 'यह पैसे तुम रख लो।'

बेटा जब खाली हाथ घर पहुँचा तो उसके माता-पिता डर गए कि उनका बेटा खाली हाथ आया है। तब बेटे ने उन्हें सारी बातें बताई।

जयेश अगरवाल
कक्षा-छठवीं, दत्ताजी सदन

कक्षा की बातें : धैर्य का महत्त्व

एक विद्यालय में अध्यापक एक पढ़ाते थे। अत्यंत विनम्र और उदार। एक दिन जब वह पढ़ा रहे थे, तब एक छात्र ने उन से धैर्य का मतलब और महत्व पूछा।

अध्यापक ने फिर बड़े विनम्र भाव से कहा-धैर्य का मतलब धीरज या फिर सोच-समझकर काम लेना होता है। धैर्य न होतो मनुष्य के सोचने-समझने की और सही निर्णय लेने की क्षमता चली जाती है। धैर्य के होते हुए हम कुछ गलत काम कर सकते हैं, जिस कारण हम पर कभी मुसीबत नहीं आ सकती है। जो लोग अपना सभी काम धैर्य के साथ करते हैं, वह हमेशा सफल होते हैं।

यह सब कहते ही उन्होंने सभी बच्चों को मिठाई दी और कहा-सब इसे मेरे कहने पर ही खायेंगे। उनके जाने पर बहुत सारे बच्चों ने मिठाई खाली और कुछ ने नहीं खाई।

पाठशाला खत्म होने के बाद अध्यापक ने कहा कि धीरज, जीवन के हर मोड़ पर होना चाहिए। जिन बच्चों ने मिठाई नहीं खाई, वही जीवन में हमेशा सफल होंगे और बिल्कुल वैसा ही हुआ। जो व्यक्ति धैर्य का साथ छोड़ देता, जीवन उसका साथ कभी नहीं छोड़ता।

कुमार अभीक्षित
कक्षा-आठवीं, जयाजी सदन

साक्षात्कार : श्री मधवाल सर

सिमरजोत- क्या आप अपने शुरुआती शिक्षण वर्षो की कुछ बातें साझा कर सकते हैं ? उन्होंने शिक्षा के प्रति आपके विचारों को किस प्रकार आकार दिया ?

श्री मधवाल: मुझ से इंटरव्यू में पूछा गया कि आप स्कूल के लिए क्या कर सकते हैं? आप मास्टर ग्रेजुएशन हैं, क्लास तो पढ़ा ही लेंगे, लेकिन बोर्डिंग स्कूल में पढ़ाने के अलावा कई जिम्मेदारियाँ होती है, क्या आप उन पर खरे उतर पायेंगे ? मैंने उत्तर दिया, मेरे अंदर पागलपन और दीवानगी है, सीखने-सिखाने की क्षमता है तो मैं इस परिवेश में खरा उतरने की कोशिश करूँगा। शिक्षाचार दीवारी के अंदर ही नहीं होती, बल्कि उसके बाहर भी होती है, जैसे खेल के मैदानों में या बोटिंग या ट्रैकिंग में, जो बोर्डिंग स्कूल की शिक्षा का महत्वपूर्ण अंग है। मैंने बचपन में सीखा, चिड़ियों से चहकना सीखा, भौंरों से गुनगुनाना सीखा, हवा-पानी से बहना सीखा, फूलों से मुस्कुराना सीखा, चींटी से मेहनत करना सीखा।

सिमरजोत- बहुत सुंदर उत्तर श्रीमान एक कविता याद आ गई- फूलों-सा महकूँ मैं, विहगों-सा चहकूँ मैं, गुंजित कर वन-उपवन कोयल-सा कुहकूँ मैं, मेरी अभिलाषा है! बड़ी सुंदर कविता, वैसी ही आपकी भावना! मेरे मन में ये जानने की इच्छा है कि आपने अपने करियर के दौरान शिक्षा के क्षेत्र में क्या बदलाव देखे हैं ?

श्री मधवाल- मैं पुरानी पद्धति की शिक्षा पद्धति लेक्चर, ग्रुप डिस्कशन, डिबेट में विश्वास रखता हूँ। नई पद्धति में, आईटीवर्ल्ड शिक्षा को और भी आनंदित बना देता है। लेकिन मेरा व्यक्तिगत मत यह है, आप जो भी पद्धति अपनाते हैं, वह छात्रों के हृदय में और मस्तिष्क में आनंद जगा दे और शिक्षण को रोचक कर दे। विद्यार्थी को समझ आए, यही सभी का अंतिम लक्ष्य है।

सिमरजोत- अपनी शिक्षण - यात्रा के समय क्या आज आप किसी विशेष चुनौती पूर्ण समय को याद करते हैं? यदि ऐसा हुआ तो आपने उसे कैसे निपटाया?

श्री मधवाल- शिक्षा की यात्रा में शिक्षक को हर समय चुनौतीपूर्ण कार्य करना चाहिए। चाहे वह क्लास रूम डिसिप्लिन को लाना हो या खेल के मैदान में हो। या स्कूल के प्रांगण में कभी भी बिना चुनौती के, न ही शिक्षक, न ही छात्र आगे बढ़ सकते हैं।

सिमरजोत- बेहतर शिक्षण वातावरण बनाने के लिए आप पारंपरिक शिक्षण तकनीकों को, आधुनिक तकनीकों के साथ कैसे संतुलित करते हैं?

श्री मधवाल- पौराणिक शिक्षा या पुरानी पद्धति की शिक्षा बहुमूल्य है, जिससे हमने अपने गुरुजनों माता-पिता, भाई-बहनों से सीखा है। पौराणिक शिक्षा-पद्धति को अति उत्तम और श्रेष्ठ माना जाता रहा है, और यह सदा प्रासंगिक बनी रहेगी। जहाँ तक नई पद्धति का सवाल है, समाज के हिसाब से सब बदलते रहेंगे, लेकिन पुरानी पद्धति चलती रहेगी।

सिमरजोत- आपकी राय में एक शिक्षक के विकास और सफलता में मार्गदर्शक (मेंटोरशिप) की क्या भूमिका होती है और क्या आपका कोई ऐसा यादगार अनुभव है?

श्री मधवाल- मेंटरशिप शिप एक शिक्षक के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। संरक्षक एक वरिष्ठ मास्टर, हाउस मास्टर, या स्कूल का प्रमुख (प्रिंसिपल) हो सकता है। इन सभी ने मेरे विकास में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इन्हीं के कारण मैंने ट्रैकिंग में भाग लिया और उत्तराखंड की पहाड़ियों में खूब ट्रैकिंग की। यह उनकी वजह से है कि मैंने व्हाइट वॉटर राफ्टिंग और साइकिलिंग अभियानों में भाग लिया। यह उनकी प्रेरणा के कारण ही है कि मेरा रुझान संगीत, नाटक, वाद-विवाद, भाषण और खेल गतिविधियों की ओर था और बाद में छात्रें को इन क्षेत्रों में आगे बढ़ने में मदद मिली।

सिमरजोत- जयप्पा हाउस, स्कूल के खेल-कूद, अस्ताचल आदि को सँभालने के दौरान आपका अनुभव कैसा था?

श्री मधवाल- इन सभी गतिविधियों के प्रभार के समय मेरी यादें अविस्मरणीय हैं। मैंने जयप्पा हाउस के हाउस मास्टर, हॉकी के मास्टर प्रभारी, परीक्षा प्रभारी, अनुशासन प्रभारी के रूप में हर पल का आनंद लियाद्य अस्ताचल में नए और

सार्थक बदलाव के लिए मुझे सराहना मिली। हाउस के अनुसार मैस की बैठने की व्यवस्था, संगीत सभा आयोजित करने में भी मेरे योगदान को रेखांकित किया गया । अब महसूस हो रहा है कि स्कूल आने पर मुझसे जो अपेक्षा की गई थी, मैंने उसे पूरा कर लिया है।

सिमरजोत- कक्षा में आपने व्यापक अनुभव के आधार पर आप शिक्षकों को क्या सलाह देंगे ?

श्री मधवाल- शिक्षकों को मेरी सलाह है कि एक शिक्षक को चुस्त, सक्रिय, प्रतिबद्ध, समर्पित, आपसी बातचीत में कुशल, अपने विषय का विशेषज्ञ होना चाहिए और उसमें युवा दिमाग विकसित करने के लिए जुनून, आग और इच्छा शक्ति होनी चाहिए। मेरे अनुभव के अनुसार, ये वे अपेक्षाएँ हैं जो एक शिक्षक को अवश्य पूरी करनी चाहिए।

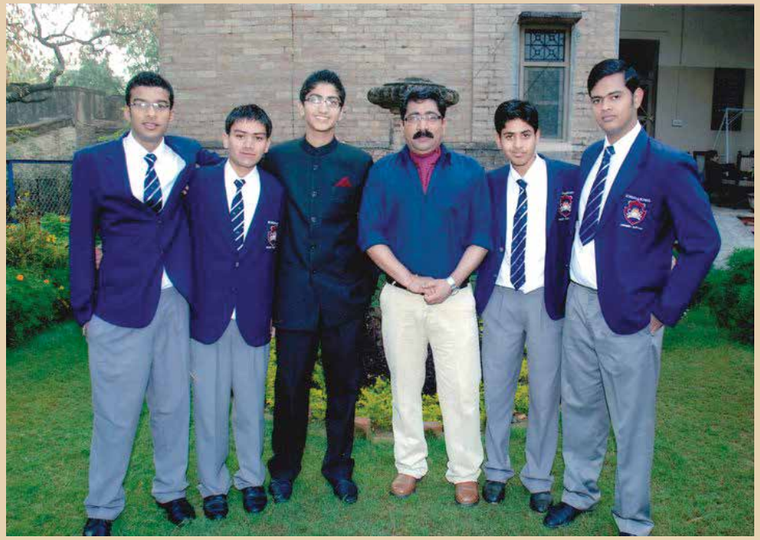

गुरुदक्षिणाः आत्माराम ट्रॉफी की कहानी!

मेरे स्कूल के समय में पंडित आत्माराम शर्मा विवेकानंद हाउस के हाउस मास्टर थे। वे हिन्दी और संस्कृत के विद्वान भी थे। जो सादगी एक अध्यापक में होनी चाहिए, उसकी वे प्रतिमूर्ति थे। उन्होंने नाटक और रचनात्मक लेखन समितियों के प्रभारी थे। एक बहुत ही सादा जीवन जीने वाले व्यक्ति थे। स्कूल में हम जब तक थे, तब तक सिर्फ उनको हमने साइकिल पर ही चलते देखा।

आज जब भी मैं अपने दिमाग में किसी शिक्षक के उदाहरण की कल्पना करने की कोशिश करता हूँ, तो उनका चेहरा ही सामने आता है। हमारे समय में, पढ़ने के लिए, हम सब छात्र अपने अध्यापकों के पास ही जाते थे। बाकी स्कूल में तो टीचर एक क्लास से दूसरी क्लास जाते थे, लेकिन हमारा स्कूल शुरू से ही काफी अलग था। अध्यापक अपनी क्लास नहीं छोड़ता था। मेरा मानना भी है कि प्यासा ही कुएँ के पास जाये! कुआँ क्यों प्यासे के पास जाये? उनकी क्लास एनआरसी के बगल में थी। मैं कक्षा आठवीं में था।

हम जब यहाँ पढ़ने आये थे, तब बहुत बिगड़े हुए थे, महा बिगड़े हुए! लाड़ में बिगड़े हुए थे। इसका कारण भी था। दादाजी का बड़ा व्यापार था। और उस समय पैसे से जो-जो भी चीजें खरीदी जा सकती थीं, वह हमारे पास थीं! और जो जरुरत नहीं थी, वो भी मिलीं! मेरे मात-पिता ने सोच होगा कि ये यहाँ और भी रहेंगे तो और भी बिगड़ेंगे, तो भेज दिया होगा हमें यहाँ!

हमारे पापा ने तो हमको बोल कर ही भेजा था,"बेटा! पैसे से बहुत कुछ खरीद लोगे, तुम अपने जीवन में! लेकिन इस स्कूल में जाकर जो तुम सीखोगे, वो हम तुमको बता नहीं सकते और अगर बताया भी तो, तुम अभी भी समझने के लिए बहुत छोटे हो!"

हम स्कूल में आत्माराम जी से मिले और हमें पता चला कि एक शिक्षक के साथ करीबी रिश्ता कैसा होता है?

एक बार मैंने यही सोचा कि आत्माराम जी के साथ भी कुछ बदतमीजी करेंगे। अध्यापक उन दिनों बेंत की कुर्सियों पर बैठा करते थे। आत्माराम जी कभी कक्षा में देर से नहीं आये! वे सदा अपने कक्ष में ही मिलते थे। उस दिन किसी कारण उनको आने में देर हो गई। उनकी कुर्सी रखी हुई थी, उसमें से जरा छेद-सरीखा हो गया था। किसी बच्चे ने उसमें उँगली डालकर उसे और बड़ा कर दिया। बाकी को बड़ा मजा आया। फिर किसी और ने दो-तीन उँगली उसमें फँसा दी। छेद और भी बड़ा हो गया। बच्चों को और भी मजा आने लगा। तीसरे बच्चे ने आकर पूरा हाथ ही डाल दिया। पाँच-छह मिनिट ये कहानी चली। मैं बैठा था। मैंने आकर उसमें अपना पाँव डाल दिया! जूता पहना हुआ, पूरा पाँव! मेरी बदनसीबी कि मेरा पाँव कुर्सी में और शर्मा साहब क्लास के अंदर!

एक ओर धोती-कुर्ता में सज्जित

संस्कृत के विद्वान खड़े हैं, और उनका विद्यार्थी शिक्षा के सिंहासन में पैर डालकर खड़ा है! अब क्या कारण बताता? कोई झूठ भी मुझे इससे बचा नहीं सकता था। और मार से भी नहीं! क्योंकि जूते सहित पैर अंदर है, भाग नहीं सकता था। मार पड़नी शुरू हो गई। मगर जान बचनी थी। जब तक पैर निकालता, १०-१५ तो पड़ चुके थे। जूता वहीं रह गया। एक पैर में जूता और एक पैर में मोजा पहने हुए भागा। ये मेरे पीछे भागे। धोती-कुर्ता पहने एक शिक्षक दालान में भाग रहा है, एक आठवीं क्लास के छात्र के पीछे-पीछे। उन्होंने अपना जूता उतारा और उससे मारा। ये दृश्य पूरे स्कूल ने देखा। ये कार्यक्रम ८ से १० मिनिट चला और प्रार्थना सभागार के पास आकर रुका। दोनों थक गये थे।

फिर उन्होंने कहा, 'तुमने मेरी बहुत बेकद्री की है!. . . जीवनभर अपना मुँह मुझको मत दिखाना।' उसी दिन मुझे कक्षा 'सी' में भेज दिया। और अब किस्मत ने जो लिखा था सो लिखा था। उन्होंने मुझे श्री देव नारायण वर्मा जी की क्लास में भेज दिया। मेरी गलती के कारण मुझे श्री देवेन्द्र नारायण जी से पढ़ने का सौभाग्य मिला। महीने भर उनकी कक्षा में जाता रहा।

फिर एक महीने बाद मैं वर्मा जी की कक्षा से निकल रहा हूँ और आत्माराम जी प्रिंसिपल ऑफिस से निकल रहे हैं। फिर सामना हो गया। मुझे तो जीवनभर मुँह ही नहीं दिखाना था और सामना हो गया।

मुझे देख के बोले, ''संदीप!, यहाँ क्या कर रहे हैं?

मैंने उनको कहा,"सर आपने क्लास से निकाल दिया! इसलिए हम अब यहाँ हैं!

फिर मैं जब तक उनको वापस देख पाया, उनकी आँखों से झर-झर आँसू बह रहे हैं!

और वह मुझे गले लगाकर बोल रहे हैं ''मुझे माफ कर दो संदीप! मेरी शिक्षा अधूरी रह गयी है। मेरे क्रोध पर मेरा काबू नहीं रख सका। मेरी शिक्षा अधूरी है! तुमको मारने के बाद, मैं अपने घर पर कितने दिन तक रोया हूँ, तुमको अंदाजा नहीं होगा।''

दस मिनिट तक गले लगाये रहे। झर-झर आँसू बह रहे थे। बार-बार कहते कि मेरी शिक्षा अधूरी है। मैं समझ ही नहीं पाया क्या हुआ था! अब ये पूरे स्कूल के सामने हुआ था। क्लास चेंज-ओवर का टाइम था। दालान में सब लोग थे। सभी ने ये वाकया देखा।

ये भी सभी ने देखा। बोले, 'मुझे अभी के अभी माफ करो! अभी के अभी मेरे क्लास में चलो!

और अब पीछे मुड़कर देखने पर लगता है कि एक मानवीय अध्यापक का वो करना कितना गहरा लम्हा था। उस समय समझ नहीं आयी थी ये बात!

अब ये कहानी खत्म हो गयी १९७८ में। वर्ष १९९७ में आयी स्कूल की १०० वीं सालगिरह। स्कूल ने अपने मन से हम लोग को एक ट्रॉफी किसी के भी नाम पर देने का प्रस्ताव किया और फिर मुझे आत्माराम जी की याद आयी। उस समय फोन तो होता नहीं था तो पता नहीं था कि वो जीवित थे कि नहीं? कहाँ पर थे, अगर जिंदा थे तो? लेकिन मैंने उनके नाम पे ये ट्रॉफी देदी।

अब बनवाने की बारी आयी। नागपुर में बेस्ट डिजाइनर थे, एक अनिल अग्रवाल करके। मैंने उनसे संपर्क किया इसको बनवाने के लिए। उस जमाने में मुझे उस ट्रॉफी के लिए ७००० रुपये लगे थे। खैर, ये हुआ।

ट्रॉफी स्कूल गयी फिर दो महीने बाद मुझे एक ट्रंक कॉल आया! पौने ३ मिनट का कॉल था और पंडित जी को फोन करके रोने लगे। बेटा कौन हो? फिर उन्हें पूरा किस्सा सुनाया।

उन्होंने कहा, 'आपने तो बेटा मुझे अमर कर दिया!'

मैंने उत्तर दिया, 'आपने तो मेरी जिंदगी बदल दी, मैं क्या आपको अमर करूँगा!'

फिर बोले, 'आपने तो मुझसे पूछा भी नहीं, कभी बताया भी नहीं!'

मैंने उत्तर दिया, "आपने यहाँ ऐसे काम किये हैं, कि आपसे क्या पूछते! ये तो बहुत छोटी-सी चीज की है, आपके लिए भी नहीं की है। मेरी जो श्रद्धा है आपके लिए, उसी को खाली व्यक्त किया है, बस!"

तीन मिनिट के कॉल में, बहुत समय तो वे भावनाओं में रोते रहे! बाद में उनकी उनकी चिट्ठी भी आई! गहरी आत्मीयता के पल थे वे!

(जैसा कि श्री संदीप अग्रवाल ने शौर्य प्रकाश, लक्ष्य तुलसियान, नमन जैन, कुमार अभीक्षित नारायण आदि को बताया।)

कक्षा अभ्यास

संवाद लेखन

संवाद लेखन रचनात्मक लेखन के अंतर्गत प्रश्न-पत्र में लिखने को दिया जाता है। समय-समय पर इसके कक्षा-अभ्यास किये जाते हैं। एक रविवार को छात्रावास के सभी छात्र फिल्म देखने गये। फिल्म थी, अमिताभ बच्चन, डैनी अभिनीत "ऊँचाई!" इस फिल्म पर छात्रों की मिली-जुली प्रतिक्रिया थी। ललशा नवमी के छात्रों से संवाद लेखन करवाने का निश्चय किया गया। छात्रों की फिल्म के बारे में गपशप सुनकर इसी विषय पर संवाद लेखन करने को कहा गया। कुछ रोचक, कुछ चुटीले और कुछ निराशाजनक संवाद लेखन अभ्यास-पुस्तिका में देखे गये। उनकी अनुमति के बिना आपके लिए प्रस्तुत हैं कुछ संवाद, छात्रों के नटखटपन की एक मिसाल!

योगेश- अरे भाई जो फिल्म हम स्कूल की तरफ से देखने गए थे वह कितनी बकवास थी!

शुभम- नहीं योगेश भाई! तुम और क्या चाहते हो? इतनी अच्छी फिल्म तो थी। और यह शुक्र मनाओ कि हम फिल्म देखने गए थे।

धनराज- अरे! फिल्म देखते समय तो मेरा दरवाजा तोड़कर भाग जाने का मन कर रहा था।

शुभम- लेकिन यह तो बताओ कि दिक्कत क्या थी?

योगेश- अरे यार! तुम दिक्कत की बात कर रहे हो? इतनी तो दिक्कत थी। पहली दिक्कत कि कहानी में दम नहीं था।

शुभम- क्यों?

योगेश- अरे! हमारे जितनी उम्र के लोग जब इतना ऊँचा पहाड़ नहीं चढ़ पाते तो तीन बूढ़े लोग कैसे चढ़ गए? तो अच्छे मित्र हैं न?

हार्दिक भाटिया
कक्षा-दशमी, रानोजी सदन

मैं और मेरा मित्र बात कर रहे थे और अचानक फिल्मों की बातें शुरू हो जाती है।

पंडित-अरे! तुमने "ऊँचाई" देखी? क्या मस्त फिल्म है! मुझको तो मजा आ गया।

साहिल- हाँ! तो अच्छी लगेगी, क्योंकि तुमको तो हर एक फिल्म पसंद आती है।

लेकिन मुझको तो बहुत बेकार लगी। कोई मतलब नहीं था! खाली पैसे के चक्कर में बनाई गई।

साहिल-अरे भाई! यह बहुत बुरी बात है न! तुम जो बोल रहे हो। उसमें भी मित्रता के बारे में बात की गई है। हम

पंडित-अच्छे मित्र हैं तो क्या? कुछ भी कर लोगे? तुम चारों इतनी ऊँचाई चढ़ लोगे मेरे लिए?

साहिल- हाँ! क्यों नहीं?

पंडित- सब बोलने की बात है। जितना इस फिल्म में दिखाया गया है, उससे भी बहुत मुश्किल है, यह।

साहिल- हाँ, वह तो है! लेकिन, तुम्हारे लिए कोई भी मुश्किलों को पार कर सकता हूँ!

पंडित-अरे, जाओ! सब फेंक रहे हो।

साहिल-तुम मत मानो! आजमा कर देख लो।

पंडित- अरे, निकल जाओ! तुम नहीं कर पाओगे। एक कदम तो चला नहीं जाता, बड़े आए पहाड़ चढ़ने वाले!

मैं और मेरे मित्र एक बड़ी वाहियात फिल्म देखने गए थे।

पंडित- भाई! इतनी बेकार फिल्म कभी नहीं देखी कुछ भी वाहियात किस्म की कहानी थी।

साहिल- यार, पर मूवी तो अच्छी थी। कहानी भी ठीक-ठाक थी। अभिनेताओं ने भी अच्छी एक्टिंग की।

पंडित-(उसकी बात काटकर) भटा, अच्छी एक्टिंग की थी उसने! तौबा-तौबा! पूरा मूड खराब कर दिया। सारा पैसा बर्बाद किया है, मेरा इस मूवी ने!

साहिल- वैसे भी तुझे ऐसी अच्छे संस्कार वाली मूवी कहाँ पसंद आती है? तुझे तो!

पंडित- (उसकी बात काटकर) क्या बोलना चाहता है तू?

साहिल- यही कि तुझे तो बस उटपटाँग चीजें पसंद हैं!

(क्लास में एक बोरिंग पीरियड (नीरस) में)

हर्षित- अरे यार! एक तो यह बोरिंग पीरियड, ऊपर से वह मूवी। काश! पिछले रविवार कैफे ही हो गया होता! (उदास आवाज में) कुछ खाने को ही मिल जाता!

स्वरित- बात तो सही है। (अपनी बातें गुस्से में कहते हुए) न ही वह मूवी अच्छी थी, न ही कुछ और अच्छा खाने को मिला।

हर्षित- हाँ, बात तो सही है।

स्वरित- काश! छुट्टियाँ जल्द आ जाएँ।

हर्षित- ऐसी क्या बात है?

स्वरित - मैं इन ठंड के दिनों में दुबई घूमने जा रहा हूँ!

हर्षित- मैं भी दुबई जा रहा हूँ!

स्वरित- तुम कहाँ रुक रहे हो?

(पीरियड ओवर हो जाता है।)

हर्षित सिंह
कक्षा दसवीं, माधव सदन

पंडितः साहिल!इस 'ऊँचाई' फिल्म के बारे में तेरा क्या कहना है?

साहिलः मुझको तो यह फिल्म पसंद नहीं आई।

पंडितः पर ऐसा क्यों? मुझे तो यह फिल्म बहुत पसंद आई।

साहिलः इस फिल्म का विषय बहुत ही अजीब था।

पंडितः पर, इस फिल्म ने मेरा दिल जीत लिया था। इसमें इतने सारे अच्छे अभिनेता भी थे।

साहिलः अभिनेता तो इसमें अच्छे थे! पर, फिल्म बहुत लंबी थी और इसमें बहुत से बेफिजूल के मोड़ भी थे।

पंडितः कोई बात नहीं! सबका अपना एक अलग नजरिया होता है।

साहिलः सही बात है। तुझे पता है कि मुझे इस फिल्म में क्या पसंद आया?

पंडितः क्या? ऐसा क्या पसंद आया तुझे इस फिल्म में?

साहिलः उनकी दोस्ती कितनी गहरी है! बिल्कुल हमारी तरह!!

पंडितः सही कहा!

(फिल्म की टिकट खरीदते समय)

मैं-मित्र यह तो बूढ़े लोगों की है। यह अच्छी नहीं होगी।

मित्र-तुम ऐसा कैसे कह सकते हो?

मैं- क्योंकि यह पुराने अभिनेताओं की है।

मित्र- चौककर बोला अरे तो उससे क्या हुआ?

मैं- अरे! लोग मजाक उड़ायेंगे।

मित्र - अच्छा! और जब पुराने गाने सुनता है, तब?

मैं- अरे वह तो मेरा शौक है।

मित्र- हाँ! तो जैसे पुराने गाने गाता है, वैसे ही यह देख ले।

(मैं और मेरा मित्र सिनेमाघर से निकलते हुए)

मैं- यह फिल्म तो बहुत अच्छी रही। तुम्हारा क्या कहना है?

मेरा मित्र- (गुस्सा होते हुए) तुम यह क्या बात कर रहे हो? तुम यह बात कैसे कह सकते हो? इसे तो मैं शून्य दशमलव पाँच (0.5) रेटिंग दूँगा।

मैं- शायद! तुमने इस फिल्म का महत्व ही नहीं जानते और यह फिल्म क्या बात कहना चाहती है?

मेरा मित्र- अगर तुमने 'भेड़िया' देखि हो। फिर तुम्हें समझ आएगा कि एक फिल्म का क्या मतलब होता है?

मैं- (व्यंग्य से) तुम्हें इधर फिल्म देखने ही नहीं आना था तो, तुम इधर आये ही क्यों?

मेरा मित्र- इस फिल में न ही कोई एक्शन, न ही कोई ड्रामा या न ही कोई खुफिया चीज।

मैं- अरे! अरे! भाई, मैं तो यह कबसे समझा रहा हूँ कि फिल्म का मतलब बस यह नहीं होता।, और भी कुछ होता है।

स्वरित वार्ष्णेय
कक्षा दसवीं, जयाजी सदन

कक्षा अभ्यास

हार या हार

श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द ऐसे शब्द होते हैं, जिनकी वर्तनी में बहुत कम अंतर होता है, सुनाई एक जैसे पड़ते हैं। अर्थ में अंतर तो रहता ही है। जैसे- अपेक्षा-उपेक्षा। कुछ शब्द होते हैं, जिनकी वर्तनी और उच्चारण समान होते हुए भी अलग-अलग अर्थ में प्रयोग होता है। ऐसे शब्द अनेकार्थक-अनेकार्थी कहलाते हैं। जैसे- हरा = हरा रंग और मन प्रसन्न होना या फिर क्रिया का प्रयोग हरा देना। इन शब्दों का सुंदर अनुप्रयोग कविता में देखा गया है। यहाँ एक उदाहरण प्रस्तुत है। महारानी सीता के बारे में कवि कहता है, "तीन बेर खाती थी अब वो तीन बेर खाती है!" इसमें पहले "बेर" का अर्थ है- (तीन) बार। दूसरी बार में उस शब्द का अर्थ है- बेरी के फल बेर। कविता में इस सुंदर "काव्य संयोजन" को अलंकार कहते हैं! प्रस्तुत काव्य-पंक्ति में यमक अलंकार प्रयुक्त हुआ है।

कक्षा-अभ्यास के दौरान ऐसा ही प्रसंग हुआ कि छात्रों को रचनात्मक लेखन के लिए ऐसे ही एक अनेकार्थी शब्द "हार" विषय के रूप में दिया गया। लिखने के लिए लघुकथा, अनुच्छेद लेखन, लेख या जो उनका मन कहे, स्वतंत्रता दी गई। आप ही पढ़िये ये रोचक रचनाएँ। कक्षा-अभ्यास होने के कारण, इसमें अनेक व्याकरणिक या तथ्यात्मक दोष हो सकते हैं, कृपया अनदेखी करें! सिर्फ उनकी रचनात्मक संभानाएँ और विचारों की विविधता देखें! - सम्पादक

भारत की क्रिकेट टीम, सन् १९८३ के पहले कई सारे क्रिकेट के विश्व कप में हिस्सा लेती रही थी। उन्होंने लगभग अपना हौसला भी खो दिया था, इसे जीतने का। जब सन् १९८३ के वर्ल्ड कप जीता था, यह उन्होंने लगभग ३० से २५ साल बाद जीता था। बड़े खुश हुए इसके बाद और उन्हें उनका हौसला भी वापस मिल गया था।

हमें इससे यह पता चलता है कि हार एक ऐसी चीज है, जिसका हम तरीके से सामना कर सकते हैं। एक तो हम इससे अपनी गलती सीखें, उसे अपने आने वाले समय में ठीक कर सकते हैं। दूसरे, हम इसका सामना न करके अपने हौसले को कमजोर भी कर सकते हैं।

अतः यह हमारी ऊपर है कि हम हार का किस प्रकार से सामना करें। मैं आखरी में, एक ही पंक्ति बोलना चाहूँगा, हार के जीतने वाले को हरिहर कहते हैं।

नक्ष मनध्यानी
कक्षा-दसवीं, जीवाजी सदन

मुझे हारना बिल्कुल पसंद नहीं पर! यदि अगर आप अपनी जिंदगी में यह सीख लें कि हार-जीत होती रहती है, तो वह बहुत बड़ी बात होगी। जिंदगी में हार-जीत तो चलती रहती है परंतु, अपने पर निर्भर करता है कि हम अपनी गलतियों से कितना सीखते हैं। आप दुनिया में कितनी भी मेहनत कर लो पर, हर इंसान गिरकर ही जीतता है।

कक्षा का एक अन्य छात्र

एकदिन, यहाँ सिंधिया स्कूल में इंटर हाउस फुटबॉल प्रतियोगिता का आयोजन हुआ जो एक हफ्ता चली। मैं और मेरी टीम को लगा कि हम पहले के दो खेल या मैच जीत जायेंगे। पर हमने यह नहीं सोचा था कि पहला ही मैच पैनल्टी के कारण हार जायेंगे। इस हार के बाद भी, हमें विश्वास था कि तीन में से दो मैच ही तो बचे हैं। बस इन्हें जीत गए तो प्रतियोगिता में आगे जाना मुमकिन है। कहाँ कड़ी मेहनत? कहाँ सबका भरोसा? और कहाँ यह विश्वास?

इन सबके साथ जब हम मैदान पर उतरे तो ऐसा लगा कि यह बस हमारा है। यह जो ज्यादा विश्वास और लापरवाही दिखाई हम सबने, उसने हार दिलवा ही दी। अब क्या ही करें इस विश्वास का! हार तो मिली थी। औरों के मुताबिक हार का अर्थ होता है कि अगर एक बार पराजय प्राप्त हो गई तो विजय प्राप्त करना नामुमकिन है।

स्वरित वार्ष्णेय
कक्षा-दसवीं, जयाजी सदन

अब दुनिया के आलसियों की रचनात्मकता की मिसाल। ये आलसी स्वयं कुछ नहीं करते, बल्कि औरों के लिए अलबत्ता कुछ कार्य छोड़ देते हैं कि, आप उनके दिये कार्य करते रहिए और दुनिया में व्यस्त रहिए। उसने कथा को उस मोड़ छोड़ा है कि कोई उसे पूरा किये बगैर नहीं रह सकता क्योंकि 'आगे क्या हुआ?' ये प्रश्न आपको सोने नहीं देगा। तो निम्नलिखित अधूरी कथा (कम-से-कम शीर्षक लिखने की जहमत नहीं उठानी पड़ेगी) पढ़कर उसे पूरा करने के लिए दिमाग के घोड़े दौड़ाइए-

हार लेते-लेते हार गया

एक चाँदनी रात में, दो दोस्त रोहन और शिवम बातें करते-करते खेत की निगरानी कर रहे थे। शिवम बोला, 'रोहन, तुम्हें पता है, गाँव में नया बैंक खुला है। खुलते ही हमारे पास के गाँव वाले भी यहीं पर आते हैं, अपने पैसे जमा करने। रोहन चुपचाप शिवम की बातें सुन रहा था और हाँ-हाँ में जवाब दे रहा था।

अगले दिन ...

(उस आलसी छात्र को पूरा यकीन है कि कहानी पूरी करते-करते आपको एक साल लग सकता है। तो उपलब्धि के अगले अंक तक इसे पूरा करके भेजिए। संतोषजनक निष्कर्ष वाली रचनात्मक कहानी को न केवल पुरस्कृत किया जाएगा, बल्कि आपके छायाचित्र के साथ प्रकाशित भी किया जाएगा।)

बीते दिनों की बात

आज भी याद तुगलक नाटक को कभी नहीं भूल पाऊँगा!

मैंने अपनी जिंदगी में बहुत तरीके के नाटक किए हैं, पर मैंने कभी भी ऐसा नाटक नहीं किया, जिसमें मुझे इतने बड़े-बड़े डायलॉग मिले! इस नाटक की मुझे सबसे ज्यादा अच्छी और मुश्किल बात लगी कि मेरे डायलॉग सिर्फ हिंदी में नहीं थे। दरअसल उसमें हिंदी और उर्दू मिली हुई थी। हमारे नाटक का नाम था तुगलक।

यह नाटक मेरी जिंदगी का सबसे ज्यादा अच्छा और उतना ही मुश्किल नाटक था। जब मुझे इस नाटक की स्क्रिप्ट मिली तो मुझे बहुत ज्यादा डर लगने लगा, क्योंकि मेरे बहुत ज्यादा डायलॉग थे और बहुत ज्यादा मुश्किल शब्द भी थे, जिन्हें मुझे याद करने मैं मुश्किल हो रही थी। सबसे ज्यादा मुश्किल मुझे उर्दू के शब्द याद करने में आ रही थी।

और रोज-रोज रात को और दोपहर को अभ्यास करवाया तभी, मेरी समझ में आया कि मैं अपने नाटक में बहुत अच्छा करना चाहता था। तो मैंने गणपत सर की मदद ली। उन्होंने मुझे नाटक में और ज्यादा बेहतर बनाया। मुझे राजा का पात्र करके बहुत अच्छा लगा, मैं अपने राजा के रोल में पूरा घुस चुका था। पर, पूरी तरीके से नहीं घुस पाया था।

इस नाटक ने मुझे बहुत सहारा दिया है और एक चीज जरूर बताई है कि मैं अपनी जिंदगी में और बहुत सारे नाटक कर सकता हूँ। मुझे एक और चीज सिखाई है कि मैं मंच पर जाने से कभी नहीं घबराऊँगा। मैं तुम तुगलक नाटक को कभी नहीं भूल पाऊँगा।

उज्जवल वर्मा
पूर्व छात्र, जयाजी सदन

हिन्दी साहित्य सभाः भाषा-समृद्धि एवं अभिव्यक्ति का मंच

किसी भी समाज में व्यक्तिगत व सामाजिक विकास के लिए उत्कृष्ट वक्तृत्व क्षमता और रचनात्मक अभिव्यक्ति का होना अत्यंत आवश्यक है। हिन्दी साहित्य सभा हिंदी विभाग के अंतर्गत एक ऐसा मंच है जो सह शैक्षणिक क्रियाकलापों व गतिविधियों को एक दिशा देता है। इस सभा का मुख्य उद्देश्य छात्रों में सोचने, समझने व सोच-समझकर बोलने का कौशल विकसित करना है। हिन्दी साहित्य सभा के सदस्यों को हम तीन भागों में विभाजित करते हैं:- हिन्दी बाद विवाद , वाग्मिता एवं हिंदी रंगमंच।

वाग्मिता या वाक्पटुता

पहले भाग में उन विद्यार्थियों को स्थान दिया जाता है जिन्होंने अभी तक किसी भी सभा के समक्ष अपने विचार प्रस्तुत नहीं किए हैं और जो इस क्षेत्र में आगे बढ़ना चाहते हैं, उन्हें सर्वप्रथम वाग्मिता या वाक्पटुता का अभ्यास करवाया जाता है जिसमें गद्य या पद्य के अंशों का भावपूर्ण वाचन किया जाता है। इसमें स्मरण शक्ति और भावों के प्रदर्शन पर जोर दिया जाता है। उन्हें विश्व के महान नेताओं अथवा चर्चित हस्तियों के भाषण सुनवाए जाते है और इस प्रकार सोचने-समझने की प्रक्रिया प्रारंभ हो जाती हे। इसके अंतर्गत हम भाषण के अतिरिक्त कहानी से आगे, कहानी को पूर्ण करना, समाचार वाचन आदि कुशलताओं पर भी कार्य करते हैं। आगे चलकर हम विद्यार्थियों को अंतर छात्रवासीय एवं अखिल भारतीय प्रतियोगिताओं में भाग लेने को उत्साहित करते हैं।

समूह-ब अंतरसदनीय वाग्मिता प्रतियोगिता
२१ अगस्त २०२३
प्रथम-दौलत सदन (२४१.५)
द्वितीय- महादजी (२१९.५)
तृतीय- जयाजी (२१५.५)
चतुर्थ- जयप्पा (२०९.५)
सर्वोत्तम वक्ता-विवेक सिंह
द्वितीय श्रेष्ठ वक्ता-अर्णव जोशी, तनिश अग्रवाल

वाद-विवाद

वाद-विवाद जीवन का एक अभिन्न अंग है। प्रातःकाल जागने के बाद से ही हमारा स्वयं से बाद विवाद चलता रहता है क्या करें? क्या न करें? क्या कब करें? कैसे करें? करना चाहिए या नहीं? क्यों करें? यह तो हुआ स्वयं से बाद विवाद अथवा आत्ममंथन या आत्मचिंतनद्य परन्तु जब हम दूसरों के विचारों को सुनते है और उससे सहमत नहीं होते और उसके लिए हम विभिन्न प्रकार के तर्क प्रस्तुत करते हैं। अपने तर्कों के द्वारा अपनी मान्यताओं कुछ सिद्ध करने का प्रयास करते हैं। निश्चित रूप से यह व्यक्ति को और समाज को एक दिशा देता है, और हम सुमार्ग पर चलते हुए सहज ही आगे बढ़ते चले जाते हैं। प्राचीन काल के शास्त्रार्थ ही आज के बाद विवाद के रूप है। समाज को सुचारू रूप से संचालित करने के लिए इनकी अत्यंत आवश्यकता है इसलिए हिन्दी साहित्य सभा के अंतर्गत हम विद्यार्थियों को बाद विवाद के विभिन्न प्रचलित रूपों से परिचित करवातें है। वाद- विवाद की ऑक्सफोर्ड शैली, केम्ब्रिज शैली तथा संसदीय शैली से परिचय के साथ ही उनका अभ्यास भी करवाया जाता है। टर्नकोट शैली में विद्यार्थियों की संतुलित सोच को अग्रसर करने का प्रयास किया

जाता है तो मात्र १ मिनट जिसे जैम भी कहते हैं उसमें बच्चो की त्वरित चिंतन शैली का भी परीक्षण किया जाता है। छात्रों को विभिन्न छात्र संसदों के उत्कृष्ट छात्र-छात्राओं के भाषण, उनकी वक्तृत्व कला व उनकी शैली के संबंध में उनसे प्रश्न किए जाते हैं। उत्कृष्ट वाद-विवादों के वीडियो दिखाकर व सुनाकर छात्रों के वक्तृत्व कला को और पैना किया जाता है। १० सेकेण्ड का विराम द्य इसमें अंतर छात्रवासीय वाद विवाद प्रतियोगिता के अतिरिक्त अखिल भारतीय अंतर्विद्यालयी वाद विवाद प्रतियोगिता में भाग लेने के अवसर भी प्राप्त होते हैं। राष्ट्रीय इंडियन मिलिट्री कॉलेज, दून स्कूल, वेल्हम गर्ल्स स्कूल, वेल्हम बॉयज स्कूल, देहरादून, माता गायत्री देवी गर्ल्स स्कूल, जयपुर, डेली कॉलेज, इंदौर, मेयो कॉलेज, मेयो कॉलेज गर्ल्स स्कूल, अजमेर, विद्या देवी जिंदल स्कूल हिसार, वसंत वैली स्कूल, हेरिटेज स्कूल, नई दिल्ली, पाइन ग्रोव स्कूल, धर्मपुर, (हिमाचल प्रदेश) बिड़ला पब्लिक स्कूल, पिलानी, आदि अनेक विद्यालयों में जाकर छात्रें को अपनी वाद-विवाद क्षमता प्रस्तुत करने का अवसर मिलता है।

रंगमंच

जीवन एक रंगमंच है और यहाँ हम सब अपने-अपने हिस्से का अभिनय करते हैं। जीवन में तो हम अभिनय करते हैं परन्तु रंगमंच पर हम जीवन को जीते हैं और जीवन को जीने के सही तरीके को जानने के लिए, समाज को उसका आईना दिखाने के लिए, समाज के मनोरंजन के लिए, स्वांत सुखाय के लिए जीवन में रंगमंच बहुत सहायक सिद्ध होता है। आपस में मिलकर कार्य करने का सुख, किसी और के जीवन को स्वयं जीने का अनुभव वास्तव में व्यक्ति को पूर्णता की ओर ले जाता है। नाटक में सभी कलाएँ समाहित होती है। वक्तृत्व कला, वस्त्रभूषण-सज्जा, मंच-सज्जा, चित्रकला व हस्तकला, संगीत-कला, प्रकाश-व्यवस्था आदि और इस सबसे बढ़ कर कम शब्दों में या मूक अभिनय के द्वारा अपनी बात को अधिक से अधिक दृढता से रखना भी इसकी एक विशिष्ट कला है। इसमें छात्रों को अंतर छात्रवासीय एकांकी प्रतियोगिता के अतिरिक्त, फ्रेशर्स डे नाटक, नुक्कड़ नाटक, अंतरविद्यालयीय नाट्य प्रतियोगिताओ व वार्षिक नाटक, संस्थापना दिवस समारोह में मंचित नाटक में भी भाग लेने का स्वर्णिम अवसर मिलता है। विद्यालय के अनेक छात्रें ने नाटक और फिल्म के क्षेत्र में अभूतपूर्व कार्य किए हैं।

आशा है कि आप भी हिन्दी साहित्य सभा की किसी भी एक रचनात्मक गतिविधि से जुड़कर अपने उज्ज्वल और यशस्वी भविष्य बनाने की दिशा में कार्य करेंगे!

मनोज कुमार मिश्रा
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग

भविष्य में शिक्षार्जन

(शिक्षाविद एवं लेखक श्री अरुण कपूरके आलेख पर एक विहंगम दृष्टि)

जैसा कि लेख में व्यक्त किया गया है कि सीखने की प्रक्रिया की भी अपनी एक यात्रा होती है जिसमें समय के साथ विविध उतार-चढ़ाव आते हैं और उसे परिवर्तन को दवाब सहित प्रेरित करते हैं। इसमें एक ज्वलंत सवाल उठाया गया है कि आज के प्रतिकूल समय के सन्दर्भ में सोचें तो शिक्षार्जन का भविष्य कैसा होगा? इसका एक और सिरा है शिक्षार्जन का भविष्य कैसा होना चाहिए? हालाँकि वर्तमान सन्दर्भ में ऐसे सवाल आना स्वाभाविक है तथापि ऐसा गंभीरतापूर्वक चिंतन करना अधीरता होगी। मगर लेखक ने कक्षा में बच्चों की संख्या और विद्यार्थियों को भवन की चारदीवारी से बाहर निकलने का जो संकेत किया है वह इस दिशा में शिक्षार्जन के भविष्य की आकृति अवश्य निर्धारित कर देता है या एक आभास देता हुआ प्रतीत होता है।

तालाबंदी के बदले परिदृश्य में उन संस्थानों में हलचल मच गई जो व्यापार की आधारभूमि पर निर्मित हुए थे और जिन्होंने सांसारिक भव्यता का जी-तोड़ प्रदर्शन किया था। उन संस्थानों को अधिक कठिनाइयों का सामना नहीं करना पड़ा जो शिक्षादान के पुरातन मूल्यों की आधारभूमि पर बने और उनका अब तक पालन करते रहे।

लेखक ने साहसी वक्तव्य देते हुए अपने लेख में कहा है कि तकनीकी माध्यमों से जो शिक्षादान का कार्यक्रम चल रहा है, वह मुख्यतः व्यापार का ही अन्य रूप है। यह सांकेतिक कुठाराघात आज की शिक्षा पद्धति के खोखलेपन पर है। लेखक ने कार्य-प्रक्रिया के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा है कि अध्यापक का विकास उसकी अध्यापन-प्रक्रिया में निहित होता है।

बच्चों में सीखने को बेहतर करने के लिए तकनीकी कितनी मात्रा में और तकनीकी की बारंबारता कितनी होय यह भी विचारयोग्य बिंदु है। लेखक ने यह भी चिंता जताई है कि तकनीकी माध्यमों से अध्यापन में विद्यार्थी के समग्र व्यक्तित्व विकास में अहम भूमिका निभाने वाले तत्व छूटने की आशंका है। आज सभी लोग मा। अकादमिक हानि की पूर्ति में लगे हुए हैं।

लेखक ने अध्यापक समुदाय का महत्वपूर्ण बिंदु की ओर ध्यान आकर्षित किया कि जब अध्यापक एवं विद्यार्थी साथ-साथ पठन-पाठन में लीन होते हैं तो एक शैक्षिक वातावरण निर्मित होता है। यदि बदली हुई परिस्थिति में तकनीकी माध्यमों से पढ़ाकर हम ये शैक्षिक वातावरण निर्मित कर पाएँ तो ये बहुत बड़ी उपलब्धि होगी।

पढने-पढ़ाने के पारंपरिक साधनों के बदलने से अचानक शिक्षा का परिदृश्य बदला है। इस परिदृश्य में आगे बढ़ने का एक ही विकल्प है कि संवर्द्धित शिक्षा पद्धति को अपनाएं और आगे बढेंय इसका सीधा-सीधा अर्थ है कि अब हमें एक सीखने-सिखाने की नयी कार्य-योजना पर काम करना होगा।

लेखक ने पुरातन-आधुनिक-अद्यतन संसाधनों से मिलजुली कार्य-योजना पर कार्य करने की ओर संकेत किया है जो कि स्वाभाविक है और मेरे विचार अधिकतर लोग इसकी अनुशंसा ही करेंगे। लेख के अंत में श्री कपूर ने कुछ यक्ष प्रश्न किये हैं, जिनके सटीक उत्तर तो समय ही दे सकेगा।

जैसे कि -विद्यार्थी डिजिटल-व्यवस्था में कैसे सीखेगा? इसका उत्तर लेख में परोक्ष रूप से दे दिया गया है। वस्तुतः बदला परिदृश्य ज्यों कि त्यों है बस पृष्ठभूमि बदल गई है।

कितने विद्यार्थी शिक्षा-भवन में ध्यानपूर्वक पढ़ पाते हैं? उत्तर है- २५ में से १४। कितने विद्यार्थी शिक्षा-भवन से बाहर जाने की जुगत ढूँढते रहते हैं? उत्तर है, २५ में से १८। कितने विद्यार्थी हैं जो हर परिस्थिति में अध्यापक से शिक्षा लेकर ही रहते हैं? उत्तर है- २५ में से ५।

तकनीकी माध्यम से सीधे पढ़ाने में कक्षा का आकर कितना होना चाहिए?

मेरे विचार से १८ से २३ विद्यार्थियों की कक्षा इस माध्यम के लिए सर्वथा कल्याणकारी होगी। विषय के लिए अध्यापन सर्वथा उचित समय अवधि ५० मिनिट व्यवहार योग्य है।

आज के सन्दर्भ में ये आभासी वास्तविकता कैसे दुर्जेय खिलाड़ी का रूप ले सकती है?

मेरे विचार से ये आभासी जगत आज के संसार की वास्तविकता है। आधा संसार तकनीकी के विविध साधनों को अपना चुका है। पहले से ही माता-पिता इसके भयानक परिणामों से डरे हुए थे और अब अनचाहे इसे गले लगा रहे हैं क्योंकि ये साधन अब बच्चे के भविष्य-निर्माण में महति भूमिका निभाने को हैं।

लेख में ये महत्वपूर्ण तथ्य रेखांकित है कि बदले परिदृश्य में अभिभावकों को हमें अपने साथ भागीदारी के लिए आमंत्रित करना ही होगा। अब अभिभावकों की भागीदरी का प्रतिशत बराबरी का है।

और अंत में लेखक इस बदले परिदृश्य को शिक्षा में आमूलचूल परिवर्तन लाने के एक स्वर्णिम अवसर के रूप में देखता है, जोकि लेखक के भीतर छिपे अध्यापक की पुकार है।

संक्षेप में कहें तो लेखक ने एक संवर्द्धित शिक्षा पद्धति की कार्य योजना बनाने और उसे अपनाने पर बल दिया है।

गणपत स्वरूप पाठक
हिंदी, संस्कृत अध्यापक

सीखने का भविष्यः ए.आई. आधारित शिक्षा

"हमारी बुद्धिमत्ता ही हमें इंसान बनाती है और एआई उस गुणवत्ता का विस्तार है।"

- यानलेकोन प्रोफेसर
न्यूयॉर्क विश्वविद्यालय

एआई अब हमारे दैनिक जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और अर्थ व्यवस्था के हर क्षेत्र पर इसका गहरा प्रभाव पड़ता है। एआई विनिर्माण, खेल और शिक्षा सहित विभिन्न उद्योगों में हमारे काम करने और सीखने के तरीके को बदल रहा है। सभी उम्र के छात्रें के लिए, शिक्षा में एआई नए अवसर प्रदान करता है।

एआई लाभकारी है या हानिकारक, इस पर बहस, बहस का विषय हो सकती है, मगर उपयोगी परिणाम प्रदान नहीं कर सकती है। इसके बजाय, शिक्षा सहित विभिन्न उद्योगों को आगे बढ़ाने और सुधारने के लिए एआई की क्षमता का उपयोग करने पर जोर दिया जाना चाहिए।

एआई में शिक्षा को कई तरीकों से बदलने की क्षमता है:

सीखने के अनुभवों को निजीकृत करें: एआई प्रत्येक छात्र की माँगों और सीखने की शैलियों को फिट करने के लिए सीखने के अनुभवों को निजीकृत कर सकता है। यह गारंटी देता है कि छात्रें को व्यक्तिगत मार्गदर्शन और समर्थन प्राप्त होगा, जिससे शिक्षा में सुधार होगा।

बेहतर शिक्षक समर्थनः

एआई सिस्टम शिक्षकों को विभिन्न प्रकार के कर्तव्यों में मददकर सकता है, जिसमें ग्रेडिंग, कार्यालय कार्य और छात्र प्रदर्शन में डेटा-संचालित अंतर्दृष्टि प्रदान कर नाशा मिल है। यह प्रशिक्षकों को परामर्श और निर्देश पर अधिक ध्यान केंद्रित करने में सक्षम बनाता है।

पहुँच क्षमताः एआई- संचालित समाधान विकलांग, भाषा बाधाओं और अन्य कठिनाइयों वाले लोगों के लिए शिक्षा की पहुँच में सुधार कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, टेक्स्ट-टू-स्पीच, स्पीच-टू-टेक्स्ट और अनुवाद जैसे उपकरण विभिन्न प्रकार के विद्यार्थियों को अध्ययन करने में मदद कर सकते हैं।

२४/७ उपलब्धताः एआई द्वारा संचालित ऑनलाइन शैक्षिक प्लेटफार्मों की मदद से, दुनिया भर के छात्रें के पास अब शिक्षा अब अधिक आसान एवं छात्र की सुविधानुसार पहुँच रही है।

संवर्धित वास्तविकता और आभासी वास्तविकताः एआई-संचालितए आर और वीआर प्रौद्योगिकियाँ गहन शिक्षण का वातावरण तैयार कर सकती हैं जो अमूर्त विचारों को स्पष्ट रूप से चित्रित करती हैं और छात्रों के शिक्षा से जुड़ाव को बेहतर बनाती है।

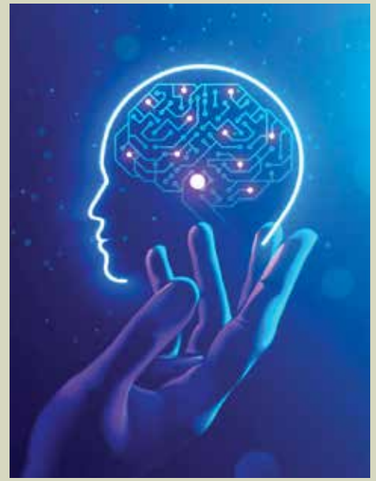

अतएव, अधिक रचनात्मक दृष्टिकोण इस बात पर ध्यान केंद्रित करना है कि शिक्षा में सुधार के लिए एआई का उपयोग कैसे किया जाए और इससे आने वाली बाधाओं और अवसरों को कैसे हल किया जाए। हम शिक्षा में एआई को अपनाकर सीखने में सुधारकर सकते हैं, छात्रों तक अपनी पहुँच को प्रोत्साहित कर सकते हैं और छात्रें को भविष्य की चुनौतियों के लिए बेहतर ढंग से तैयार कर सकते हैं। यह सुनिश्चित करने के लिए किए आई शैक्षिक परिदृश्य में लाभकारी योगदान दे, सहयोग करना, अनुसंधान करना और विकास करना महत्वपूर्ण है।

अखिल लक्ष्मन
एआई- शिक्षक

पुस्तकालय में जाकर इन्हें जरूर पढ़ो!

किताब - राजयोग
लेखक- स्वामी विवेकानंद
प्रकाशन - मेपल प्रेस लिमिटेड

किताब - वयं रक्षामः
लेखक- आचार्य चतुरसेन शास्त्री
प्रकाशन - लोकभारती प्रकाशन

किताब - कामायनी
लेखक- जयशंकर प्रसाद
प्रकाशन- मेपल प्रेस लिमिटेड

किताब - निर्मला
लेखक - प्रेमचंद
प्रकाशक -वयु एजुकेशन ऑफ इंडिया

किताब - राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू
लेखक- गोपाल शर्मा
प्रकाशन - डायमंड बुक्स

किताब - जीत' आपकी
लेखक - शिव खेड़ा
प्रकाशक - ब्लॉसमबेर्री इंडिया

किताब - विश्वगुरू विवेकानंद
लेखक - एमः आईः रअनस्वी
प्रकाशन - फिंगर प्रिंट पब्लीशींग

किताब - कथा शिखर
लेखक- हरिशंकर परसाई
प्रकाशन - कौटिल्य बुक्स

किताब - बच्चों के शिक्षाप्रद नाटक
लेखक - डॉ गिरिराजशरण अग्रवाल
प्रकाशन - डायमंड बुक्स

किताब - विकास का पथ
लेखक - स्वेट मार्डेन
प्रकाशन - डायमंड बुक्स

किताब - सूत्रधार
लेखक - संजीव
प्रकाशक - राधाकृष्ण प्राईविट लिमिटेड

किताब - कंकाल
लेखक - जयशंकर प्रसाद
प्रकाशन - मेपल प्रेस लिमिटेड

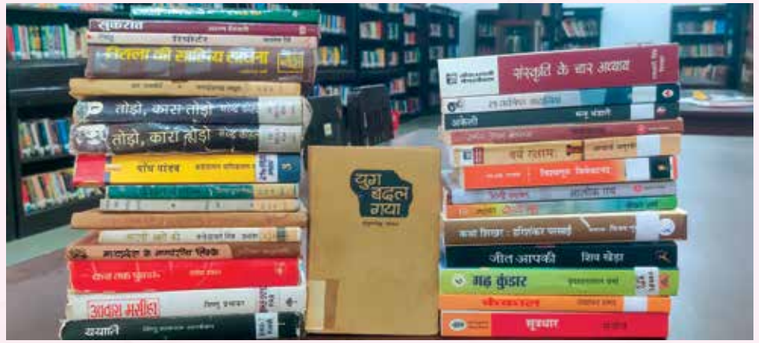

किताब- तितली
लेखक- जयशंकर प्रसाद
प्रकाशन- मेपल प्रेस लिमिटेड

किताब - बारह बजे रात के
लेखक - मुनीश सक्सेना
प्रकाशन- राधाकृष्ण प्राइवेट लिमिटेड

किताब - जगदम्बा बाबू गाँव
आ रहे हैं
लेखक- चित्र मुद्गल
प्रकाशन - रेममाधव बुक्स

किताब - समय-अश्व बेलगाम
लेखक - चंद्रकांता
प्रकाशन- राजकमल प्राइवेट लिमिटेड

किताब - अकेली
लेखक- मन्नू भंडारी
प्रकाशन - रेममाधव प्रेस लिमिटेड

किताब - त्रिशंकु
लेखक - मन्नू भंडारी
प्रकाशन - राधाकृष्ण बुक्स

किताब - कामायनी
लेखक- शंकर प्रसाद
प्रकाशन - लोकभारती प्रकाशन

किताब - तीन निगाहों की एक तस्वीर
लेखक- मन्नू भंडारी
प्रकाशन - राधाकृष्ण प्राइवेट लिमिटेड

किताब - स्वामी रामानंद और जीवन
लेखक- कन्हैया सिंह
प्रकाशन - लोकभारती बुक्स

किताब - अल्फा - बीटा - मामा
लेखक - नानसिरा शर्मा
प्रकाशन - लोकभारती बुक्स

किताब - धर्म युद्ध
लेखक - यशपाल
प्रकाशन - लोकभारती बुक्स

किताब - पच्चीस साल की लड़ाई
लेखक - ममता कालिया
प्रकाशन - लोकभारती बुक्स

किताब - इरावती
लेखक - जयषदर प्रसाद
प्रकाशन - लोकभारती बुक्स

किताब - दो सखियाँ
लेखक - शिवानी
प्रकाशन - राधाकृष्ण प्राइवेट लिमिटेड

किताब - चित्र का शीर्षक
लेखक - यशपाल
प्रकाशन - लोकभारतीय पेपर प्रेस

संकलन- प्रत्यूष अग्रवाल,
नौवीं, महादजी सदन

मार्गदर्शन- श्री हसरत,
पुस्तकालय-अध्यक्ष

श्रीमंत महाराजा माधवराव सिंधिया स्मृति

अंतर्विद्यालयी हिन्दी वाद-विवाद प्रतियोगिता-२०२३

श्रीमंत महाराजा माधवराव सिंधिया स्मृति अंतर्विद्यालयी हिन्दी वाद-विवाद प्रतियोगिता, पहली बार सन् २००१ में, श्रीमंत महाराजा माधवराव सिंधिया की स्मृति एवं उनके हिन्दी भाषा के प्रति प्रेम व लगाव को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए, श्रद्धांजलि-स्वरूप संस्थापित की गई थी। तब से आज तक यह अनवरत जारी है, और भारतवर्ष के ख्यातनाम विद्यालयों के लिए, इस वैजयंती (ट्रॉफी) को पाना प्रतिष्ठा का प्रश्न बन है। प्रतिवर्ष इस प्रतियोगिता में हमारे देश के सभी प्रसिद्ध व प्रतिष्ठित विद्यालय भाग लेते हैं और इन विद्यालयों के सर्वोत्तम प्रतिनिधि-प्रतियोगी अपना श्रेष्ठ योगदान देकर, इस प्रतियोगिता को सफल बनाते हैं।

इस वर्ष, ३ से ४ सितंबर, २०२३ को यह प्रतियोगिता आयोजित की गई। कुछ विद्यालय हमारे प्रतिभागी वर्षो से रहें हैं और कुछ नए नाम भी हमारे साथ हर साल जुड़ते ही हैं। इस साल हमारे विद्यालय एवं सिंधिया कन्या विद्यालय के अलावा, भाग लेने वाले विद्यालय इस प्रकार थे- वसंत वैली स्कूल, नई दिल्ली, द हेरिटेज स्कूल, वसंत कुंज, मेयो कॉलेज, अजमेर, मेयो कॉलेज गर्ल्स स्कूल, अजमेर, साइना इंटरनेशनल स्कूल, कटनी आदि।

हमने इस प्रतियोगिता के प्रारूप में विविधता का समावेश किया है। इस वाद-विवाद में, पहला दौर ऑक्सफोर्ड प्रारूप में हुआ और द्वितीय दौर को टर्नकोट प्रारूप में रखा गया। प्रथम एवं द्वितीय दौर में सभी विद्यालयों के प्रतिभागी सम्मिलित थे।

तीसरे एवं निर्णायक चक्र में, कैम्ब्रिज प्रारूप में प्रतियोगिता हुई। इसमें मात्र ६ (छह) दल पात्रता अर्जित कर सके। सारे प्रतिभागियों ने अपने-अपने विषयों पर अपने विचार बहुत सुंदरता से प्रस्तुत किये। प्रतियोगिता के परिण ाम घोषित करने से पहले, निर्णायकों ने प्रतिभागियों को बेहतर बनाने के लिए, प्रतिभागियों की वाणी एवं भाषा पर सूक्ष्म प्रतिपुष्टि दी।

अंततः, नई दिल्ली से आये वसंत वैली स्कूल ने माननीया मुख्य अतिथि श्रीमती अनामिका सिंह के कर-कमलों से २३वीं श्रीमंत महाराजा माधवराव सिंधिया स्मृति हिन्दी वाद-विवाद प्रतियोगिता की चल वैजयंती प्राप्त की। मेजबान विद्यालय सिंधिया स्कूल, दूसरे स्थान पर पर रहा और तृतीय स्थान पर आये, सिंधिया कन्या विद्यालय के प्रतियोगी।

प्रतियोगिता के निर्णायक-मण्डल में शामिल थे- श्री अनुराग सिंह, सहायक प्राध्यापक, श्यामा प्रसाद मुखर्जी महिला कॉलेज-नई दिल्ली, डॉ. दीपक कुमार जायसवाल, सहायक प्राध्यापक- हिन्दी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, सुश्री श्रुति गौतम, प्राध्यापक, NCWEB सेंटर-दिल्ली विश्वविद्यालय, सुश्री शिल्पी माथुर, अभिनेत्री रंगमंच, जयपुर।

महाराजा माधवराव सिंधिया की स्मृति में सिंधिया स्कूल द्वारा हिंदी वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन-2023

ग्वालियर (चम्बल नवराष्ट्र)। स्वर्गीय महाराजा माधवराव सिंधिया जी की पुण्य स्मृति में सिंधिया स्कूल, दुर्ग ग्वालियर में महाराजा माधवराव सिंधिया स्मृति अंतर्विद्यालयीन हिंदी वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। गत 22 वर्षों से लगातार आयोजित किए जाने वाले इस कार्यक्रम में भारत के 10 प्रतिष्ठित विद्यालयों? वसंत वैली स्कूल नई दिल्ली,? द हेरिटेज स्कूल वसंत कुंज नई दिल्ली,? मेयो कॉलेज अजमेर,? मेयो? कॉलेज गर्ल्स स्कूल अजमेर , वेलहम गर्ल्स स्कूल, देहरादून,जेनेसिस ग्लोबल स्कूल, नोएडा, विद्या देवी जिंदल स्कूल हिसार, साइना इंटरनेशनल स्कूल कटनी, सिंधिया कन्या विद्यालय, ग्वालियर ,सिंधिया स्कूल, ग्वालियर ने भाग लिया। प्रत्येक विद्यालय से तीन प्रतिभागियों ने इस वाद विवाद प्रतियोगिता में हिस्सा लिया। वाद विवाद प्रतियोगिता का प्रथम चक्र ऑक्सफोर्ड पद्धति पर आधारित था जबकि द्वितीय चक्र टर्न-कोट पद्धति पर और तृतीय चक्र कैंब्रिज पद्धति पर आधारित था।

?प्रथम चक्र में सभी 10 विद्यालयों ने भाग लिया जिसमें से सभी विद्यालय द्वितीय चक्र में पहुंचे और अंतिम चक्र में अंकों पर 4 विद्यालयों ने इस वाद विवाद प्रतियोगिता में भाग लिया। जिसके तीन विषय थे- सरकारें द्वारा मुफ्त वितरण समाज को खोखला कर रहा है।, इतिहास के साथ छेड़छाड़ उचित नहीं है।, एक देश एक चुनाव देश के विकास के लिए आवश्यक है। इस बात विवाद प्रतियोगिता के? निर्णायकों में दिल्ली विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ. दीपक कुमार जयसवाल, दिल्ली विश्वविद्यालय के NCWEB सेंटर में अध्यापिका सुश्री श्रुति गौतम, दिल्ली विश्वविद्यालय के श्यामा प्रसाद मुखर्जी महिला महाविद्यालय में प्राध्यापक प्रमुख रहे। प्रतियोगिता में वसंत वैली स्कूल,नई दिल्ली ने प्रथम स्थान प्राप्त किया दूसरे स्थान पर रही सिंधिया स्कूल और तीसरे स्थान पर रही सिंधिया कन्या विद्यालय। अंतिम चक्र में? सर्वश्रेष्ठ वक्ता रहे सिंधिया स्कूल के राघव शर्मा ।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में श्रीमती अनामिका सिंह ने बच्चों को आशीर्वचन दिए। सिंधिया स्कूल के प्रधानाचार्य अजय सिंह उप-प्राचार्य सुश्री निमंत चतुर्वेदी, कंप्यूटर विभाग के प्रभारी राजकुमार कपूर, तथा सह शैक्षणिक कार्यों के प्रभारी धीरेंद्र शर्मा? सहित विद्यालय समस्त शिक्षकगण उपस्थित रहे।

कोई कोशिश बंधन को तोड़ न सकी!

श्री राजा बैनर्जी का विदाई भाषण

एक समय की बात एक युवक की नौकरी लग गई संगीत अध्यापक के तौर पर। कलाकार मन का पंछी होता है। मन के साथ -साथ भावनाओं और तनाव के आकाश में उड़ता रहता है। कुछ समय बाद ही इस नौकरी से उकताने लगा। तब, इस युवक के मार्गदर्शक अध्यापक ने समझाया, "देखो यह जो छात्र है न जितना समय इनके सान्निध्य में बिता सको तो बिता लो । और तब से उन को हर बालक में कान्हा नजर आने लगा है, नटखट गोपाल ! और फिर इस विद्यालय में इन नटखट कृष्ण गोपालों को सिखाते-सिखाते यह युवक अब इतना बड़ा हो गया है कि जिनको बड़े-बड़े लोग भी नमन करते हैं। प्रस्तुत है, उन्हीं की जुबानी उनका विदाई अभिभाषण !

आप सभी को नमस्कार!

विदा के पल अनूठे होते हैं, जब जाने का समय आ गया है तो लगता है कि अभी कुछ समय पहले ही तो आया था । एक-एक कर के आरंभ से अब तक के सभी पल याद आ रहे हैं। उन सबको कह देना बड़ा कठिन है। हृदय भावुक है। बिछड़ने के समय और लगाव बढ़ रहा है।

सन् १४ जुलाई १९९६ मैं इस संस्थान से जुड़ा। आज से २६ साल पहले जब मैं स्कूल में आया तो मेरी उम्र ३४ साल थी डरा-डरा, सहमा-सहमा सा मुझे बिल्कुल पता नहीं था कि इस मिट्टी में इतने साल बिता दूँगा। कई उतार-चढ़ाव देखे। सिंधिया स्कूल की मिट्टी में जादू तो है।

मेरे पूर्व जन्म में कोई संस्कार रहे होंगे तभी यह भूमि मुझे यहाँ खींच लाई है, कई बार मैंने दूसरे स्कूलों में जाने की कोशिश की मगर कभी अपनों ने कभी दूसरों ने अड़ंगा लगा दिया द्य एक बार आसाम वैली स्कूल में जाने का पूरा प्रबंध हो गया, मगर मेरे फूफाजी ने मुझे डाँटकर जाने से मना कर दिया। कारण था कि उस समय आसाम में लड़ाई-झगड़ा हुआ करता था। इस तरह में जा नहीं सका। फिर मस्कट जाने की तैयारी हो गई तो फैमिली वीसा नहीं मिला और से जाना टल गया। ऐसे ही बनारस में, कृष्ण मूर्ति फाउंडेशन से जुड़ने का मन बन गया था। मगर फिर कुछ ऐसे व्यक्तिगत कारण सामने आ गए कि खुद ही मना कर दिया। इस तरह इस मिट्टी ने मुझे कभी छोड़ा ही नहीं।

श्री बी एन चटर्जी कहा करते थे कि इन छात्रों को कृष्ण का बाल स्वरूप समझो तो सब आसान हो जाएगा। बहुत पुरानी बात है मैं कक्षा पाँचवी-छठवीं में ग्वालियर के ही कार्मेल कान्वेंट में पढ़ता था। उस समय अपने माता-पिता के साथ सिंधिया स्कूल में घूमने आया करता था। दरअसल, उस वक्त सिंधिया में मिस्टर बी.एन. चटर्जी थे और नागपुर के समय से वह बचपन के दोस्त थे तो कई बार भी मिलने आते। मैंने सोचा भी नहीं था कि पिताजी के साथ यहाँ आने पर, मेरे भविष्य की बुनियाद पड़ जाएगी और इस मिट्टी से इस तरह जुड़ जाऊँगा।

आज मैं यही कहना चाहता हूँ कि मेरा जीवन सिंधिया स्कूल के छात्रों के इर्द-गिर्द ही रहा है इस जीवन को मैंने अपनी तरफ मोड़ने की कोशिश भी कि मगर दिल का एक ऐसा हिस्सा भी था जो मजबूती से इस स्कूल से बँधा रहा और मेरी कोई भी कोशिश इस बंधन को तोड़ न सकी । जैसे एक बार बॉलीवुड मैं जाकर गायक बनने की धुन सवार हो गई। फिर कुछ समय बीत ने पर तूफान शांत हो गया।

यह बंधन कौन-सा था तो आज समझ पाता हूँ, पहले तो यही कि ऋषि गालव की तपस्थली है, दूसरे गुरु हरगोविंद जी ने इसी भूमि पर अपने कुछ दिन यहाँ गुजारे और अपनी साधना का तेज यहाँ छोड़ा है। तो यह मिट्टी हमें जकड़े रहती है। और सब से महत्वपूर्ण बंधन जिसे कोई तोड़ने की हिम्मत भी नहीं कर सकता है, वह आप सभी छात्रें का प्रेम है! मुझे आपने अपने से सदा जोड़े रखा। आप सभी को बहुत-बहुत धन्यवाद आज आपसे विनम्र अनुरोध है कि आप मुझ से इस प्रेम पूर्ण बंधन से मुक्त करें और दुनिया दारी में जाने दे! इन २६ सालों में आपकी और पहले पढ़े सभी बाल गोपालों के नटखट मेरी यादों को सजाकर ले जा रहा हूँ! आप सभी को फिर से प्रणाम!

खोया हुआ साल

दस्तक

मेरे मौसेरे सारे भाई की शादी ४ महीने पहले हुई थी। ३ दिन पहले ही उसे गंगाराम अस्पताल में भर्ती करवाया था, क्योंकि महामारी के विषाणु ने उसे अपनी जद में ले लिया था। मेरी अपने सारे मुझे प्रिय हैं, सो उसे भी देख आयाय सारे बंधन और पाबंदियों के रहते। मुझे पता ही नहीं लगा कि कब वह रोग मुझे छू गया, पता लगता भी तो क्या करता! हृदय विदारक परिस्थिति थी। २० अप्रैल (२०२१) को उसने अंतिम साँस ली। जब अंतिम संस्कार की बेला आई तो सिर्फ बहु थी, जिसके हाथों की मेहंदी भी फीकी नहीं पड़ी थी। पिता और माँ को बताना उचित नहीं समझा। उन्हें यहाँ-वहाँ की बातें बताते रहे।

किवाड़ खोल दिये

उनके पड़ोस में किसी का देहांत हुआ होगा तो मौसी वहाँ गई होंगी तो उनको भी इस रोग ने डँस लिया। मेरी माता को बार-बार समझाने पर भी नहीं मानीं और पड़ोसी धर्म का पालन करते हुए भोजन बनाकर, उनसे मिलने गए। स्वाभाविक था मैं उन्हें मिलने कार में ले गया था। हालाँकि में गाड़ी में बैठा रहा, उनके लौटने तक।

मुझ पर असर

दो दिन बीते थे, उसे बात को कि मुझे स्वाद आना बंद हो गया। अपने आप को एकाकी कर लिया। माताजी-पिताजी बार-बार कहते कि कुछ नहीं हुआ है तुझे! मगर, मैं हरसंभव एहतियात बरती।

अब माताजी भी

५ मई (२०२१) को माता-पिता की ३९वीं वैवाहिक सालगिरह थी और उसे मनाने का मौका भी नहीं दिया जिंदगी ने। माताजी को विषाणु ने आक्रांत कर दिया। मजबूरन अस्पताल में दाखिल करवाना पड़ा। दवाई चलने लगी। लगा कि फायदा नहीं हो रहा है तो लोगों की सलाह पर १० मई को सरकारी सुपर स्पेशलिटी अस्पताल में भर्ती करवा दिया।

जब दाखिल करवा रहे थे तो एक पहचान वाले ने टोका- मम्मी को बटन वाला मोबाइल दिला दो। उस वक्त में उसके इशारे को नहीं समझा। मगर बटन वाला मोबाइल और अन्य जरूरत की व्यवस्था कर हम लोग घर आ गए।

आपस का बँटवारा

दरअसल, जिंदगी की हकीकत सामने से दिख जाए तो फिर वह जिंदगी क्या? उन दिनों अस्पताल में रोज के हिसाब से काम करने वाले दैनिक वेतनभोगी कर्मचारी थे। जिन्हें किसी से कोई मोह नहीं था, सिवाय वेतन के अलावा मिलने वाले भोग के। यह वे गिद्ध-कौवे थे उन दिनों, जो पशु के मरने का इंतजार करना अपनी बेइज्जती समझते थे। वे सभी पहले ही बाँट लेते थे कि मरीज के मरने पर, कौन-सी चीज उसकी होगी और कौन-सी किसी दूसरे कर्मचारी की।

शायद हमने उन्हें . .

उसे दिन घर जाकर मन में तसल्ली नहीं थी। माँ कैसी होगी? रह-रहकर चिंता सताती थी। कुछ पल ऐसे होते हैं कि बीते सुनहरे पल एक-एक करके दृष्टिपथ में आने लगते हैं। मैं पिताजी से बोला- हमने माँ को दिश-ओन कर दिया लगता है!

पानी खतम

अगले दिन ११ मई को फोन आ गया कि पीने का पानी खत्म हो गया। मेरा जूनियर अंकित कटारे पानी लेकर अस्पताल पहुँचा। ऊपरी मंजिल तक जाने नहीं दिया जाता था। सो,'पानी भिजवा देंगे' बोलकर गार्ड ने पानी रखवा लिया। मगर अगले ४५ मिनट तक माँ के पास पानी नहीं पहुँचा। सुनकर, मन अधीर हो उठा।

आनन-फानन में ऑक्सीजन सिलेंडर कार में रखकर, मुझे जाना पड़ा। पहुँचा तो अस्पताल की स्थिति बड़ी करुणा जनक थी। नई-नवेली दुल्हन है बैठी है, दूल्हा ऑक्सीजन की बाट जोह रही है। मैं डॉक्टर से बात करके माताजी की छुट्टी करवा ली। मगर, न तो ऊपरी मंजिल से कोई माताजी को नीचे लाने को तैयार था और न यहाँ से ऊपर जाकर, डिस्चार्ज की पर्ची ऊपर भेजने को राजी था। और यह बात हम तक पहुँचाने को भी कोई तैयार नहीं था। कोई लॉजिक ही मुझे रोक सकता था, ऐसे में।

मैंने गार्ड से झगड़ा किया और ऊपरी वार्ड में जैसे-तैसे पहुँचा। देखा तो पाया कि माताजी का ऑक्सीजन लेवल ६० आ गया था। उन्हें घर ले आए!

अस्पताल में बिस्तरों की कमी पहले से ही थी। हर आदमी दूसरे की मृत्यु की कल्पना कर रहा था ताकि वह खुद बच सके। माताजी ने हमसे पपीता माँगा। सारे इंदौर में पपीता नहीं मिला। पपीता खाये बगैर, १२ मई को माताजी का दुखद निधन हो गया।

अंतिम संस्कार करके, शाम को अपनी जाँच करवाई और अगले दिन तक सोते रहा। ८५ प्रतिशत फेफड़े विषाणु से ग्रस्त थे। पड़ोसी लड़के मुझे भर्ती करवाने लाए, अपोलो अस्पताल में । भर्ती तो हो गए, मगर ढाई घंटे तक बिस्तर का प्रबंध न हुआ।

फेसबुक पर तस्वीर

इसी बीच मैंने फेसबुक पर अपनी तस्वीर लगा दी कुछ ही देर में, कॉल पर कॉल आने लगे। कॉल करने वाले कौन थे? जिनसे मेरा गहरा नाता था! कभी ग्वालियर से ट्रेन से निकले तो फोन किए बगैर नहीं निकले और बिना घर के भोजन के हमने भी नहीं विदा किया। घरवालों की डाँट खाई, मगर अपने दोस्तों का सदा सत्कार किया।

बहरहाल, टॉसलिक जुमइव, (उनचास हजार का एक) और रेमडीसिवर इंजैक्शनों के सहारे जिंदगी की जंग चालू हो गई। जैसा कि मेरा स्वभाव है, मुश्किलों को भी अपना लेता हूँ। अस्पताल घर जैसा हो गया। रात को जिससे बातचीत होती अगले दिन वह पॉलिथीन में पैक मिलता। बड़ा ही दर्दनाक मंजर था।

'गोल्डन बैच बॉयज'

मैंने डॉक्टर से कहा-आई वांट टू डाई विद बूट्स ऑन! (मैं बिस्तर पर पड़े रहकर प्राण नहीं छोड़ना चाहता) डॉक्टर की अनुमति लेकर, वहाँ भर्ती मरीजों को व्यायाम कराता। मेरा मन लगने लगा। सबसे बात होने लगी। नौवे दिन हालत एकदम गिरी। 'गोल्डन बैच बॉयज' व्हाट्सएप ग्रुप पर एक आखरी संदेश डाल दिया- आखिरी राम-राम!

उस दिन मुझे सही मायने में यह पता चला कि आपके जीवन में अपने पिता और मित्रों की कितनी अहमियत होती है। पिताजी ने उत्साह बढ़ाया-ऐसी हिम्मत नहीं हारते! तुम दूसरों को हौसला देने वाले हो! तुम्हें खुद उठाना होगा!!

बस फिर क्या था! तरोताजा होकर सुबह-दोपहर-शाम व्यायाम करने जुट गया। सोचा कि मैं क्या गलती कर रहा हूँ? समझ आया कि मैं व्यायाम के नियमों को दरकिनार करते हुए अधिक व्यायाम कर रहा था। अपने व्यायाम का पैटर्न (तौर-तरीका) बदला और आवश्यक सुधार शुरू किया।

जीवन अनिश्चितता भरा

देश-विदेश के मित्रों ने आश्वासन दिया। जब भी उम्मीद टूटती गुरबाणी सुनता। पास के गुरुद्वारे पर माथा टेका और घर लौटा। संयुक्त परिवार की अहमियत उन दिनों समझ आई। यह भी समझ आया कि जीवन में ईर्ष्या-द्वेष, लड़ाई-झगड़े का कोई फायदा नहीं। जीवन अनिश्चित भरा है। समय कब चला जाएगा, किसी को पता नहीं। समय लौटकर नहीं आता, इसलिए सभी से अच्छा व्यवहार रखें। उन दिनों अपने-पराये का अंतर समझ आया। सभी संबंधी रह गए पीछे, अनजान लोगों ने भरपूर सहायता की!

बस, एक बात कसक छोड़कर चली गई। एकदम पति के साथ ६ साल का बच्चा था। दोनों का प्रेम विवाह था। पत्नी का देहांत हो गया। अब रोज बच्चा पूछता कि माँ कहाँ गई? ऐसे कितने ही किस्से इस हृदय में जज्ब हैं। बुरा समय बहुत सारी बातें सिखाकर चला गया।

मंदार शर्मा, राष्ट्रीय मुक्केबाज,
अध्यक्ष-खेल विभाग,
सदन प्रमुख-शिवाजी

उड़ती रेत में...
खिलते खेत में...
ढलती साँझ में...
निकलते चाँद में..
ढूँढता फिरूँ मैं.....
हस्ती अपनी को।।।।

अपनों के साथ में...
सपनो की रात में...
सूरज की किरण में...
रेगिस्तान के हिरन में...
ढूँढता फिरूँ मैं....
हस्ती अपनी को।।।।

लफ्जों के जाल में...
अपने इस हाल में...
झूठ की शुरुआत में...
सच की सौगात में...
ढूँढता फिरूँ मैं.....
हस्ती अपनी को।।।।

विचारो को टटोल के..
लफ्जों को तौल के...
जान कर भी कुछ न बोल के...
लिख पन्नों पर राज दिल के खोल के...
जीवन के इस खेल में..
यादों की इस रेल में...
खुद को यूँ तोड़ने में...
अनुभवों को जोड़ने में...
ढूँढता फिरा जिसको मैं .....
हस्ती अपनी को...

ढूँढ़ के थक हार के...
बड़ा सोच के विचार के...
आज जाना है इसको...
झूठ माना था जिसको...
थी न जो दूर कोई...
थी कही अंदर सोई...
ढूँढा जिसे दर-बदर पे...
थी मेरे अंदर कहीं वो...
समझ में "आईपी"'के आई है..

इन्सान को इंसानियत से..
''मैं'' ही दूर लायी है....
इन्सान को इंसानियत से...
''मैं'' ही दूर लायी है.....

श्री विकास सोनी
विज्ञान अध्यापक

पीढ़ी दर पीढ़ी सिंधिया परिवार

अपने जीवन का लगभग एक दशक कहीं पर बिताकर, आप उस जगह को अपना घर बुलाने से हिचकिचाएँगे नहीं। और तो और, जब उस जगह में आपके मित्रों के साथ आपकी सबसे ज्यादा दिल से करीब यादें रहती हों, तब तो उसके नजदीक होने की बात को कोई टाल ही नहीं सकता। एक विद्यालय में जब आप दस साल की कोमल उम्र से लेकर बारहवीं कक्षा खतम करने तक पढ़ते हैं, तब उस विद्यालय का महत्व और भी बढ़ जाता है। लेकिन एक कहावत है न! ''दुनिया में कोई भी चीज हो, वो परिवार से बेहतर हो जाती हैं।''और हम कहते है ''वन्स अ सिंधीयन, ऑलवेज अ सिंधीयन!''

एक छात्र का छात्रालय में जीवन एहसास होने के पहले ही गुजर जाता है। शायद इसीलिए, जब कोई पूर्व-छात्र अपने बच्चे को भेजता है, वो अपने

बीते हुए कल को अपने बच्चे के जरिये से एक और बार जीने की कोशिश करता है।

अब मैं आपको एक परिवार की कहानी बताऊँगा जो हमारे विद्यालय के साथ लगभग एक सदी से जुड़ा हुआ है। सन् १९५३ से हर साल इनके घर से कोई न कोई सदस्य हमारे विद्यालय के साथ जुड़ा ही हुआ होता है। ये कहानी है विकम्सी परिवार की।

सन् १९५३ में आये हमारे विद्यालय में वसंत करमसे विकम्सी बिना जाने हुए कि वो एक प्रथा के संस्थापक बन जायेंगे।उनकी ही प्रभावशाली छत्रछाया में अगले साल आये उनके भाई, किशोर विकम्सी। दोनों भाई शिवाजी सदन में आये थे और दोनों ही साथ में विद्यालय से पढ़कर निकल गए।

ये बात थी सन् १९५८ की, फिर आये कांतिलाल विकम्सी जी सन् १९५९ में। अब पूर्व विकम्सी भाइयों ने अपने पीछे एक विरासत छोड़ी थी। और कांतिलालजी बने पहले विकम्सी जिनको स्कूल ने हाउस प्रीफेक्ट के पद पर चुनाद्यये पास आउट हो गए १९६४

में। इनके भाई, जवेरचंद विकम्सी आये १९६३ में।

ये एक और रीति है जो विकम्सी परिवार में चली आ रही है, एक बच्चा बारहवी कक्षा में आता है तो एक और नया बच्चा छठवीं में आता है। साल बीत चुके हैं और लगभग २० विकम्सी सदस्य, हमारे प्रतिष्ठित संस्थान से सनद प्राप्त कर चुके हैं। वर्तमान में भी हमारे विद्यालय में २ विकम्सी परिवार के सदस्य पढ़ रहे हैं, महिमन और फ्रवश ग्यारवी कक्षा में! संयोग से, अगले साल जब फ्रवश और महिमन बारहवी में होंगे तो हमारे विद्यालय में आएँगे नन्हें ध्रुव, इसी विकम्सी झंडे को और आगे बढ़ाने।

जब मैं विकम्सी परिवार की बात करता हूँ तो ऐसा मत समझिये कि ये सिर्फ और सिर्फ उन तक ही सीमित है। विकम्सी परिवार उन सभी पूर्व छात्रों के लिए एक रूपक की तरह हैं, उस हर एक "पूर्व छात्र" के लिए जिसने अपनी अगली पीढ़ी को इस संस्थान में भेजा।

आप अपने आप से सवाल कर रहे होंगे कि ''एक व्यक्ति एक जगह से या उस जगह के लोगों के साथ कितना ही जुड़ा हो सकता है?''इसको हम बहुत गहरे प्रेम के साथ बुलाते हैं सोबा (Scindia Old Boys Association) और इस विद्यालय का सन् २०१८ से छात्र होने के नाते मैं इस सम्बन्ध के बारे में आपको विस्तार से बता सकता हूँ।

चाहे मैं किसी भी पार्टी में हूँ, जब लोग सुनते हैं कि मैं सिंधिया स्कूल में पढ़ता हूँ, कोई न कोई, कहीं से पूर्व छात्र के रूप में मेरे समक्ष आ ही जाता है और हम लोग आपस में ऐसे बात करते हैं कि जैसे कल ही तो शर्माजी की क्लास के बाहर खड़े थे। अब उनके और मेरे शर्माजी अलग होते हों तब भी, वो रिश्ता एकता का ही होता है।

कभी कभी हम बहुत भाग्यशाली होते हैं तो पुराने अध्यापकों के बारे में भी बात करते हैं, कभी-कभी तो मैं भी हैरान होता हूँ कि इतने साल बीत गए, तब भी उन अध्यापक-अध्यापिकाओं के पढ़ाने के तरीके से उनके साथ ''कैम्प्स'' में जाने की यादें इतनी स्पष्ट कैसे होती हैं! शायद इसी को हम सिंधिया का जादू बुलाते हैं, शायद यही वह जादू है जो समय और कल्पना की सभी सीमाओं को पूरे तरीके से पार कर जाता है!

-शौर्य प्रकाश
कक्षा-ग्यारहवीं, शिवाजी सदन

अंतर्विद्यालयी काव्य पाठ एवं कहानी वाचन प्रतियोगिता 2023- 24

भाषा एवं कला के प्रति रूचि जागृत करने के साथ-साथ इसके विभिन्न कौशलों को छात्रों में विकसित करने के लिए हिंदी दिवस के अवसर पर ए.एम. आई शिशु मंदिर में 'काव्य पाठ, कहानी वाचन एवं कहानी सुनो चित्र बुनो' प्रतियोगिताका आयोजन दिनांक १४ सितम्बर २०२३ को किया गया। जिसमें ग्वालियर के कई प्रतिष्ठित विद्यालयों ने भाग लिया। हमारे विद्यालय सिंधिया स्कूल के तीन विद्यार्थियों अक्षत सिंह, साहिल किशोर सिन्हा तथा खुश टोडी इस प्रतियोगिता के साक्षी बने। सभी विद्यार्थियों ने दृढ़ संकल्प के साथ इस प्रतियोगिता में भाग लेकर अपनी श्रेष्ठता साबित की।

प्रतियोगिता का परिणाम

कहानी सुनो चित्रा बुनो -
खुश टोडी - तृतीय स्थान

कहानी वाचन -
साहिल किशोर सिन्हा - द्वितीय स्थान

काव्य पाठ -
अक्षत सिंह -प्रथम स्थान

प्रतियोगिता का सर्वश्रेष्ठ विजेता सिंधिया स्कूल को घोषित किया गया ।

अंत में मुख्य अतिथि ने विजेताओं को प्रमाण पत्र एवं वैजयंती भेंट की। अपने संक्षिप्त उद्बोधन में उन्होंने कहा कि हिंदी दिवस के इस अवसर पर ऐसी प्रतियोगिताओं का आयोजन छात्रों के सामाजिक और सांस्कृतिक विकास के लिए बहुत महत्वपूर्ण होता है। इस तरह की प्रतियोगिताओं से हमारी सांस्कृतिक धरोहर को बढ़ावा मिलता है और इसके साथ ही भाषा का महत्व और भी बढ़ जाता है।

अंतर सदनीय हिन्दी वाक्पटुता प्रतियोगिता (मध्य वर्ग) -२०२३ -२४

दिनाँक -२९ जुलाई२०२३
गद्य-खण्ड

१. लक्ष्य तुलसियान - कक्षा - ९ (माधव सदन) - प्रथम स्थान (६३-७५)

२. अथर्व तिवारी - कक्षा -९ (दौलत सदन) - द्वितीय स्थान (६१.५- ७५)

वरिष्ठ - पद्य-खण्ड

१. नमन जैन - कक्षा - ९ (रानोजी सदन) - प्रथम स्थान (६५-७५)

२. विवेक शर्मा - कक्षा-९ (दौलत सदन) - द्वितीय स्थान (६४-७५)

विजेता सदनों का स्थान निम्नवत रहा -

१- दौलत सदन - प्रथम स्थान (१३५-१६५)

२- रानोजी सदन - द्वितीय स्थान (१३४-१६५)

३- जीवाजी सदन - माधव स्थान (१२७-१६५)

पेड़ - पौधे

पेड़-पौधे, पेड़-पोधे
ये है कितने हरे-भरे
पेड़-पौधे, पेड़-पौधे
हम इन्हें क्यूँ काटे।

पेड़-पोधे, पेड़-पोधे
ये है कितने हरे-भरे
पेड़-पोधे, पेड़-पोधे
हम इन्हे क्यूँ काटे।

पेड़-पोधे, पेड़-पौधे
ये है कितने हरे-भरे
पेड़ पौधे, पेड़-पौधे
हम इन्हे क्यूँ काटे।

पेड़-पोधे, पेड़-पोधे
ये है कितने हरे-भरे
पेड़ पोधे, पेड़-पौधे
हम इन्हे क्यूँ काटे।

अगर यह न होते तो
मोर चिड़िया कहाँ रहते।
जरा सोचो ना।
जरा बोलो ना।

अगर ये न होते तो
हम अपना पेट कैसे भरेंगे
जरा सोचो ना।
जरा बोलो ना।

अगर ये न होते तो
हमे प्राणवायु कैसे मिलता
जरा सोचो ना।
जरा बोलो ना।

अगर पेड़ न होते तो
हम भी न होते
इसलिये जरा इनका
कीमत सोचो ना।

— Vedant Jaiswal

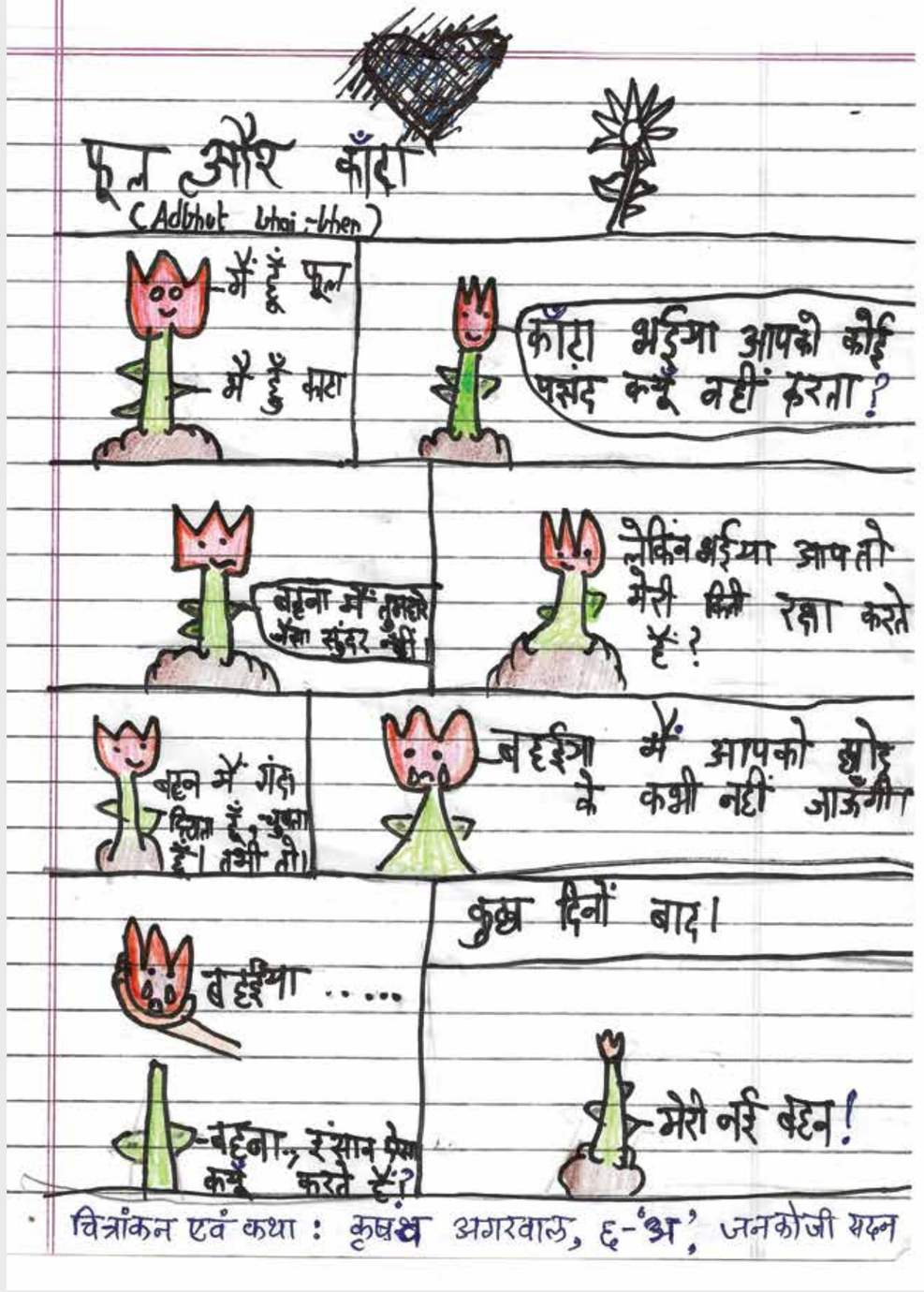

चित्रांकन एवं कथा : कृषभ अगरवाल, ६-'अ', जनकोजी सदन

छात्र चित्र कथा

मयंक जिंदल
कक्षा- आठवी, जयाजी सदन

खीर

कुछ साल पहले की बात है।

मुझे खीर खाना काफी पसंद था। मेरी दादी हर दूसरे दिन मेरे लिए खीर बनाकर, छत पर ठंडी होने के लिए रख देती। जैसे ही रखकर वापस जातीय पीछे एक बंदर मटकते-मटकते आता और आराम से बैठकर सारी खीर खा जाता! मुझे खीर नहीं मिलती तो मैं लाल-पीला हो जाता और मुझे लाल-पीला होता देख दादी का मन दुखी हो जाता।

दादी परेशान थी। वह अपनी समस्या लिए दादाजी के पास गई। दादाजी ने दादी को एक कढ़ाई को उल्टा करके गर्म करने को कहा और उस कढ़ाई को खीर के बगल में रख दिया।

शाम को बंदर खीर खाने आया। उसको लगा कि कढ़ाई उसका आसन है। जैसे ही वकील खाने बैठा तो तुरंत खुद फुदककर भाग गया उसका आसन-अंग पूरी तरीके से जल गया।

उस दिन से वह बंदर कभी खीर तो छोड़ो, दूध की तरफ भी नहीं झाँका।

लक्ष्य तुलसियान
कक्षा - ८वीं माधव सदन

मेरी जिंदगी का एक अनोखा किस्सा मम्मी की डाँट

एक दिन की बात थी। उस दिन बड़ी गर्मी हुई थी और एक मैं आलसी आदमी। और गर्मी की बात करें तो गर्मी कम से कम ४० डिग्री तापमान की थी और उसी दिन पापा के कुछ दोस्त आए हुए थे, क्योंकि पापा ने अपने दोस्तों को आमंत्रण दिया हुआ था।

फिर मम्मी ने उन दोस्तों और पापा को खाना परोसा । फिर मम्मी ने मुझे बोला कि मेहमानों को पानी दे दो और फिर मैंने सोचा कि चार गिलास एक साथ ले जाऊँ । फिर मैंने गिलास गिरा दिए और पानी फैला दियाद फिर मम्मी ने मुझ पर बहुत गुस्सा किया।

उसके बाद पापा के सारे दोस्त चले गए। अब घर मैं सब फुल नींद में सो रहे थे। फिर मम्मी ने मुझे कहा कि मटके में पानी भरकर फ्रिज में रख दो। जब मैं मटके में पानी भर रहा था, तब तक मैंने कुछ ज्यादा ही पानी भर कर मटके से कुछ पानी गिरा दिया। फिर जब मैं मटके को फ्रिज में रखने गया तो मैंने गलती से मटके को गिरा दिया, और मैंने और काम बढ़ा दिया। मम्मी और पापा की नींद खराब कर दी, और मुझे दोनों से डाँट सुननी पड़ी।

यही है मेरी जिंदगी का एक अनोखा किस्सा।

कृष केसरी

महिला आरक्षण विधेयकः होगी मजबूत महिलाओं की आवाज

महिला आरक्षण विधेयक, जिसे पहली बार १९९६ में भारतीय संसद में पेश किया गया था २० सितंबर २०२३ को आखिरकार लागू हो गया लोकसभा (संसद का निचला सदन) और राज्य विधान सभाओं में सभी सीटों में से एक तिहाई महिलाओं के लिए आरक्षित करने का प्रावधान करता है। महिला आरक्षण विधेयक की आवश्यकता तब स्पष्ट हो जाती है जब हम भारत में मौजूद स्त्री की ओर भेदभावो को देखते हैं। आबादी का लगभग आधा हिस्सा होने के बावजूद, राजनीतिक क्षेत्र में महिलाओं आवाज काफी कम है। महिला आरक्षण विधेयक आरंभ होने से सामाजिक नजरिया बदलेगा। यह प्राचीन गलत प्रथाएँ को रोकेगा और साबित करेगा कि महिलाएं महत्वपूर्ण निर्णय लेने और हमारे राष्ट्र के विकास में योगदान देने में सक्षम हैं।

महिमन बिकमसे
कक्षा दसवीं, माधव सदन

125वें संस्थापना वर्ष के उत्सव की तैयारियाँ

हमारे स्कूल में १२५ फाउंडर्स मनाने की खुशी में जोरों-शोरों से तैयारी चल रही है।

हमारे फाउंडर्स में नृत्य, गीत, ड्रामा और भी कई चीजें होने वाली हैं। नृत्य चार भाग में बँटा है- मारा, अस्तोदे, जरिया। वहाँ रूमी-नृत्य होने वाले हैं। मैं रूमी-नृत्य और ड्रामा में हूँ।

मेरी प्रिय मित्र गीत में है। हमें सिखाने के लिए बाहर से अतिथि-शिक्षक आये हैं। बच्चों के बने हुए चित्र लगेंगे। इस फाउंडर्स पर प्रधानमंत्री और २००० से ज्यादा लोग आएँगे। फाउंडर्स पर बच्चों के माता-पिता आएँगे, उनका कार्यक्रम देखेंगे।

मैं और मेरे मित्र जल्दी से जल्दी इस कार्यक्रम के आने का इंतजार कर रहे हैं और लगन से, मेहनत भी कर रहे है।

हर्षप्रीत कौर
कक्षा-छठवीं, नीमाजी सदन

पुराने छात्र और नए भौतिकी शिक्षक

मेरे यहाँ से उत्तीर्ण होकर निकलने के बाद स्कूल में ज्यादा बदलाव नहीं हुआ है। स्कूल में कुछ बदलाव हुए हैं, जैसे भाभा साइंटिफिक सोसायटी की तरह और नई सोसायटी बनी हैं और नए छात्रों की रुचि के हिसाब से उन्हें विकसित का अवसर मिल है।

खेल उपकरणों की संख्या में वृद्धि हुई है, जैसे फुटबॉल और क्रिकेट उपकरणों की संख्या में वृद्धि हुई है। मेरे समय की तुलना में आजकल हर चीज को बहुत कुशलता से क्रियान्वित किया जाता है। मुझे इस बात की बहुत खुशी होती है! आज मैं यहाँ अध्यापक होकर आया हूँ, ये और भी खुशी देने वाली बात है!

पुलकित शर्मा
भौतिकी अध्यापक

कल्पना करो!

नेताजी को सुनने आये हजारों लोग
नेताजी भी पहुँचे, वहाँ शुरू हुआ प्रयोग
बोले कल्पना करो, कल्पना करो
कि नल से बहे कल-कल पानी
बिजली की कभी न हो परेशानी
वादा करूँ मैं तुम सबसे आज
पचास रुपये में मिले एक मन अनाज
शौचालय, बस स्टॉप, सड़कें मिलने लगें साफ
ऋण और कर पर हो जाये ब्याज माफ

बोले कल्पना करो, कल्पना करो
कि मुफ्त में इलाज करे अस्पताल
और विद्या भी मिले, गरीबों को मुफ्त पूरे साल
दिहाड़ी बढ़ा दे अचानक ठेकेदार
सरकारी अफसर सभी, देश के प्रति हो जाएँ वफादार
वादा करूँ में तुमसे आज
कि मैं तुम मिलकर बनाएँ एक भयरहित समाज

बोले कल्पना करो, कल्पना करो
कि माता-बहनें हो गई सुरक्षित
केवल कौशल और क्षमताओं पर रह गई सीटें आरक्षित
रिश्वत देखकर बाबू तुरंत पकड़े कान
सभी बेघरों को मिल गये मकान
तभी भीड़ से जन खुद को रोक नहीं पाया
थोड़ा घबराया और हिचकिचाया
कि नेताजी यह सभी सुविधाएँ आपने कहाँ दिलाई हैं?
नेताजी हँसकर बोले-कल्पना करने में क्या बुराई है?

प्रतीक्षा क्षेत्री
अँग्रेजी अध्यापिका

आमना-सामना

चट-झपट की अकल बनाम बौद्ध मनुष्य
विषय: गौरवशाली सिंधिया स्कूल

चट-झपट की अकल

चैट जीपीटी से बनी कविता

पंचासठ वर्षों का इतिहास,
बदला लाखों जीवों का ध्यान,
एक महान किले पर,
सिंधिया स्कूल की शान।

समाज को देना प्रतिबद्ध,
गांव को गोद लिया संभाल,
बायोस्फियर को बचाना,
देता उदाहरण यह विद्यालय अनमोल।

इसके अध्यापक अतुलनीय धरोहर,
रविवार को हँसते खाते आराम,
शेष दिन ध्यान से लगते,
सज्जन बनाने का है काम।

पाँच छवि जन्म के बाद,
विकसित किया नैतिकता को हमने,
सौ इक्कीस वर्षों से चल रहे,
सबको दिए सम्मान और प्यार के बहने।

बौद्ध मनुष्य

सवा सौ वर्षों का इतिहास,
बदला लाखों जीवों का जीवन,
एक महान किले पर,
सिंधिया स्कूल की है जो शान।

समाज के प्रति प्रतिबद्ध,
गाँवों को सँवारा, सँभाला बिन मोल।
फोर्ट-बायोस्फियर का चिंतन हरपल,
दुनिया का उदाहरण यह अनमोल।

अध्यापक जैसे अतुलनीय धरोहर,
हँसते-खाते, न रवि को आराम।
हर दिन ध्यान-सँभार से रखते,
सज्जन-छात्र बनाना बड़ा काम।

उन्नीस-सौ-संत्यानवे में जन्म के बाद,
पाला नेतृत्व, पोषी नैतिकता हमने।
एक-सौ-पच्चीस वर्षों का वृक्ष बना,
सबका किया सम्मान पहनाये प्यार के गहने!

वे स्वतंत्राता सेनानी थे

वे स्वतंत्रता सेनानी ही तो थे,
जिन्होंने अपना लहू बहाया।

वे स्वतंत्रता सेनानी ही तो थे,
जिन्होंने अपने प्राण गँवाए।
इस देश के लिए।

मैं उनको याद करते हुए कहना चाहता हूँ,
क्या हम उन्हें भूल गए?

मेरा एक और प्रश्न है,
क्या उनके परिश्रम असफल थे?

अगर नहीं!
तो फिर इस स्वतंत्रता दिवस पर,
उनके श्रम का सम्मान करके,
मैं इन स्वतंत्रता सेनानियों की जिम्मेदारी उठाता हूँ,
सबके हृदय में देशभक्ति की किरण जगाता हूँ।

यदि मैं यहाँ से चला जाऊँ,
बस यह सोचना
वे स्वतंत्रता सैनानी ही तो थे,
जिन्होंने अपना लहू बहाया।

वे स्वतंत्रता सैनानी ही तो थे,
जिन्होंने अपने प्राण गँवाए,
इस भूमि के लिए।
जिस भूमि पर खड़े रह कर,
हम उनको श्रद्धांजलि अर्पित कर रहे हैं।

स्वरित वार्ष्णेय
कक्षा दसवीं 'स',
जयाजी सदन

इदान्त मेहरोत्रा : एक आशु-कवि

इदान्त मेहरोत्रा संगीत के लिए, कुछ भी कर सकता है।
उसने अब तक स्कूल में, बड़ा संघर्ष सहा है।

कविता करने की उसमें है, जन्मजात चतुराई।
परंतु नटखट-शैतानी उसकी, हर किसी को न भाई।

दो शब्द, दो अभी, रच देगा दो पंक्ति की कविता।
आप भी कहोगे सुनकर, पहले ऐसा कोई नहीं था।

जो मैंने कही कविता, उसी के अंदाज में।
ये भी अंदाज उसका है, उसी के अंदाज में।

गणपत "स्वरूप" पाठक

हमारे स्कूल में हैं, दस से भी ज्यादा खेल।
पठानिया सर कहते हैं, बना देंगे तुम्हारी रेल ।।१।।

मैस में मिलता है, ओके ओके खाना।
हमारी मैम बोलती है हर सुबह नहाना ।।२।।

सुंदर काँच को बनाने में लगता है बहुत सैंड।
आरडीसी जाये अपना, सिंधिया स्कूल बैण्ड ।।३।।

हमारे स्कूल में हैं, शिवाजी के शेर।
बारिश में मिलेंगे, खाने के बेर ।।४।।

क्लास में सर न हों तो, करते हम मजा।
फिर पकड़े जाने पर, मिलेगी यारों सजा ।।५।

हमने की नानी के साथ, बहुत बड़ी शैतानी।
फिर नानी ने रात में, नहीं सुनाई कहानी ।।६।।

ट्रेन में भैया देने आए, गरमा-गरम चाय।
मम्मी-पापा के जाने पर, हमने बोला बाय ।।७।।

मेरी मम्मी करती है, मुझसे ढेर सारा प्यार।
अब हॉस्टल में हूँ, कोई तो चुप कराओ यार ।।८।।

इदान्त मेहरोत्रा
कक्षा सातवीं
दत्ताजी सदन

आसार

हमारा जीवन है बहुत अनोखा,
लेकिन करते हम बहुत चीजों को अनदेखा।

सभी लोग करते हैं मेहनत,
ज्यादा तो कुछ कम पढ़ाई-लिखाई और खेल-कूद।
निकलते ऐसे हमारे सारे दिन!
बचे हुए कुछ समय में, याद करते बीते दिन।

जो दुनिया में आता है,
वह दुनिया से जाता है।
अपने जीवन की छाप छोड़ने,
का लक्ष्य वह बनाता है।

जीवन में कुछ दिन होते हैं,
उन्हें हम खुलकर जीते हैं।
निराशा और उदासी जैसे,
विचारों से दूर रहते हैं।

जीवन में हमेशा सत्कर्म करना,
बुरे कामों में समय व्यर्थ न करना।
जीवन का यह आसार बनाकर,
तुम हमेशा आगे बढ़ना।

कुमार अभीक्षित नारायण
कक्षा-आठवीं, जयाजी सदन

सबसे प्यारी नींद सुबह की

सबसे प्यारी होती नींद सुबह की,
उसे प्यारी हमारी जान।

सुबह-सुबह नींद खुली तो,
सुनने को मिला चिड़ियों का मधुर गान।

सबसे प्यारी होती कलरव उनकी,
आकाश की वे अद्भुत शान।

हम करेंगे कुछ ऐसा जिससे बढ़ जाए,
हमारे देश का मान !

बहुत बड़ा है यह ब्रह्माण्ड,
पर होती ऊँची अपनी जुबान।

अक्षज गर्ग
कक्षा-आठवीं, माधव सदन

मेरे एकांत की सहेलीः पहेली

एक पहेली है, जो सभी को पसंद होती है। पहेली क्या है?

एक ऐसी चीज है, जिसे जीतने वाले को कुछ नहीं मिलता, और हारने वाले को सबकुछ मिलता है। क्या है वो?

मेरे पास सिर है, पर मैं सोच नहीं सकता। मैं क्या हूँ?

मेरी आँखें होती हैं, पर मैं देख नहीं सकता। मैं क्या हूँ?

मेरा नाम सुनते ही लोग मुझे बनाने लगते हैं, पर मैं कोई चीज नहीं हूँ। क्या हूँ मैं?

वह क्या है, जिसे हम हमेशा काटते रहते हैं मगर कभी उसके टुकड़े नहीं कर सकते?

वह कौन है, जो जितना भी बूढ़ा हो जाए मगर फिर भी वह जवान ही रहता है?

वह क्या है, जो आपके पास जितना ज्यादा होगा, आप उतना ही कम देख सकेंगे?

जल से भरा एक मटका, जो है सबसे ऊँचा लटका पीलो पानी है मीठा, जरा नहीं है खट्टा।

तुम न बुलाओ मैं आ जाऊँगी, न भाड़ा, न किराया दूँगी, घर के हर कमरे में रहूँगी। पकड़ न मुझको तुम पाओगे, मेरे बिन तुम न रह पाओगे।

एक पहेली बुझाओ भाई! जब भी काटो नई नवेली!

किस प्रकार का बैंड कभी संगीत नहीं बजाता?

उत्तर -

जिंदगी, हार, सिक्का, आईना, कहानी, समय, सैनिक, अँधेरा, नारियल, हवा, पेंसिल, रबर बैंड

घर जाने का मौका आया!

होली आई, होली आई
रंग-बिरंगा त्यौहार लाई,
उसके साथ खुशियाँ लाई,
खूब सारी मिठाईयाँ खाई।

दोस्तों के साथ पानी से
खेलने का मौका आया,
फिर क्रिकेट में एक चौका आया,
होली पर कविता लिखने का मौका आया,
योगेश सर के साथ होली का गीत गाया।

होली के बाद गर्मी का मौसम आया,
फिर मैंने बहुत सारा आम खाया,
फिर मुझे बहुत मजा आया,
क्योंकि घर जाने का मौका आया।

अथर्व प्रताप सिंह
कक्षा-छठवीं, दत्ताजी सदन

बादल आये! बादल आये!

बादल आए, बादल आए,
घूम घूम बरसाते आए।
हरियाली फैलाते आए,
झमक झमक बरसाते आए।

अपने साथ छुट्टियाँ लाए,
बहुत सारे पकवान खाए।
सिंधिया स्कूल को कर दिया बाय,
जब बादल छुट्टियाँ लाए।

बादल जाने की बारी आई,
चमकती-झमकती धूप आई।
मेरे मन में खुशहाली आई,
फिर स्कूल जाने की बारी आई।

अथर्व प्रताप सिंह
कक्षा-छठवीं

दीपावली

आई रे! आई! दीपावली आई!
अपने साथ रोशनी और मिठाइयाँ लाई।
खाया मैंने रसगुल्ला,
रात में हुई पूजा।

परिवार के साथ पटाखे चलाए,
खूब मजे आए।
रात को चौराहे पर दिया जलाया,
सोचा इससे क्या होगा भाया।

चलाय हमने पटाखे,
साथ में हमारे काके।
आवाज आई जोश से,
खाने को मिल गए समोसे।

माँ ने बोला अब सो जाओ।
भगवान यह दिन आप रोज लाओ।

वंशज कथूरिया
कक्षा-आठवीं, दौलत सदन

पापा

माँ जन्म देती हैं,
ये तो सब याद दिलाते हैं।

पर पापा के जज्बातों,
बयाँ करना सब भूल जाते हैं।

पापा जो चलना सिखाते हैं,
उन्हें बूढ़ा होने पर चलाना।

हम भूल जाते हैं,
हम कमाते है, खिलाते हैं।

खुद के कमाते हैं, खिलाते हैं,
खुद के कमाने पर हम उन्हें खिलाना भूल जाते हैं।

यू तो हम उन्हें फर्ज का दायित्व का बोध
समय-समय पर कराते हैं।

पर अपनी बारी आनी पर,
क्यों भूल जाते है???

अभ्युदय प्रताप सिंह
कक्षा-आठवीं, दौलत सदन

जीवन की सुगंध

घनघोर तिमिर में, चाँदनी बयार सी,
अक्षमता की बेड़ियों के पार, उद्गार सी।

कुपमंडुक पाखंडपुराण, धनलोलुप ब्रह्माण्ड में,
रश्मिरथी ज्योतिकलश किरणोंदय उषा बहार सी।

बेटी सिर्फ एक शब्द नहीं अभिमान है,
उम्मीदोन्मुखी विश्वस्वरूपा, मातृत्व की पहचान है।

हताशा निराशा के पट पर,
जब उम्मीद लड़खड़ाती है।

असंतुलित भविष्य पटल,
जब वर्तमान को डराती है,

चहुँओर अंधकार की जब,
चादर सी तन जाती है।

नाउम्मीद निराशा जब,
मानस पर छा जाती है।

सूरज की किरणों सी,
जीवन पटल बनाती है।

माँ की टूटी हिम्मत की,
सशक्त कड़ी बन जाती है।

हर टूटी आस में,
एक नया प्रयास भर जाती है।

जीत का हर हौसला,
बेटी बनकर आती है।

तिमिर कालिमा में उम्मीदों की बौछार सी,
स्वतंत्र प्रष्फुटित ओजस्विनी, पथप्रदर्शक अंगार सी।

कालजयी, विनाशनाशक, विश्वासपरक, संहार सी,
स्वछंद हरितिमा, स्वावलंबन की फुहार सी।

बेटी सिर्फ शब्द नहीं अभिमान है।
उम्मीदोन्मुखी विश्वस्वरूप, मातृत्व की पहचान है।

डॉ. रश्मि कुमारी नारायण, अभिभावक

सिंधिया स्कूल में बारह हाउस

सिंधिया स्कूल में बारह हैं हाउस
चार हैं जूनियर, आठ हैं सीनियर
एक है जनकोजी, एक है दत्ताजी
एक है नीमाजी, एक है केडी

वहाँ रहते हैं अच्छे-अच्छे बच्चे
जो हैं अकल के कच्चे, पर हैं मन के सच्चे

अरे भाई रुको-रुको सीनियर भी बाकी हैं
भैया जी तुम्हें यहाँ रुकना है, कहीं नहीं जाना
तुम, एक बात सुन लो,
कि जो हम कहें वो ही तुमको है मानना
यहाँ का इतना बचा नहीं है खाना

भैया जी, जब जाओगे दौलत,
तुम्हें नहीं मिलेगी शौहरत
जब भी जाओगे जयप्पा,
पहुँचकर हो जाओगे हक्का-बक्का
क्योंकि वहाँ का हर बचा है हट्टा-कट्टा।

जीवाजी के बच्चों को प्यार से बुलाते हैं हैलो जी
जब भी जाओगे शिवा जी
तो सब मिलकर बोलते हैं
जय भवानी जय शिवा जी
माधव में तो भगवान भी
कहते हैं सदा खुशी रहो

यह तो सब पहले ही सुन लो
राणो जी के बच्चे हैं शरारती
यह तो भैया मानो जी
जया जी में मिलेंगे
तुम्हें बहुत सारे पाजी
तभी सिंधिया स्कूल को
कहते हैं इतना अच्छा
क्योंकि वहाँ का हर एक बच्चा
है मन का सच्चा !

पर्व गोयल
कक्षा-आठवीं, दत्ताजी सदन

मेरा शानदार सफर

आया रे आया वो दिन आया
जब घर से निकलने का मौका पाया

अपने-आप को घर से उठाकर
हवाई अड्डे पर लाया
फिर मैंने अपने-आप को
अमेरिका में पाया
वहाँ मैंने खाया और खूब धूम मचाया

आखिर वो दिन आया
जब मुझे घर जाना याद आया
जाने के लिए मन को मनाया
वहीं मेरे पीछे पड़ा एक काला साया
बचते-बचाते मैं हवाई अड्डे पर आया
फिर मैंने अपने-आप को घर में पाया

फिर मुझे बताया
कि वो तो सपना ही था भाया
मेरी जिंदगी का सबसे
शानदार सफर यहीं था भाया

नमन जैन
कक्षा-आठवीं, रानोजी सदन

माँ का प्यार है ऐसा

माँ का प्यार है ऐसा,
फूलों की क्यारी जैसा ।
माँ ने बोलना सिखाया,
पहला शब्द माँ निकल आया ।

जब रोते-रोते आए,
उन्होंने सहलाया ।
दुख में खुशी निकालना सिखाया,
जब बीमार थे, तब उन्होंने सुलाया ।

पढ़ाई करना अध्यापक ने सिखाया,
भगवान से हर दिन मिलाया ।
गड़बड़ हुई तो समझाया,
एक दिन न मिले जी न पाया ।

अग्रिम कुमार
कक्षा-सातवीं, दत्ताजी सदन

घर भी इसको कहते हैं!

यह किला है हमको प्यारा, इसमें ही हम रहते हैं,
विद्यालय तो है ही लेकिन, घर भी इसको कहते हैं।
अलग अलग दिशा से आए, यहाँ एक हो जाते हैं,
प्रांत पृथक हो, देश अलग हो, अब सिंधियन कहलाते हैं।

अकस्मात् चोटें लगती हैं, कुश्ती भी हो जाती हैं,
ये क्षण ही स्मृतियाँ बनकर तो, प्रतिपल याद सताती है।
खेल-कूद से सीखा हमने, जीत और हार मनाने का,
इन सब से ही शक्ति पाई, जीवन संघर्ष चलाने का।

जब आए थे, अश्रु बिंदु तो खूब गिराए हमने थे,
मालूम नहीं था कुछ ही दिन में, अनायास ये थमने थे।
फूल और काँटे, पत्थरों से भी, करते हैं हम सबको प्यार,
मन चाहे, न बिसरें ये सब, आए यहीं हम बारंबार।

श्री सन्दीप अग्रवाल
भूतपूर्व छात्र, शिवाजी-१९८०

सुबह की कसरत

जितना आलस सुबह उठने मे आता है।
जितना आलस सुबह उठने मे आता है।
उतना मजा सुबह कसरत करने मे आता है।

आलसी लोग हमेशा आलस करते है।
आलसी लोग हमेशा आलस करते है।
आलस मे क्या रखा है,
थोड़ी मेहनत भी कर लेते है।

सुबह कसरत करने से स्वास्थ्य अच्छा होता है।
सुबह कसरत करने से स्वास्थ्य अच्छा होता है।
चलने से बढिया दौड़ना होता है।

सुबह की कसरत मे जा कर कुछ चलते है।
उन्हें दौड़ता देख कर हम सब हैरान हो जाते है।

नमन जैन
कक्षा आठवीं, रानोजी सदन

नई उड़ान

पार्थ के पुरुषार्थ की, निस्वार्थ अभिव्यक्ति है जहाँ,
हर हार में जीत है, हर जीत की पुनरावृति है यहाँ।

ममत्व से भरा हृदय, मार्गदर्शन से परिलक्षित है,
अपनों सा प्यार दुलार भरा, संयमित कठोरता अपेक्षित है।

मीलों की दूरी पल में हटे, विकास जहाँ मनवांछित हैं,
हर आस नया विश्वास भरा, जहाँ हर प्रयास प्रशंसित है।

अनतर्मन के शीतलता की, मानवता की भक्ति है। वहाँ
हर हार में जीत है, हर जीत की पुनरावृति है यहाँ।

हर दिल उम्मीद भरा, हर मन की मजबूती है,
हर राह यहाँ नई पहल भरी, चलते रहना अनिव्यक्ति है।

हर चाह जहाँ मंजिल तक है, सम्पूर्ण जगत आलोकित है,
ये धन्य भूमि है पुरुषार्थ की, हर स्वप्न पुंज प्रकाशित है।

उम्मीद भरे प्रयास से लक्षित, दृढ़ता की शक्ति है जहाँ,
हर हार में जीत है, हर जीत की पुनरावृति है यहाँ।

डॉ. रश्मि कुमारी, अभिभावक
पुत्र कुमार अभिक्षित नारायण

भारत देश मेरा

भारत है देश मेरा,
उसका तिरंगा लहरा ।

भारत के लिए दे दूँ, अपनी जान,
यही बात मेरे लिए सबसे बड़ा सम्मान ।

हमारा मानना है कि किसान हैं सबसे बड़े देव,
वह मेहनत करते जैसे हर जगह हो खेत ।

हम सबको यहाँ पसंद है खेती ।
यहाँ की औरत है जैसे होती है देवी !

विनायक अग्रवाल
कक्षा - छठवीं

हँसना नहीं !

अध्यापक जोशी- क्या हुआ? सिर नीचे रखकर क्यों बैठे हो?
गर्वित- सर, मेरे सिर दर्द में दर्द हो रहा है!
अध्यापक जोशी- क्या? सिरदर्द में दर्द!!!!!

शाश्वत- अध्यापिका! मुझे मुराद अली से डर लगता है, पता नहीं कब दिख जाए?
अध्यापिका प्रियंका- शीशे में देखना! मिल जाएगा!!

अध्यापक राहुल- बर्फ पिघलकर पानी बन जाती है और पानी उबलकर भाप बन जाता है।
प्रहलाद (विषय से भटकाते हुए)- बर्फ पिघलकर बोली मैं तो पानी पानी हो गई!
अध्यापक राहुल- वाह प्रहलाद! क्या बात है!! (कक्षा की ओर मुड़कर) दूध के फटने पर क्या करना चाहिए?
प्रहलाद- उसको सिल देना सर!
अध्यापक राहुल- (डाँटकर) प्रहलाद!!! क्या आज पढ़ना नहीं है?

मनन- मैम! आप मेरी रोज बेइज्जती क्यों करती हो?
स्नेहा महोदया- इज्जत नहीं है, तो बेइज्जती कैसे होगी?

मनन- मैम!!! अब से मैं आपसे बात नहीं करूँगा!!
प्रतीक्षा महोदया- चलो तो!! अच्छा, आज हम क्या करें?
शाश्वत- मैम! काम।
प्रतीक्षा महोदया- आप मुझे गुस्सा न दिलाओ।
शाश्वत- ओके मैम! चलो पाठ-२ पढ़ते हैं।
प्रतीक्षा महोदया- एक सवाल पूछती हूँ! क्या होगा अगर लटकते-लटकते गिर गई तो?
शाश्वत- तो कील ठोक देनी चाहिए!

संकलन- अग्रिम कुमार
कक्षा-सातवीं, दत्ताजी सदन
(कक्षा की वास्तविक घटनाओं पर आधारित)

विद्यालय में होलिका दहन किया गया । इसके बाद छात्रों ने साँस्कृतिक कार्यक्रम तैयार किए और उस शाम प्रस्तुत किए। इन्हीं कार्यक्रमों में से एक यह गीत था जिसे रचयिता संगीतबद्ध किया और छात्रों ने बहुत उत्साह से गाया

फागुन में, फागुन में,
रंग डारो श्याम मोहे फागुन में ।

खुले गगन में, ओ.ए.टी. में,
सिंधियन खेलें होली,
हास्य कवि सम्मेलन करते,
बोले मीठी बोली
ददा जी का किस्सा बोलें,
करते हँसी-ठिठोली,

रंगबिरंगे फूलों जैसे,
हर प्रदेश के वासी
प्रेम रंग की डोर निराली,
चारों ओर हरियाली
कनेरखेड जनको जी... दत्ता निमाजी.....
जयाजी, महादजी, रानो, जीवाजी,
माधव, जयप्पा, दौलत, शिवाजी
बरसों का है साथ हमारा,
मिलकर हम सब खेले होली
-योगेश शर्मा, संगीत विभागाध्यक्ष

योगेश शर्मा
संगीत अध्यापक

आज कुछ नई कहानी लिखते हैं!

गिरना-उठना-गिरना
और फिर थककर हार जाना,
सबने देखा है,
पर बार-बार गिरकर उठना
और जीतकर दिखाने की
नई कहानी आज हम लिखते है।

दूसरों की परेशानी में हँसना
और फिर रुलाने में मजा सबको आता है,
पर दूसरों का दुख समझ,
उसे हँसाने की नई कहानी हम लिखते हैं।

बड़े ने छोटे को सताया,
डराया, रोज सुनते हैं,
अब से हर बड़ा, छोटे को भाई जैसा समझे
ये कहानी आज हम लिखते हैं।

कमजोर को सताने का काम तो
हर कोई कर लेता है,लेकिन
उसका हाथ पकड़ आगे बढ़ाने की
नई कहानी हम लिखते है।

चीखना और चिल्लाकर
अपनी बात मनवाना
ये तो दुर्बल लोगों का काम है,
अपनी वाणी से प्रेरणा की गंगा
बहाने की कथा हम लिखते हैं।

अपना बल-सामर्थ्य अपने काम आये,
हर कोई करता है,
अपनी शक्ति से
दूसरों का हित करने की
नई गाथा हम लिखते हैं।

किसी के पीछे-पीछे,
सही-गलत रास्तों पर
बहुत से लोग चलते हैं।
नये दुर्गम पथ की अगुवाई कर
नया इतिहास हम रचते हैं।

जीवन में जो आसानी से मिला,
उसी को पा लिया,
कौन-सी बड़ी बात है
लेकिन कठिनाइयों से लड़कर,
जो न मिला उसे पाने की
नई कहानी हम सिंधियन लिखते हैं

शिव कुमार शर्मा
गणित अध्यापक

परीक्षा आई

परीक्षा आई परीक्षा आई,
साथ पढ़े हम भाई-भाई,
करी सारी बहुत पढ़ाई,
परीक्षा देने से पहले
खाई चीनी और मलाई।

जब संस्कृत की बारी आई,
तब सत्यकाम सर ने संस्कृत पढ़ाई,
जब गणित की बारी आई,
तो माता ने पूजा करवाई,
लाल धागा कलाई में पहनाई,
परीक्षा आई परीक्षा आई।

जब हिन्दी की बारी आई,
तब माँ ने मेरे लिए कलम दिलाई,
फिर मुझे खीर खिलाई,
परीक्षा आई - परीक्षा आई।

मृगांक शेखर सिंह
कक्षा- छठवीं, ६ अ

बादल आए, बादल आए

बादल आए, बादल आए ,
घूम घूम बरसाते आए ।
हरियाली वे फैलाते आए,
झमक झमक बरसाते आए ।

अपने साथ छुट्टियाँ लाए,
पकवान खाए, बहुत सारे।
सिंधिया स्कूल को कर दिया बाय,
जब बादल छुट्टियाँ लाए।

बादल जाने की बारी आई,
चमकती-झमकती धुप आई।
मेरे मन में खुशहाली आई,
फिर स्कूल जाने की बारी आई।

अथर्व प्रताप सिंह
कक्षा- ६

खुशनुमा माहौल छोड़ जाता है

आया सर्दी का मौसम आया
ढेर सारी बरफ संग लाया

आया सर्दी का मौसम आया
अलाव का मजा उठाते,
गपशप भी लड़ाते हैं।

आया सर्दी का मौसम आया
रजाई में घुसकर बैठते हैं
काम कुछ नहीं करते हैं।

आया है आया है
सर्दी का मौसम आया है
साथ में खुशियाँ भी लाया है
जाते-जाते खुशनुमा माहौल छोड़ जाता है!

नमन जैन
कक्षा-आठवीं, रानोजी सदन

स्कूल की जिन्दगी में एक पल

हमारे स्कूल की जिन्दगी में
एक पल आता है
सभी बच्चों के अंदर
खौफ का माहौल बन जाता है
खूब पढाई करते हैं
पढ़ने में आता है मजा
और लगता है थोड़ा डर
इस डर के भरोसे ही तो
हमें पढ़ने में लगता है मन
अब परीक्षा शुरू होती है
जिंदगी धीरे-धीरे कटती है
परीक्षा खत महोने पर एक
त्यौहार का माहौल बन जाता हैं
सभी पढाई के बंधन से
आजादी का जश्न मनाते हैं
मगर फिर परीक्षा की चिंता में
हम अपना पूरा जीवन बिताते हैं!

आया है ठंड का मौसम

आया है ठंड का मौसम,
अँग्रेजी में कहें तो मौसम है 'वैरी ऑसम' ।
वह बरसात के दिन छूट गए,
बादलों के काफिले टूट गए ।

मफलर, स्वेटर पहनने पर लगता गरम,
रजाई के अंदर छुपकर लगता नरम ।
आइसक्रीम के दिन चले गए,
गरम-गरम जलेबियों के दिन आए ।

जल्दी-जल्दी रात ढल गई
सुबह की किरणें दिखी नहीं
ठंड तो ऐसी, पूछो मत
ऐसा लगता कि मेरा तन बदन हो गया सख्त ।

कई सारी पत्तियाँ गिरकर मरतीं,
लेकिन पूरी धरती पर खुशहाली भरती ।
बच्चे होते खेल में मगन,
साफ दिखता सारा गगन ।

यह दिन जाते हैं,
गरमता और नरमता लाते हैं ।
नहीं जी पायेंगे इस मौसम के बिना कभी,
इसलिए कृपया जल्दी आइएगा ठंड ।

ऋषित शर्मा
कक्षा- आठवीं, जीवाजी सदन

सरस्वती वंदना

सिंधिया स्कूल के एक सौ पच्चीसवें संस्थापना समारोह की शृंखला में १४ नवंबर २०२२ को महाकवि सम्मेलन आयोजित किया गया। इसमें देश के प्रतिष्ठित कवियों ने अपनी कवितायें पढ़ी। इस कार्यक्रम का आरंभ प्रस्तुत सरस्वती वंदना से हुआ। इसे रचयिता ने संगीतबद्ध करके प्रस्तुत किया।

हंस वाहिनी ज्ञान दायिनी वीणा वादिनी शारदे ।
ज्योतिर्मय जीवन प्रदायिनी दयामयी वरदायिनी ।

आये हम तेरी शरण में विनती सुन माँ शारदे ।
ज्ञानकी गंगा बहा दे जयति पुस्तक धारिणी ।

ध्यान का हो पथ उदित संज्ञान निज मन में बसे ।
वाणी में मधुमय सदा हो जयति मंगल दायिनी ।

योगेश शर्मा
संगीत विभागाध्यक्ष

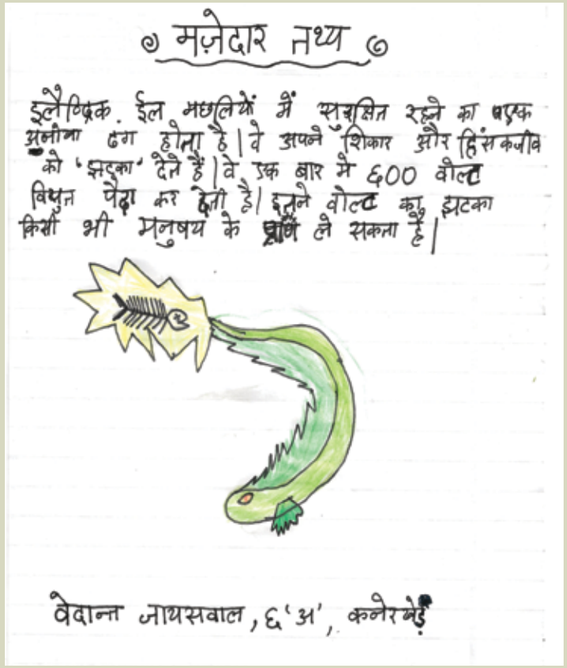

हिन्दी विभाग

छात्र संपादक मण्डल

नन्हें कलमकार

सेवा भाव हमें भाया है,
कई ग्रामों को अपनाया है।
छूट गए जो पेड़ कभी के,
आज उन्हें फिर रोपाया है।
वर्षा के जल को बहलाकर,
सब तालों में ठहराया है।